मासिक ई-पत्रिका

भोजपुरी

2016 फ़रवरी, वर्ष:2 अंक:1

# आखर

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति

ISSN 2395-7255

**प्रकाशन / संपादन मंडल :**
संजय सिंह , सिवान
देवेंद्र नाथ तिवारी , वर्धा
शशि रंजन मिश्र , नई दिल्ली
नबीन कुमार , दुबई

**तकनीकी -एडिटिंग, कम्पोजिंग**
अश्विनी रूद्र , न्यू यॉर्क
अनिमेष कुमार वर्मा , अबू धाबी
**छाया चित्र सहयोग**
स्वयम्बरा बक्सी , पी. राज सिंह,

**आखर पता**
ग्राम पोस्ट- पंजवार (पोखरी)
सिवान , बिहार 841509
**क़ानूनी सलाहकार**
ललितेश्वर नाथ तिवारी , पटना

ISSN: 2395 –7255

# आखर

वर्ष: 2 । अंक: 1 (फरवरी-2016) । **ई - पत्रिका**
मूल्य : शून्य
**सब पद अवैतनिक बा ।**

बतकूचन
सौरभ पाण्डेय
6

दलित के?
सरोज सिंह
25

भोजपुरी भाषा के गलन
पी. राज सिंह
15

खाली झुनझुना...
ओंकारेश्वर पाण्डेय
12

मज़बूरी में भोजपुरी
निरंजन मिश्र
17

जातीय वर्ग आ श्रेष्ठता
मनोरमा सिंह
39

माईभाखा
नंदिनी सिंह
58

काका के शर्त
मनोज कुमार
36

**परामर्श मंडल**
प्रभाष मिश्र , नासिक
अतुल कुमार राय , बनारस
धनंजय तिवारी , मुंबई
चंदन सिंह , पटना
बृज किशोर तिवारी , सोनभद्र
सुधीर पाण्डेय , दुबई
पंडित राजीव , फ़रीदाबाद
अजित तिवारी , दिल्ली
अमित मिश्र, डुमरांव
राजेश सिंह , ओमान

**आखर में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरुरी नइखे की संपादक के विचार लेखक के विचार से मिले । लेख पे विवाद के जिम्मेदारी लेखक के बा ।**

संपर्क : आपन मौलिक अप्रकाशित रचना , लेख ,कविता , फोटो , विचार आखर के ईमेल-आईडी aakharbhojpuri@gmail.com पे भेज सकेनीं । सुविधा खातिर रचना हिंदी यूनिकोड में ही भेजीं । राउर रचना पाहिले से कहीं प्रकाशित ना होखे के चाहीं ।
**मुख्य पृष्ठ छाया/आवरण :** अश्विनी रूद्र, अमित मिश्र, अनिमेष कुमार वर्मा
www.aakhar.com | facebook.com/Aakhar | Twitter : @aakharbhojpuri

## स्थाई स्तंभ


आपन बात : कैथी 4
आपन बात : देवनागरी 5
बिदेसिया के पाती : निराला 10
चित्रकथा : मनोज कुमार 62
राउर बात 63


## चिंतन/ बत-कही


बतकूचन : सौरभ पाण्डेय 6
खाली झुनझुना से ना मानी... : ओंकारेश्वर पाण्डेय 12
भोजपुरी उनईस नईखे.. : आशिक शर्मा 'अतुल' 14
भोजपुरी भाषा के गलन : पी. राज. सिंह 15
मजबूरी में भोजपुरी: निरंजन मिश्र 17
सुनलऽ छोटी लाइन के गाना: शशि रंजन मिश्र 18
लोक जीवन आ प्रकृति : केशव मोहन पाण्डेय 20
जातीय गर्व आ श्रेष्ठता : मनोरमा सिंह 39
कैरियर: सुझाव आ विकल्प : अनुराग रंजन 48
भारत-पाक के रिश्ता में फंसल पेंच: गौरव सिंह 50
आइल बसंत बहार /संत राइदास: एस. डी. ओझा 53
कवना समाज के हीरो हउअन रैदास : प्रमोद कुमार तिवारी 55
माघ: सर्वेश तिवारी श्रीमुख 57
अश्लीलता के लड़ाई के एक बरिस-अम्बा: अश्विनी रुद्र 60


## कविता / गज़ल गीत


भोजपुरी गजल: मनोज भावुक 23
तू हमार माईभाषा : हृषिकेश चतुर्वेदी 23
तीन गो गीत : कन्हैया वकील तिवारी 24
नुरैन अंसारी के दू गो कविता : नुरैन अंसारी 41
दू गो कविता : जे. पी. द्विवेदी 42
पिंजरा के पंछी : ज्योत्सना प्रसाद 43
जिंदगी : लोकेन्द्र मणि मिश्र 'दीपक' 43
जुल्मी बयार : अनूप श्रीवास्तव 44
सवालन में लोक तंत्र : गंगा शरण शर्मा 44
परमात्मा के सनेस: अभिषेक यादव 45
जाड़ बीतल बसंत आइल : जयनित कुमार मेहता 46
भाग जगावऽ : चंद्रभूषण पाण्डेय 46
मन के झमड़ा पे सनेह के लत्तर: अनिल प्रसाद 47
खेवनहार : स्यंदन सुमन 47
दू गो कविता : नंदिनी सिंह 58
हुज़ूर एक दिन पिंडा पराई : राजीव मिश्र 59


## कथा कहानी/ लघु कथा


बेटी बेटा आ दहेज : समता सहाय 13
दलित के ? : सरोज सिंह 25
बियाह कटवा : पियूष द्विवेदी भारतीय 28
मंतोरना फुआ: सुमन सिंह 29
माटी के लाल राजेंदर बाबु : राजेश पाण्डेय 33
दिल जब बच्चा था जी : बृजकिशोर तिवारी 34
काका के शर्त: मनोज कुमार 36

# आपन बात

## आखर परिवार

बसंत रितु के आगमन से प्रकृति के सौंदर्य निखर जाला। एह सौंदर्य के असर समस्त जीव जगत पर साफ देखल जा सकेला। चिरई सब के चहचहात देख के मटर के छिमियन में दाना जवान होखे लागेला। सरसो के फूलन पर भौंरन के मँड़रात देख के दोसरा फूलन के कवनो डाह में अपना सौंदर्य के मुक्त प्रदर्शन करे लागेली सन। ई प्रतिस्पर्द्धा लगातार बढ़त जाला। बसंत बेपरवाह होत जाला। शीत के मार से सिकुड़ल मानस बसंत आवते खुशी के राग गावे लागेला चारो ओर गीत-संगीत - राग-विहाग के वातावरण सृजित हो जाला। भोजपुरिया समाज बसंत के आवते आनन्द भाव में बउराये लागेला। विवाह के मंगल गीत गवाइल शुरु हो जाला। हर उमिर हर वर्ग हर जीव खातिर खुशी मनावे के आपन-आपन वजह होला। किसिम-किसिम के चिरइन के समूह दाना चुने खातिर खेत में उतरे लागेला आ छिड़कन के समूह ओकनी के देख के समवेत स्वर में गा उठेला-

राम जी के चिरई राम जी के खेत
खा ले चिरइया भर भर पेट।

कोयल के कंठ से मधुर तान सुन के विवाह के दिन बराइल बेटी के माई बरबस कोयल में अपना बेटी के देखे लागेले आ ओहि भाव में कुहुक उठेले-

कवना बने रहलू ए कोइलर
कवना बने जासु।

ज्ञान के देवी सरस्वती माई के पूजन के गौरवशाली परम्परा रहल बा हमनी के समाज में। आज से ना सदियन के आरम्भ से। शायद एहे वजह रहे कि सदियन के आरम्भिक अवस्था में दोसर देश भारत के बौद्धिक आ सांस्कृतिक सिरमौर मान लेले रहले सन। भौतिक उपलब्धियन के क्षणिक मान के आत्मज्ञान प्राप्त करत मोक्ष के अवधारणा पर बल दिहल बा हमनी के समाज में। यूरोपीय समाज जहाँ ई कहता कि - एह लोक में प्राप्त भौतिक समृद्धि ही परलोक सुधारी। ओहिजा भारत में ज्ञान के तलाश में आपन राज पाट छोड़ के एगो राजकुमार महात्मा बुद्ध हो जाला। काली माई के सामने धन सम्पति माँगे के संकल्प लेके जायेवाला नरेन्द्र ज्ञान बुद्धि आ तर्क माँग के विवेकानंद हो जाला। स्वाभाविक रहे कि भौतिक समृद्धि के तुलना में सांस्कृतिक आ आध्यात्मिक समृद्धि हमनी के पहचान रहल। भोजपुरिया समाज अपना शास्वत पहचान के प्रति जागरुक बा। गाँव-गाँव में सरस्वती माई के मूरति रख के विधिवत पूजन स्पष्ट देखल जा सकत बा। एह अवसर पर नाटक- संगीत- कवि सम्मेलन सहित विविध कार्यक्रम के आयोजन हमनी के सांस्कृतिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरा पीढ़ी तक पहुँचा रहल बा। निसंकोच भारत एक बार श्रेष्ठ विश्व गुरु बने के मार्ग पर अग्रसर बा।

भोजपुरिया समाज के आत्मा खेतन के लहलहात बालियन के बीचे बसेला। फगुनी महिना में किसान अपना लागल बीज के विस्तार के परखल देखेला। गेहूँ के हरियर बाली में छिपल नाजुक दाना के सुरक्षा खातिर चारो ओर से तैनात प्राकृतिक प्रहरी के देख के लागेला जइसे साक्षात शंकर भगवान आपन त्रिशूल लेके खड़ा होखस। एक-एक दाना उल्लास में बितेला। बसंत में किसान के खेत में खाली ओकर लागल फसल ही जवान ना होखे। बलुक बरिस भर से देखल सपना भी जवान होखे लागेला।

आमवा के मोजरा में जवन सुगंध बसे
तवन सुगंध मन मोहे मोरे पियवा
सरसो के फूल बीचे रस के फुहार मारे
सपना जवान गेहूँ बाली बीचे पियवा

मानव धरती पर आवेला। आपन कर्म करेला आ कर्मफल के प्राप्त करत धरा धाम से विदा लेला। एह यात्रा में केहुए केहू होला जे अपना कर्म से महामानव बन जाला। भारत के पहिला राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के पूरा जीवन यात्रा भोजपुरिया समाज के साहस आ संघर्ष के चरमोत्कर्ष बा। व्यक्तिगत उपलब्धी के शीर्ष पर रह के जवन आदमी भौतिक समृद्धि के शिखर के बौना बना सकत रहे उ भारत माता के पुकार सुन के आपन सर्वस्व न्यौछावर क दिहलस भारत माता के सुंदर रूप गढ़े खातिर। सदियन के संघर्ष के बाद भारत जब अपना संविधान के साथे उदित भइल त सर्वोच्च संवैधानिक पद खातिर देशरत्न के प्राकृतिक चमक सब केहू पर भारी पड़ल। संविधान अपना प्रहरी के देख के जी उठल। देश तरक्की के राह पर अग्रसर भइल। समानता स्वतंत्रता आ बंधुता के कल्पना जमीन पर उतरल। एहि फगुनी महिना में डा० राजेन्द्र प्रसाद जी महाप्रयाण कइनी। अपना पाछे प्रेरणा के विशाल सागर छोड़ गइनी जवना के एक बूंद पा के भी मानव धन्य हो जाला।

बसंती राग के साथे थिरकत, ज्ञान के देवी के वंदना करत प्रकृति के साथ। कर्मठ के नमन करत। पहिला राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र बाबू के श्रद्धांजलि देत आखर के नवका अंक रउआ खातिर प्रस्तुत बा। साहित्य के हर विधा में डूबल ई अंक रउआ करेजा के तर करी। एहि विश्वास के साथे–

आखर टीम

# आपन बात

आखर परिवार

बसंत ऋतु के आगमन से प्रकृति के सौंदर्य निखर जाला। एह सौंदर्य के असर समस्त जीव जगत पर साफ देखल जा सकेला। चिरई सन के चहचहात देख के मटर के फलियन में दाना जवान होखे लागेला। सरसों के फूलन पर भौंरन के मँड़रात देख के दोसरा फूलन के कली डाह में अपना सौंदर्य के मुक्त प्रदर्शन करे लागेली सन। ई प्रतिस्पर्द्धा लगातार बढ़त जाला। बसंत बेपरवाह होत जाला। शीत के मार से सिकुड़ल मानस बसंत आवते खुशी के राग गावे लागेला। चारो ओर गीत-संगीत, राग-विहाग के वातावरण सृजित हो जाला। भोजपुरिया समाज बसंत के आवते आनन्द भाव में बउराये लागेला। बियाह के मंगल गीत गवाइल शुरु हो जाला। हर उमिर, हर वर्ग हर जीव खातिर खुशी मनावे के आपन-आपन बहाना होला। किसिम-किसिम के चिरईन के समूह दाना चुने खातिर खेत में उतरे लागेला आ लड़िकन के समूह ओकनी के देख के समवेत स्वर में गा उठेला-

राम जी के चिरई, राम जी के खेत
खा ले चिरईया , भर भर पेट !

कोयल के कंठ से मधुर तान सुन के बियाह के दिन धराईल बेटी के माई बरबस कोयल में अपना बेटी के देखे लागेले आ ओहि भाव में कुहूक उठेले-

कवना बने रहलू ए कोइलर
कवना बने जासु !

ज्ञान के देवी सरस्वती माई के पूजन के गौरवशाली परम्परा रहल बा हमनी के समाज में। आज से ना सभ्यता के आरम्भ से। शायद इहे वजह रहे कि सभ्यता के आरम्भिक अवस्था में दोसर देश भारत के बौद्धिक आ सांस्कृतिक सिरमौर मान लेले रहले सन। भौतिक उपलब्धियन के क्षणिक मान के आत्मज्ञान प्राप्त करत मोक्ष के अवधारणा पर बल दिहल बा हमनी के समाज में। यूरोपीय समाज जहाँ ई कहता कि, ‘‘ एह लोक में प्राप्त भौतिक समृद्धि ही परलोक सुधारी’’ ओहिजा भारत में ज्ञान के तलाश में आपन राज पाट छोड़ के एगो राजकुमार “महात्मा बुद्ध” हो जाला। काली माई के सामने धन सम्पति माँगे के संकल्प लेके जायेवाला “नरेंद्र” ज्ञान, बुद्धि आ तर्क मांग के “विवेकानंद” हो जाला। स्वाभाविक रहे कि भौतिक समृद्धि के तुलना में सांस्कृतिक आ आध्यात्मिक समृद्धि हमनी के पहचान रहल। भोजपुरिया समाज अपना शास्वत पहचान के प्रति जागरुक बा। गाँव-गाँव में सरस्वती माई के मूर्ती रख के विधिवत पूजन स्पष्ट देखल जा सकत बा। एह अवसर पर नाटक, संगीत, कवि सम्मेलन सहित विविध कार्यक्रमन के आयोजन हमनी के सांस्कृतिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरा पीढ़ी तक पहुँचा रहल बा। निःसंकोच, भारत एक बार फेरु विश्व गुरु बने के मार्ग पर अग्रसर बा।

भोजपुरिया समाज के आत्मा खेतन के लहलहात बालियन के बीचे बसेला। फरवरी महीना में किसान अपना लगावल बीज के विस्तार के पनपल देखेला। गेहूँ के हरियर बाली में छिपल नाजुक दाना के सुरक्षा खातिर चारो ओर से तैनात प्राकृतिक प्रहरी के देख के लागेला जइसे साक्षात शंकर भगवान आपन त्रिशुल लेके खड़ा होखस। एक एक दिन उल्लास में बितेला। बसंत में किसान के खेत में खाली ओकर लगावल फसल ही जवान ना होखे, बलुक बरिस भर से देखल सपना भी जवान होखे लागेला।

आमवा के मोजरा में जवन सुगंध बसे
तवन सुगंध मन मोहे मोरे पियवा
सरसों के फूल बीचे रस के फुहार नाचे
सपना जवान गेहूँ बाली बीचे पियवा

मानव धरती पर आवेला, आपन कर्म करेला आ कर्मफल के प्राप्त करत धरा धाम से विदा लेला। एह यात्रा में केहुए केहू होला जे अपना कर्म से “महामानव” बन जाला। भारत के पहिला राष्ट्रपति डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद के पूरा जीवन यात्रा भोजपुरिया समाज के साहस आ संघर्ष के चरमोत्कर्ष बा। व्यक्तिगत उपलब्धि के शीर्ष पर रह के जवन आदमी भौतिक समृद्धि के शिखर के बौना बना सकत रहे उ भारत माता के पुकार सुन के आपन सर्वस्व न्यौछावर क दिहलस भारत माता के सुंदर रुप गढ़े खातिर। सदियन के संघर्ष के बाद भारत जब अपना संविधान के साथे उदित भइल त सर्वोच्च संवैधानिक पद खातिर “देशरत्न” के प्राकृतिक चमक सब केहू पर भारी पड़ल। संविधान अपना प्रहरी के देख के जी उठल। देश तरक्की के राह पर अग्रसर भइल। समानता, स्वतंत्रता आ बंधुता के कल्पना जमीन पर उतरल। एहि फरवरी महीना में डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद जी महाप्रयाण कइनी। अपना पाछे प्रेरणा के विशाल सागर छोड़ गइनी जवना के एक बूंद पाके भी मानव धन्य हो जाला।

बसंती राग के साथे थिरकत, ज्ञान के देवी के वंदना करत, प्रकृति के साधु “किसान” के नमन करत, पहिलका राष्ट्रपति डॉ॰राजेंद्र बाबू के श्रद्धांजलि देत “आखर” के नवका अंक रउआ खातिर प्रस्तुत बा। साहित्य के हर विधा में डूबल ई अंक रउरा करेजा के तर करी, एहि विश्वास के साथे –

आखर टीम


www.bhojpurisahityangan.com

# बतकूचन-13

सौरभ पाण्डेय

जवार में गाँवें-अङना अब के रहि गइल बा, एहले बेसी, जे बाऽ ऊ कइसे बा, एह प सोचाओ त बलुक ढेर नीमन रही। सउँसे भोजपुरिहा समाज काल्हु के जीवन आ परम्परा आ आजु के हावी लउकत चलन के जाँत में निकहे दरा रहल बा। गोसाइये जी के लीहीं, दूनो बेकत जइसे आपन-आपन बाँचल जिनिगी टान रहल बा लोग। उनकर तीनों पूता अफसर का भ गइले सऽ, अपना गाँवहूँ खातिर ऊ सपना भ गइल लोग। फइलल चाकर दुआर, आ ओकरा आगा सिवाला आला इनार के पहिलवे नीम, कनइला, असोक आ अँवरा के मजगर फेंड़ के चारू ओर सिरीस, संध्या आ बेला के निकहा झोंझ अस भइल बा। बाकी कूल्हि ओसहीं अखसरे परल बुझाले सऽ, जइसे कूल्हि फेंड़वा-फुलवा उपासे परल होखऽ सऽ। दहिने एक ओरे, कबो के जीयत-जागत बाकिर आजु भहराइल चरन खलसा टीला भर ले रहि गइल बा। ओइजो अब मार जंगल फरि आइल बा। ओनिया अब केहू जइबो ना करे। किरिन फुटत ना फूटत रेठा से पतई बटोरत, आ धूरि बहारत, गोसाईंजी अनदिना सात बजा देले। उनकर फजिरे के ई दिनचर्या बाबा के जियते सुरू भ गइल रहे। अढ़ाई दसक बीति गइल, ई दिनचर्या एकसुरिये चलल आ रहल बा। एह कूल्हि से पहिले उहाँ का लागेनीं ब्रह्मे मुहुर्त में उठि के जोर-जोर से 'सीताराम-सीताराम' करत अचारीजी के ब्रम्हप्रात-अस्मरन उचारे। उनका अवजिया में अबहियों पुरनके टनक बा। ढाला पर ले सुना जाला जे गोसाईंजी चैतन्य भ गइल बाड़े। पहिल्का दूनो इस्लोक बाँचत ना बाँचत तिसरका इस्लोक प गोसाईंजी के टनकाह अवाज तनि अउरी चोख हो गइल करेले। बाकिर भोजपुरिहा लकम, संस्कृतओ के शब्द उचारत गोसाईंजी खाँटिये रहल करेले -

**'..प्रातर नमाऽमि तमसऽ परमऽर्क वरनम.. पुरनम सनाऽऽतन पदम पुरुषोत्तमाख्यम.. यस्मिन इदम जगदशेऽऽ.. षमशेऽष मूर्तौ.. रज्ज्वाँ भुजंऽगमइवऽ प्रतिभासितम वएऽऽ !..'**

एह **'रज्ज्वां-भुजङ्गम् इव प्रतिभासितम् वै'** उचारत बुझाला जे उनकर मुँदाइलो अँखिया झल-झल चमकऽतीया ! भाव आ दासा, दूनो से ऊ एह भुइँया प ना रहि जासु - 'ई भा त साँप हऽ, आ ना त रसरी.. दूनो सङे ना ! बुद्धी आ ग्यान के अभास-अँजोर भइल ना कि भरम खतम। इहे सही ग्यान हऽ ! बेदान्त हऽ.. जिनिगी के मूल ! जे केहू भरम में परल बा, ऊ जियऽतो बउखले बा..' - गोसाईंजी अद्वैत भाव के जइसे घोर के घोंट गइल बाड़े। इचिको टोकाइल ना, कि सप्रसंग व्याख्या करत ऊ केहू खातिर कबहूँ अबेर कऽ दीहें। उलटि के पलटि के, बुझवावत, मनवावत, रउआ से हँकारी परवाइये लीहें, जे रउआ निकहें बूझि गइल बानीं। भलहीं दू हफ्ता बाद रउआ एक हाली फेर से टोक जन दीहीं !

'गोड़ लागऽतानीं ए भाईजीऽऽ.. टनले रहींऽऽ..' - अपना ओसारा से ई रजीन्दर दुबे रहले। उनकर दुनो लइका कपुरथले में बसि गइल बाड़न सऽ। नाति-पोता के खेलावत ईहो उहँवें परल रहेले। बाकिर, अबकी माघ में गाँवहीं आइल बाड़े।

'का हो रजीन्दर दुबेऽ.. नीमन नू ? असवारी कब उतरल हा ?'

'रतिये ! .. गाड़ी टेसन चहुँपत ना चहुँपत साढ़े सात घण्टा लेट भ गउए.. '

'जै-जै ! बबुआऽऽ.. माघे मासे महादेवऽ.. यो दास्यती घृत-कम्बलम.. स भुक्त्वा सकलान भोगान.. अन्ते मोक्षम प्राप्यती !.. बुझाईल नू ? दान-पुन्न करऽ.. दान-पुन्न ! घीउ के दान, कम्मर के दान ! ढेर बरिस प माघ में गाँवें लउकल बाड़ऽ !' - गोसाईंजी मोटका रजाई सङे भेंड़हा कम्मर सटले दुआर के चौकिये प ओठङल रहले। चार दिन भइल, का घींचि के ठार परि रहल बा ! फजिरे कुहा आ साँझि खा गलन ! सउँसे जवार जइसे मोन्हा में अमाइल अस भइल बा। अङना बोरसी आ दुआर प कउड़ा ! एह समै एही के माँग चरम प बा।

'होई ए भाईजी, ऊहो होई.. निकहे होई..' - कहत ना कहत रजीन्दर दुबे एही लगले, फजिरे अन्हारहीं, कम्मर ओढ़ले गोसाईंजी के दुआर ओरि बढ़ि चलले।

गोसाईंजी आपन ओढ़ल रजाई-कम्मर के फइलावत रजीन्दर दुबे के आपन चौकिये प ओट लिहले - 'पूस में जब सुरुज धनु के छोड़ि के मकर में आवेले, त सँकराति होला। एही दिन से सुरुज के गति उत्तरायन हो जाला..'

'सहिये कहि रहल बानीं, भाईजी.. उनासी के कुम्भ रहे नू, प्रयाग के त्रिवेनी संगम प, हमहूँ लाल्टू का माई सङे डुबकी लगवले रहनीं।'

'जै हो गाङा मइया, बनवले रखिहऽ सभके..' - गोसाईंजी पूरा भाव में आ गइले - 'एक ढङ से कहाओ त ई सँकरात दान-पुन्न के परब हऽ। प्रयाग में गंगा, जमुना आ सरसती के संगम प हर साले महीना भर के माघ-मेला लागेला। पंचाग ना, अंगरेजी कलेण्डर के हिसाब से देखऽ.. त चउदह दिसम्बर से चउदह जनौरी.. मने, पूरा एक महीना खरवाँस रहेला। कवनो शुभ-कार्य बर्जित करत.. बियाह, गवन, मुण्डन.. मने कुच्छ ना। सभ सँकरात के बाद। बाकिर, अब ई कूल्हि मान के रहल बा ए दुबेजी ? लोगओ बदलल जा रहल बाड़े।' - कहत ना कहत बुझाइल जे गोसाईंजी के मुँहें अचके में अरुआइल साग के कवर परि गइल होखे। नरेटी घींचत फिच्च दे ऊ फरिका थूक दिहले।

'अबकी ई मेला कब ले चली ए भाईजी ?'

'अबकी माने का ? माघ-मेला त हर साले सिवरात ले बनल रहेला। अबकी तेरह फरौरी के बसंत पंचमी हऽ। ऊ भइल चउथा अस्नान.. आ सिवरात बड़ुए सात मार्च के.. ऊहे अंतिम अस्नान हऽ। ओही दिन से

## सौरभ पाण्डेय



सौरभ पाण्डेय जी के पैतृकभूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के द्वाबा परिक्षेत्र हऽ । रउआ पचीस बरीस से सपरिवार इलाहाबाद में बानीं । पिछला बाइस बरीस से राष्ट्रीय स्तर के अलग-अलग कॉपोरेट इकाई में कार्यरत रहल बानी । आजकाल केन्द्रीय सरकार के परियोजना आ स्कीम के संचालन खातिर एगो व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड के पद पर कार्यरत बानी । परों को खोलते हुए (सम्पादन), इकड़ियाँ जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (छन्द-विधान) नाँव से राउर किताब प्रकाशित हो चुकल बाडी स । साहित्य के लगभग हर विधा में रउआ रचनारत बानीं आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनो भासा में समान रूप से रचनाकर्म जारी बा । साहित्यिक संलिप्तता के दोसर क्षेत्र बा - सदस्य प्रबन्धन समूह ई-पत्रिका,"ओपनबुक्सऑनलाइन डॉट कॉम' ; सदस्य परामर्शदात्री मण्डल त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वगाथा' ।

कल्पवासी उठे लगिहें..'

बसंत पंचमी इयाद परते गोसाईंजी लगले माँ सारदा के अस्लोक गोहरावे -

**'सारदा सारदाम भोजबदना बदनाम्बुजे.. सर्वदा सर्वदा अस्माकं सन्निधिम सन्निधिम क्रियात..'**

रजीन्दर दुबे के काहें के कुछऊ बुझाए जाओ, ऊ उनकर डबर-डबर मुँह ताकत रहि गइले । ना रहाइल त बोल परले - 'हमरा ससुरारी, पटना में सँकरात के 'खिचड़ी' कहल जाला..'

'आछा.. बाकिर, पुरनिया लोग त छपरा के नू रहे ?..'

'ना ना, कोइलवर के रहे लोग..'

'आ मिथिला ओरे तूँ जा, त मये लोग कड़गर दही में चिउरा मेराइ के चीनी भा गुड़ भा खोआ सङे जीमेला लोग । ओइजा के सँकरात ईहे दही-चिउरा हऽ । ओही दिने उड़द, चाउर, तिल, चिउरा आ मौसमी तरकारी के दान के महातम बा । बलुक कहे के त गऊ, सोना, ऊनी लूगा भा कम्मर के दान करे के चाहीं । बाकी बेंवतियो त होखो । औकात से फाजिल दान दान ना होखे । होखहूँ लागे त ऊ दान ना, बीपत कहाला । ऊ फलदायी ना होई ।'

'भाईजी, हमार बाबूजी कहसु जे एही दिने भीष्म पितामह आपन काया त्यगले रहले.. '

'सही कहत रहले हा.. दुबेजी, बड़ाई काका बड़ा नेम-धरम वाला ग्यानवान बेकती रहलन.. तूँहीं लोग अंगरेजी भ गइलऽ लोग..'

'अब का कहे के रहि गइल बा ए भाईजी ? हमनी के कूल्हि जाने-बूझे के ओतना जरुरते ना बुझाइल कबो । अमदी पंजाब का गइल, गाँव-जवार के कूल्हि लकमे सेरा गइले सऽ । हमनीं ले त चलीं, इचिको बाँचलो बा, हमार दुनों लइकवा के धियवा त अउरी बिलाइती भ गइल बाड़े सऽ । कहलो प कान ना द सऽ । ना आपन भासा, आ ना देस-जवार के बेवहार..'

'कइसे कान दीहें सऽ ? उन्हनीं के बुझवइबऽ तब नू बुझिहें सऽ.. आ मनिहें सऽ ?' - गोसाईंजी अचके में बेवहारिक भ गइले - **'देखऽ, दुबेजी, चलन आ बेवहार सतत बहता पानी हऽ । ई बूझे आ जाने के चाहीं । कतनो केहू कोसिस करो, जगत के बेवहार केहू बान्ह के ना राखि सके । आ समाजओ पच्चीस बरिस पाछा ना, पच्चीस बरिस आगा तिकवत बढ़ेला । अधिका से अधिका केहू परिवार में संस्कार के नाँवें परम्परा चलवा सकेला । ऊहो कब ले ? जबले जगहा आ तवना लगले समै नत बदलो !..'**

'एकदम सही कहि रहल बानीं, भाईजी.. ओइसे देखल जाव त हमनियो से कम बेजाईं नइखे भइल । बाकि रउआ से का अलोत बा ? घरओ चलावे के रहे । दिमाग हर-हमेसा धन बनावे आ पइसा कमावे से अधिका कुछऊ सोचबे ना करे । गलओ फुलाईं आ हँसबो करीं, दूनो सङहीं कइसे चली ? ..'

'ई त बड़ले बा, दुबेजी ! पेट भरल रहो त संस्कार आ बेवहार रूचेला । बड़ाई काका के ग्यान का आगा केहू हाल्दे टीके ना । सउँसे जवार उनकर लोहा माने । बाकिर, ईहो ओतने साँच रहे, जे साँझि खा चूल्हि सायेदे जोराओ । का कहीं, हमनीं के का-का अपना आँखी नइखी देखले जा !' - गोसाईंजी ई बोलते बोलत अचके में बेवहारिक से दार्शनिक हो गइले - 'दुबेजी, सनातनी परम्परा समहुत जीये के नाँव हऽ । बाग-बगइचा, फर-फूल, फेंड़-पहाड़, नदी-तलाब, धरती-अकास, पसू-पच्छी.. तूँ नाँव धरऽ, देखबऽ ओकर पुजाई होत होखी ! सभ देवी-देवता लोगन के बाहन कवनो ना कवनो पच्छी भा जानवर जोरल बा । ई कूल्हि सइँतिये नइखे कइल गइल । एकर माने-मतलब बड़ा गहिर बा । फेड़ओ में देखऽ.. पीपर, बऽड़, बेल, केरा, बाँस, आम.. का ना पुजाए ? सिउजी प बेलपत्तर चढ़वला के का नीमन अस्लोक बा एगो - मूलतो ब्रह्म रूपायऽ.. मध्यतो बिस्नू रूपिने.. अग्रतः सिउ रूपायऽ.. एक बिल्वम सिवार्पनम.. ' - कहत ना कहत गोसाईंजी दूनों हाथ जोर लिहले । बाकी, उनकर बोलल ना रूकल - 'तवना प पीपर के महातम देखऽ.. अस्वत्थ हुत भुगवासऽ.. गोबिन्दस्य गदाप्रियऽ.. असेसम हरऽ मे पापं बृक्षराजा नमोस्तुते ! आह, का कहे के बा ! अतने ना, पीपर के त गते-गते देवता बास करेले.. मूले ब्रम्हा, त्वचि बिस्नू.. साखायां संकरेव च.. पतरे पतरे सर्वदेवा बासुदेवाय ते नमः.. '

रजीन्दर दुबे भुखइला मनई लेखा कूल्हि बोलल्का अपना कनवे लीलत जात रहले । गोसाईंजी अपना बोली के भोजपुरिया टनक में अस्लोक प अस्लोक उचारत बेरोक-टोक बहल जात रहले - 'हतना निकहा धरम, जवना में धरती-अकास से लेले पसू-पच्छी आ अमदी में अइसन सामंजस्य बड़ुए, आजु के लोग-बाग एहके नसले आ घिनवले बा । हमनी अस लोग के बकलोल बूझल जाता । जबकि एक सुरुए से हमनीं के पर्यावरन से आपन गाँती-फेंटा बन्हववले बानीं जा । एकरा बादओ हमनीं के पर्यावरन के माने-मतलब सिखावल जाता ! काहें ? एही से नू, जे हमनी के कूल्हि आपन भोर पर गइल बा ! ई त हाल बा एह देस के ! पहिले त हमनी से भुलवावल गइल । नया-नवहा बिचार आ नया-नवहा शिक्षा के नाँवें । आ अब, जब सउँसे पीढ़ी अपना संस्कृति आ संस्कार से दूर भ गइल बीया, त अब हुँकार भरल जा रहल बा, जे पर्यावरन बचावल जाउ,


www.bhojpurisahityangan.com

ना त धरती प रेह फरि जाई ! जा हो कऽरम !..' - गोसाईंजी लगले बत-कउतुक पारे - 'टूथपेस्ट में अब नून पुछाता.. आ नीम आ कोइला जोहाता ! जबकि एही नून आ कोइला के अपनावल एक समै पिछड़ापन के निसानी कहाए !.. बूझऽतारऽ नू दुबेजी ?'

रजीन्दर दुबे आपन आँख-कान गोसाईंजी के कहल्का प ओड़ले रहले। उनका कुछऊ बोले के मन ना करत रहुए। बाकि बेहँकारी के बतकही कइसन ? गोसाईंजी के दही में सही मेरावत हुँकारी भरले - 'हँ भाईजी, एक बात त मानहीं के परी.. जे फेंड़-पवधा, जड़ी-बूटी के लेके जतना ग्यान आ जानकारी अपना हिन्दुस्तान में रहल बा, एक सुरुए से, ओतना त कतहीं ना रहे। लइकाईं में तुलसीजी के एगो मंतर पढ़ीं जा, अबहीं ले भोर नइखे परल.. यन्मूले सर्व तीर्थानी.. यन्मध्ये सर्व देवता.. यदग्रे सर्व बेदास्च.. तुलसी त्वां नमाम्यहम..'

गोसाईंजी त जइसे मारे हुलास के मता गइले - 'जै-जै रजीन्दर दुबे जै-जै ! बड़ाई काका के पानी अबेअब तहरा में लउकल बा !'

गोसाईंजी के अकसरे बरत बाती में जइसे दू चुड़ुआ घीउ परि गइल - 'कवनो नीमन आ नया बिचार काहें ना होखो, ओकर एह ग्यानभूमि प हर-हमेसा स्वागत भइल बा। तूँहीं सोचऽ, रिनं क्रित्वा घ्रितम पिवेत, का कम भौतिकवादी सोच रहे ? तबके एह आध्यात्मिक भूमि प एकरो लोग सुनलस कि ना सुनलस ? बाकि, एही धरती प ऊहो समय आइल, जब लोग नया बिचार आ नवका मत पर कठकरेज होखे लागल। काहें ? मंथन करऽ, त एह काहें के जवाब में ढेर कुछ मीलि जाई। रामजी के नाँव धरत आ हनुमानजी के नाँव गावत तुलसीबाबा तक ले ओह बनारस में का ना भोगले ! अतना ले, जे उनका बनारस छोड़े के परि गइल.. ऊ छोड़ले ओह बनारस के, जहवाँ के द्वैतवादी समाज में आदीसंकराचार्य आपन अद्वैतवाद के झण्डा गड़ले रहले। दुबेजी, तन ना, जब मन में दरिद्री अमा जाला, त लोग मन से काँच आ सोच से पातर होखे लागेले। **..पापो अहम पापकर्माऽहम.. पापात्मा पापसम्भवऽ.. त्राहि मां पार्वतीनाथऽ.. सर्वपाप हरो भव.. ! हे संकरजी दुख-ताप दूर करऽ ए भोलानाथ.. दारिद्र्य दुख दहनाय.. नमः सिवाय..'**

गोसाईंजी के एह भाव-धारा में रजीन्दर दुबे जइसे एगो अलगे मनलग्गू सोता पा गइले - 'भाईजी, ई बनारसे नू रहे जहवाँ आदी संकर कवनो चण्डाल से छुअइला प बिदक गइल रहले, आ उनका ओही चण्डलवा से जोगाइ के निकहा सीख मीलल रहे ?.. ऊ का काथा हऽ ?.. '

'दुबेजी, का ऊ चण्डाल रहले ? नाः ! ऊ छछाते सिउ जी रहले सिउजी ! आदीसंकर के निकहे इम्तिहान लेत रहले !'

गोसाईंजी बतकही के एह सोता के लगले अपनहीं हिलोर देबे - 'देखऽ दुबेजी, सनातनी लोग जनम से जाति-पाँत ना मानत आ बारत रहले। ई कूल्हि धुर-नसाई ढेर पाछा के चीझु हऽ। लोग-बाग अपना-अपना धरम आ बंस बचावे के फेरा में अपना के जात-पाँत के मेटा-कूँड़ा में कोंच लिहलस। पहिले ई कूल्हि ए तरे एकदम ना रहे..'

ई सुनते रजीन्दर दुबे मुँह बवले गोसाईंजी के ओरे चिहाँत तिकवे लगले - 'का कहऽतानीं महराजजी ? माने, जात-पाँत कूल्हि ढेर बाद के बात हऽ ?..'

'एकदम्म ! हम बड़ा होस में ई कहि रहल बानीं ! तूँ महाभारत भा पुरानन के कूल्हि बतिया जोगावेलऽ ना का ?.. सत्यवती भा कुन्ती.. भा अइसने ढेर जानीं लोग के रहली हा ? आ उनकर पूता कइसे आ का भइले लोग ? बाद में कतना ना शक, हुन जइसन जात आइल, ऊ लोग कहवाँ बिला गइल लोग ?'

'अरे, ई त साँचहूँ सोचे के बात बड़ुए जी ! तब ई जात-पाँत, कुल-गोत्र, हतना करेड़ कइसे भ गइले सऽ भाईजी ?'

'कहे के त ई कूल्हि पहिलेसे बतावल जाला, बाकिर इन्हनीं के हई हतना करेड़ सरूप ढेर पाछा के बात हऽ ! बुझिहऽ जे एह देस प दोसरा किसिम के लोगन के आवाजाही सुरू भ गइल। आक्रमन होखे लागल। तवना प, बाद के बिदेसी आक्रांता लोग अपना के बिजयी कौम आ जात के बूझे लोग। आ ऊ लोग एइजा के परम्परा में ना रचल-बसल आ अपनवलस लोग। बलुक अपने में इहवाँ के लोगन के जोरे लागल लोग। ओकरा बाद, अंगरेज नया ढङ से देस के इतिहास लिखे लगले सऽ। ऊ कूल्हि घोर-मट्ठा कऽ दिहलेसऽ। **अइसन नइखे जे ई केहू जानत नइखे। बलुक जान-बूझि के एकरा प सर्हियाइ के काम नइखे होत। भा, अइसे समझऽ, जे देस में एगो समुदाय बा जे एह कूल्हि प सर्हियाइ के काम नइखे होखे देत। एह समुदाय के बुझिहऽ जे बथाने दोसरबा। त ईहो बा जे अपना देस के एगो दोसर समुदाय देस के पुरान दासा आ इतिहास के लागेला बेतुक के महिमा-मण्डन करे ! जबकि सही बात ई हऽ जे ई दूनो बतिया अतिवाद के सिकार हो जाला.. '**

रजीन्दर दुबे जले ई कूल्हि सुनला प कुछऊ कहते, गोसाईंजी बोल परले - 'हमरो बुझाता जे तूँ निकहे अचकचाइल बाड़ऽ। बाकिर, दुबेजी, तूँहों सुनऽ जे वर्ण व्यवस्था के लगले, मनुबाबा का कहले बाड़े - सुद्रो ब्राह्मणतामेती ब्राह्मणस्चेती सुद्रताम.. छत्रियाज्जातमेवऽ.. तु विद्याद्वैस्यात्तथइव चऽ ! .. कहे के माने जे, जइसे सुद्र ब्राह्मणत्व के, आ ब्राह्मण सुद्रता के प्राप्त हो जाला, ओसहीं छत्रिय आ बैस्य से जामल सुद्रओ छत्रित्व आ बैसत्व के प्राप्त हो जाला !.. का बूझलऽ ? एह अस्लोक के भावार्थ का बुझाइल ? का ई असहीं लिखाइल बा ?'

रजीन्दर दुबे एगो त हतना कूल्हि नेम-धरम, सास्त्र-पुरान, तर्क-बितर्क ना जानसु। आ तवना प अब हई कूल्हि, आ ऊहो हइसे बोलाए लागो, त उनका मतिसुन्नी अस त होइये जाई ! ऊ साँचहुँ बेजोर के पाकल कोंहँड़ अस भ गइले - 'भाईजी, ई मनु बाबा के कहल हऽ जी ? बाकिर, हम त उनका नाँवें का नइखीं सुनले ! का-का ना कहाला उनकर नाँव लेके !..'

'का कहाला ? एहले ऊपर, दुबेजी, के कहेला ? आ जे केहू मनुबाबा के लेके कुछऊ कहेला, ऊ उनकर मनुइस्मिृतिया देखलहूँ बा ? दुबेजी, दिक्कत ई नइखे जे का कहल बा, बलुक दिक्कत ई बा जे का कहाता..'

'हमरा त बूझीं जे घुमरी पराता ए भाईजी..' - रजीन्दर दुबे निकहा भकुआइल रहले।

'देखऽ ! मनुइस्मिृती भगवान के लीखल कवनो पोथा-ग्रंथ ना हऽ। ऊ तब के समाज में जाने कतना ना लिखाइल इस्मिृतियन में से खलसा एगो इस्मिृती हऽ। हँ, ऊ इस्मिृती पहिले-पहल आइल, एह से एकर ढेर नाँव हो गइल। आ अब.. एकर नाँव प भर मन राजनीति हो रहल बा। आ ना, त

अतने बुझिहऽ, जे मनुइस्मिती ओह घरी-समै के लोगन खातिर रहे आ बर्ताव करे के नियम-कानून बतावत एगो खलसा किताबे भर ले बड़ुए। एह से ढेर कुछऊ ना हऽ ऊ। अब तूँ ईहो बुझिहऽ, जे बाद में अपना-अपना समाज आ संस्थान खातिर ग्यानवान लोग अलगा-अलगा इस्मिती आ संहिता लीखल लोग। ओह कूल्हि इस्मितियन आ संहिता के आजु के कतना जानऽता ? केहू नाँवओ लेता ? आ आजुके इस्मिती का हऽ ?..'

'का हऽ ?' - रजीन्दर दुबे बे कुछऊ सोचले गोसाईंजी के सवलवा दोहरा भरले।

'आजु के इस्मिती हऽ एह देस के संविधान ! जवन अंबेडकर बाबा के अगुआई में हमनीं खातिर लिखाइल बा। हमनीं के एही में के लीखल कायदा आ नियम माने के चाहीं, बस। तूँहीं बतावऽ, का सन पचास के लिखाइल नियमवा आ कायेदा ओसहीं बा ? ना नू ? अतने बरिस में ओकरा में डेढ़ सइ से अधिका संसोधन हो चुकल बा ! जब साठ-पैंसठ बरिस में हतना बदलाव करेके परल बा, त का मनुबाबा के जमाना के लिखाइल कवनो कायदा-कानून भा नियम ओसहीं बनल रही ? ई संभव बा ?'

'ना जी, ई कइसे संभव बा ?'

'त बस, तूँ बूझि लिहलऽ.. देखऽ अब जे कतना हड़बोंग मचावल गइल बा ! आ ऊ लोग के हऽ भा कइसन बा, जे बेबुझले मताइल बा !'

रजीन्दर दुबे के भक्क मार देले रहे। उनका हाल-फिलहाल के कतना ना राजनीतिक जमात आ पाटी खलिहा कमाये-खाये के दोकान बुझाए लगली सऽ। आ, कतना ना राजनीतिक नारा खलिहा वैमन्स्य के आगि में परत घीउ भर बुझाये लागल रहे ! तवना प गोसाईंजी अदबद के बोलत जात रहले - 'ई भारत भूमि आ एकर समाज, दुबेजी, अइसन हऽ, जे का कहे के ! इस्लाम के जनम छेत्र से बहिरी सबले पहिले कतहूँ महजिद बनल त एइजे देस में बनल। अपना जनम छेत्र से बहिरी सबले पहिले कतहूँ गिरिजाघर बनल, त एइजे बनल। पारसी लोगन के जब सउँसे भूगोल में कवनो ठौर-ठिकाना ना मीलत रहुए, त ईहे भूमि हऽ, जे ओह लोगन के खुला स्वागत कइलस। कतना ना पंथ के जनमदाता हऽ ई भूमि ! ई कूल्हि अइसहीं, एक झटके में, भा अचके में नइखे भइल। एकरा पाछा बड़मनई भइला के उदारता बा। आ बतावऽ, अब एही प चोट कइल जा रहल बा ! त दिक्कत इहवाँ बा। अउरी का कहीं, ई समाज महात्मा बुद्ध तक के अपना भगवान के पाँत में बसवले बा ! **बुद्ध इस्तुतियो तनि सूनि लऽ - ध्यान ब्याजम उपेत्यऽ चिन्तयसी.. कामुन्मील्य चक्षु छनम.. पस्याऽनङ्ग सरातुरम.. जनम इमम त्राताऽपि नो रक्षसी.. !** अतने ना, आगा सूनऽ.. **सस्वन्मारवधूभिही इत्यभिहितो बुद्धो जिनः पातु वह !** .. कहे के माने जे, जवन बुद्ध एक समुदाय के वर्चस्व प सामाजिक ललकार परले, ऊहे समुदाय उनका अपना में जोरि के भगवान बनावत आगा बढ़ि गइल !..'

'का कहीं जी ! हमनीं के आपन हीरा भुलवाइ के करिखा-कोयला प ढाहि मरले बानीं जा !.. जा रे हमनी हतभाग्य !..' - रजीन्दर दुबे साँचहुँ निकहा सोच में लउकत रहले।

तले अचके में दलानी के केवाड़ी खड़खड़ाइल - 'आ का जी, ईहे हऽ ? मर-मैदान, पर-पैखाना कुछऊ ना ? अबहीं ले राउर बेरे नइखे भइल ? ई कवन बइठकी भइल बा आजु जी ? आ दुरो रे ! हइ घाम सउँसे कपार प चढ़ल आवऽता, आ रउआ जाने दुका-दुका भँजले बानीं ! ईहे कूल्हि नू राउर बाउर लागेला..' - दलानी के पल्ला थम्हले बरजत, गुँसियाइनजी सोझ आ गइली।

'गोड़ लागऽतानी ए भउजी.. ' - रजीन्दरो दुबे बोली-बरज सुनते होसगर भ गइले।

'के हऽ, रजीन्दर.. ? का हो, तूँ कब अइलऽहा ?.. सभ नीमन नू ?'

'हँ ए भउजी, सभ ठीक-ठाक.. एने छोटकी बुचिया के दिन धराए के बा.. ' गोसाईंजी अङइठीं लेत, देह सोझ करत, चौकी छोड़े लगले - 'दुबेजी, त ई हऽ आपन समाज ! चलीं ढेर बेरा हो गइल आजु ! .. अबहीं रहे के बा नू ?'

'हँ सात-आठ दिन त बड़ले बानीं। बाकी हम एहके कुबेरा ना कहब.. हमार त बेरवे बुझाता अबहीं से उगल बा..'

'सत्संगत्वे निसंगत्वम.. निसंगत्वे निर्मोहत्वम.. निर्मोहत्वे निस्चल तत्त्वम.. निस्चल तत्त्वे जीवनमुक्ती !' - गोसाईंजी एह बतकूचन के उपसंहार करत उठ गइले - 'कहे के माने, जे, सत्संग से ग्यान के अनासक्ति भेंटाला, अनासक्ति से मन में जामल भरम फाटेला.. मन के भरम फाटते बुद्धी में अस्पस्टता आवेले.. आ एही अस्पस्टता से जीवन के मुक्ति मानल बा ! .. देखऽ, जबले बाड़ऽ, आवत रहिहऽ..'

'ईहो कहे के बा भाईजी ?' - रजीन्दर दुबे अपना देही प के कम्मर ओरियावत-समेटत गँवे-गँवे अपना दुअरा ओर बढ़ि चलले - 'का हे मन, हमनीं के का-का भुलाइल जात बानीं जा ? ई गोसाईंजी अस लोग आजु कतना रहि गइल बाड़े ? का देवता.. रच्छा करिहऽ हे नाथ ! .. जियत रहे नेम-धरम आ जियत रहे ई समाज !..

जै-जै !!.. '


www.bhojpurisahityaakhar.com

# बिदेसिया के पाती

निराला

रामजनम भूमि में तो रोजे लटपटाये के बा, आज तनिका एगो हई 'रामजनम' के भी जानीं।

राम मंदिर आउर रामजनम भूमि के मसला भारतीय राजनीति के बारहमासा बिषय बा। रह-रह के हुक उठेला एकर। भाजपा के पास जब कवनो मसला ना रहे तो राम मंदिर के मसला उठा देबेले, विश्व हिंदू परिषद जईसन संस्था के जब लागेला कि ताप आउर असर कम हो रहल बा तो राम मंदिर भा रामजनम के ममिला उछाल देबेला लोग। अउर कांग्रेस भा दोसर कवनो भाजपा विरोधी संगठन अउरी पार्टी खातिर तो पूछहीं के बात नईखे। उ लोग के आपन संकट बा। उ लोग के लागेला कि अगर राम मंदिर भा रामजनम के ममिला सेरा जाई तो फेरू जुलूम हो जाई। भाजपा पर बारहमासा प्रहार करे खातिर कुछुओ अईसन बचबे ना करी, एह से उ लोग भी रह-रह के एह मामला के उठावत, उछालत आउरी गरमावत रहेला।

अभी फेरू से ई गरम बा। कुछ दिन पहिले अजोध्या में रामजनम भूमि के पास पत्थर गिरावल गईल तब ममिला गरमाईल। फेरू अब सुप्रीम कोर्ट से सुनवाई के दिन आ गईल बा, तब ओह पर रोज बहस हो रहल बा आउरी उत्तर प्रदेश के चुनाव नगिचात बा तो रोज एह ममला के उठावल जात बा।

आज हमहूं रामजनम पर ही बात करे जा रहल बानी बाकिर ओह विवाद वाला रामजनम भा रामजनम भूमि पर ना। रामजनम नाम से छपल एगो किताब के बारे में बात करब। ई बहुत खास किताब बा। एक नाही, कई मायना में। बाकिर आज ले एह पर चरचा कबो नइखे भइल। कुछ साल पहिले जब रामानुजन के थ्री हंड्रेड रामायण के चरचा होखत रहे, तबो एकरा पर बात ना भइल रहे। जबकि रउआ एकर कालखंड के जानब तो रउआ आश्चर्य होखी। अब ले ईहे धारणा बा कि बालमिकी जी जब संस्कृत में रामायण के लिख देनी तो ओकरा बाद हिंदी के नजदिक वाला लोकभाषा मे फेरू तुलसीदास जी के ही काम भइल रामचरितमानस के रूप में। तुलसीदास के काम महत्वपूर्ण बा बाकि रउआ जान के आश्चर्य होखी कि उहां के **रामचरितमानस के रचना करे से सौ बरिस से भी पहिले 'रामजनम' नाम से एगो अउरी महत्वपूर्ण रचना भइल रहे आउर उ भी लोकभाषा में। रामचरित मानस जईसन मोट किताब त ई नइखे। मात्र एकरा में 113 गो पन्ना के किताब बिया अउरी किताब के नाम बा संत सूरजदास कृत रामजन्म।**

ई किताब 1966 में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद से छपल रहे। आजो ई किताब उहां उपलब्ध बिया। अबहीं एकर दाम दस रोपेया बा। जब ई छपल रहे तो एकर दाम रहे साढ़े चार रोपेया। उत्तरप्रदेश अउरी बिहार के कई गो साहित्यकार लोगन से बात भइल। केहू संत सूरजदास के बारे में ना बता पावल। संत सूरजदास कहां के बाड़े ई उहां के किताब जानकारी भी नईखे देत बाकिर उहां के जवन भाषा में रामजन्म के पद लिखले बानी ओह से




साफ होखत बा कि उहां के अवधी अउरी भोजपुरी भाषा के जानकार रहनी। बाकिर उहां के जब ई किताब आईल रहे तब एह पर खूब चरचा भइल रहे। डा. वासुदेव शरण अग्रवाल जईसन विद्वान पुरूष एह किताब के पहिले एगो महत्वपूर्ण शोध आलेख लिखले रहीं। उहां के लिखले बानी कि गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरित मानस के रचना 1574 ईस्वी में कईले रहीं जबकि संत सूरजदास के 'रामजन्म' के रचनाकाल 1470-1475 रहल बा। ई लिखे के साथे डॉ० बासुदेव शरणजी संत सूरजदास जी के

## निराला

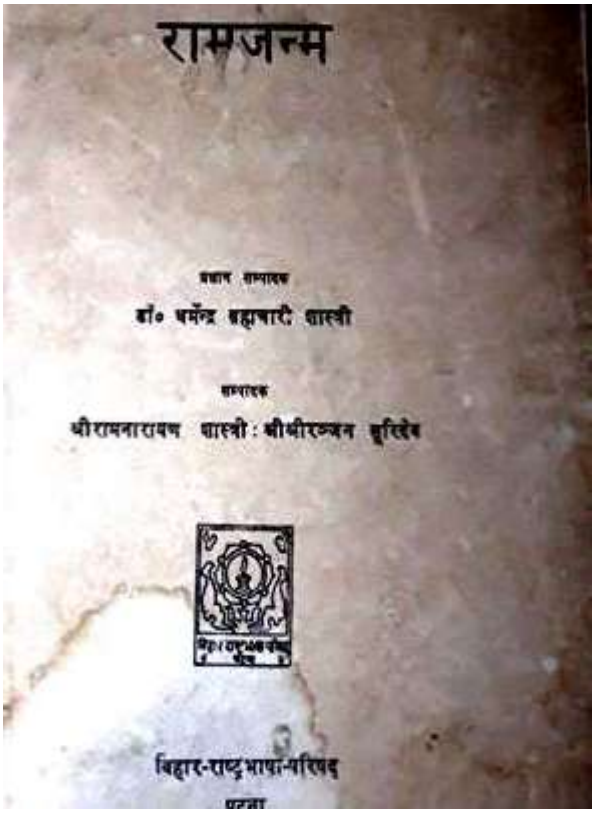

पेशा से पत्रकार , तहलका आ प्रभात खबर खाति लगातार लिखे वाला निराला जी , औरंगाबाद बिहार के रहे वाला हईं। ईँहा के पुरबिया तान बैनर के नीचे भोजपुरी के पारम्परिक गीतन के सहेजे, सरिहारे आ ओह के नया कलेवर मे प्रस्तुत करे में लागल बानी।



www.bhojpurisahityangan.com

बारे में जाने के महत्वपूर्ण सूत्र भी देले बानी। उहां के लिखले बानी कि संत सूरजदासजी आपन रचना में बार-बार बिहार के खांटी गंवई शब्दन के उपयोग कईले बानी। बेर-बेर गंडक-गंगा-पुनपुन नदी के संगम आउरी हरिहर क्षेत्र के चरचा कईले बानी। एह से लागत बा कि उहां के एही इलाका में कहीं के रहनी।

डा. अग्रवाल बतवले बानी कि तुलसीदास के कई गो अईसन चैपाई बा, जेकरा पर संत सूरजदास जी के रचना के प्रभाव अउरी झलक साफ-साफ देखाई पड़ेला। डा. अग्रवाल दुनो जना के रचना के तुलनात्मक अध्ययन भी कइले बानी। उदाहरण के रूप में एकरा के देखल जा सकत बा। संत सूरजदास जी रामजन्म में लिखले बानी -

**दैत बधे के कारने तुम प्रभ्भु लीन्ह अवता**
**बिप्र धेनु सुर संत हित करहु सदा प्रतिहार**

गोस्वामी तुलसीदास जी लिखले बानी-

**विप्र धेनु सुर संत हित  लीन्ह मनुज अवतार**
**निजी इच्छा निमित तनु माया गुन गोपार**

अईसनके कई गो चौपाई देखाई पड़ेला। बासुदेव शरणजी तुलनात्मक अध्ययन कईले बानी। इहवां संत सूरजदास जी के बारे में बतावे के पीछे कारण ई नइखे कि ई साबित कईल जाव कि गोस्वामी तुलसीदास जी कहीं से लेके लिखत रहीं। संभव बा कि रामजन्म के भी प्रभाव ओकरा पर रहल होखे। रामजन्म किताब में राम के जन्म से लेके राम के विवाह तक के प्रसंग बा। वरिष्ठ आलोचक खगेंद्र ठाकुर से बात होला तो उहां के कहीना कि **संभव बा कि तुलसीदास जी से पहिले बहुत फुटकर काम लोकभाषा में होखत होखी, ओही से तुलसीदासजी के भी प्रेरणा मिलल होखी। खगेंद्रजी कहनी कि तुलसीदासजी तो कहिये देले बानी कि कई गो ग्रंथन के प्रभाव उहां के रामचरितमानस पर बा।**

ईहां सवाल ई बा कि हिंदी के बड़का बड़का विद्वान लोग, आपन विरासत पर काम ना करे लोग। बासुदेव शरण अग्रवाल जईसन लोग पूरा संकेत दे देले रहले। लोकभाषा में होखे के कारण संत सूरजदास जी के केहू ना जान पावल। उहां के महत्वपूर्ण रचना के भी केहू ना जान पावल। जबकि हमनी के जाने के चाहीं। एह से पता चली कि लोकभाषा में रचना के इतिहास के केतना पुरान अउरी समृद्ध रहल बा। संत सूरजदासजी जवना तरीका से अवधी अउरी भोजपुरी के कोलाज बना के लिखले बानी ओह से लोकभाषा के इतिहास में एगो सुनहरा पन्ना जुड़ रहल बा।

***

फोटो : शशि रंजन मिश्र


www.bhojpurisahityangan.com

# खाली झुनझुना से ना मानी भोजपुरीया...

ओंकारेश्वर पाण्डेय

> भोजपुरिया समाज नटवर लाल के आपन आदर्श ना माने। बाकिर इहो धेयान राखे के बा कि ई समाज ठगाये वाला ना हऽ। केहू भोजपुरियन के ठग ना सके।

भोजपुरी माटी के एगो खूबी बा। एकरा में सबसे कर्मठ आ बुद्धिजीवी पैदा भइले तऽ सबसे बड़ ठगो भइले। बिहार के सारण छपरा में देश के पहिला राष्ट्रपति आ ओह घड़ी के जानल मानल बुद्धिजीवी बाबू राजेन्द्र प्रसाद पैदा भइले तऽ ओहिजे नटवर लालो। बाकिर भोजपुरिया समाज नटवर लाल के आपन आदर्श ना माने। बाकिर इहो धेयान राखे के बा कि ई समाज ठगाये वाला ना हऽ। केहू भोजपुरियन के ठग ना सके। हालांकि ई कोशिश देश के सरकार आ नेता लोग कर रहल बा। बाकिर भोजपुरिया जागल बाड़े, ठगइहें ना। बात एकर सरकारी मान्यते के काहे ना होखे। दोसर भासा जइसन भोजपुरी के झुनझुना से ना बहलावल जा सकेला। भोजपुरी के विकास खाली एकरा के संविधान के अठवां अनुसूची में घुसा देला भर से ना होई। एकरा से तऽ खाली तीन गो फायदा बा। नोट पऽ भोजपुरी में लिखाये लागी, यूपीएससी के परीक्षा भोजपुरियो में दिया सकेला। आ भासा के मान्यता हो जाई। बस। भोजपुरी आ चाहे कवनो भासा के विकास खाती सरकार के कवनो धन आ समर्थन ना मिली। एहीसे मैथिली होखे आ चाहे कवनो अन्य क्षेत्रीय भासा। केन्द्र सरकार सबके मान्यता देके ठग देले बिया। छूंछे मान्यता से का होई हो ?

विकास होता खाली अंग्रेजी के। मय सरकारी काम अंग्रेजी में होत बा। जनता के खून पसीना के गाढ़ कमाई से आवे वाला कुल्ह बजट बिना कहले अंग्रेजी पऽ खर्च होता। हिंदी के विकास तऽ सरकार नाम भर खाती करत बिया। ओकर विकास तऽ अपने आप देश के जनता करऽतिया। सरकार अगर लाग भिड़ के, बजट बना के सांचहूं कवनो भासा के गंभीरता से विकास करत बिया तऽ ऊ बा उर्दू। आ कारण बा राजनीतिक। हम एकरो से असहमत नइखीं। ओकर विकास होखे के चाहीं। बाकिर सवाल ई बा कि अइसहीं भारत के आउर भासा कुल्ह के विकास काहे ना होखे। काहे खाली उर्दू के अल्पसंख्यक भासा के दर्जा मिलल बा। धेयान राखीं कि धार्मिक अल्पसंख्यक आ भाषाई अल्पसंख्यक अलग अलग होले। ई हम नइखीं कहत, आपन देश के संविधान आ संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में साफ लिखल बा। तऽ भारत के भाषाई अल्पसंख्यक के धार्मिक अल्पसंख्यक से काहे जोड़ देहल गइल बा ? का उर्दू भासा खाली मुसलमाने बोलेले, हिंदू लोग ना जाने ? का भोजपुरी जाने आ बोले वालन में बौद्ध, सिख ईसाई, मुसलमान आ जैन नइखन ?

संसद में पूर्व गृहमंत्री चिदंबरम के बयान, महापात्र कमेटी के रिपोर्ट आ पहिले तमाम केन्द्रीय मंत्री आ नेता लोगन के आश्वासन से एगो बात साफ बा कि अब मय लोग माने लागल बा कि भोजपुरी के भाषा से दर्जा मिल जाये का चाहीं। अगर भोजपुरी भासा बा तऽ बइठे के जगहो देवे के पड़ी नू। कहां बइठइब ? बहुसंख्यक भासा में कि अल्पसंख्यक भासा में ? भोजपुरी कवनो एगो प्रांत तक सिमटल नइखे। कवनो एगो प्रांत में बहुसंख्यक भासा के बनावे के हमनी के मांग नइखे। हमनी के दर्जा हिंदी के बादे बा रहे के चाहीं। तऽ जब हमनी के कतहूं बहुसंख्य नइखीं जा तऽ अल्पसंख्यके नू भइनीं जा। महापात्रा साहेब एकरा से सहमत बाड़े। अउर तमाम लोग सहमत बा। तऽ भोजपुरी के अल्पसंख्यक भासा के दर्जा काहे ना मिले के चाहीं। अगर मिल जाई ता एकरो विकास खाती सरकार के सैकड़ों करोड़ खर्चा करे के होई। आ एकरा से भोजपुरी के नौजवानन के रोजी रोजगार मिली। सरकार के इहे नू काम हऽ जी। कि जनता के भलाई करस। एही खाती नू हमनी के इनका लोग के चुन के भेजी लाजा।

कवनो भासा के अल्पसंख्यक भासा के दर्जा देवे खातिर कवन-कवन बुनियादी विशेषता होखे के चाहीं, भारतीय संविधान के प्रवधान आ यूएन


## ओंकारेश्वर पाण्डेय

मूलत: आरा, बिहार के रहे वाला वरिष्ठ पत्रकार ओंकारेश्वर पांडेय जी हिंदी, भोजपुरी आ अंग्रेजी के कई महत्त्वपूर्ण पत्रिकन के संपादक रहल बानी। भोजपुरी में पहिला सामाजिक-राजनैतिक पाक्षिक पत्रिका 'द संडे इंडियन' इहाँ के दूरदर्शिता आ मार्गदर्शन में एगो विशेष मुकाम हासिल कइलस। रउआ भोजपुरी खाति बेहद जागरूक बानी इहे वजह बा कि रउआ 'ग्लोबल भोजपुरी मुवमेंट', 'भोजपुरी एसोसिएशन ऑफ इंडिया' जइसन संस्था के माध्यम से भोजपुरी खाति प्रयास कर रहल बानी। इ बात बहुत कम लोग जानत होई कि रउआ पत्रकारिता के साथे-साथे एगो सजग रंगकर्मी भी हईं जेकर कई गो दमदार प्रस्तुति के आज भी आरा शहर में इयाद कइल जाला। फिलहाल रउआ 'सनस्टार मीडिया समूह' में समूह संपादक का रूप में आपन योगदान दे रहल बानी।

के चार्टर के मोताबिक का होखे के चाहीं। भारत के सुप्रीम कोर्ट के एकरा बारे में का मत बा, एह कुल्ह मामला पऽ विचार कऽ के हम एह नतीजा पऽ पहुंचलीं कि भोजपुरी ओह कुल्ह शर्तन आ बुनियादी विशेषता के पूरा करतिया जेकरा तहत एकरा के अल्पसंख्यक भासा के दर्जा मिल सकेला। हम कुछ साल पहिले जब एकरा बारे में तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री पी चिंदंबरम से एगो प्रतिनिधिमंडल के साथे मिललीं, तऽ हम उनका के भोजपुरी भासा के एक हजार साल के इतिहास पऽ एगो बड़हन रिपोर्ट दीहनी आ साफ साफ कहनी कि भोजपुरी समेत भारत के कुल्ह क्षेत्रीय भासा के अल्पसंख्यक भासा के दर्जा देके ओकर विकास करे खाती एगो राष्ट्रीय भारतीय भाषा आयोग बनावे के चाहीं। हमार एह मांग के समर्थन भारत सरकार के भाषा संबंधी समिति (महापात्रा कमेटी) के अध्यक्ष सीताकांत महापात्रो खुल के समर्थन कइले। आज देश में अंग्रेजी के विकास हो रहल बा। हिंदी के सरकारी तरीका से विकास होखत बा। आ उर्दू के विकास खातिर सरकार सैकड़ों करोड़ रूपया खर्च कर रहल बिया। ठीक बा होखे का चाहीं, बाकिर काहे ना अउर भासा के विकास होखे। राउर भासा के विकास होई तऽ रउआ रोजगार खाती दोसर भासा के सहारा ना लेवे के पड़ी। गांव घर के औरतन के बिना अंग्रेजी पढ़ले रोजगार मिल सकेला। एहसे हम भोजपुरी समेत कुल्ह भारतीय भासा के विकास खाती एगो राष्ट्रीय भासा आयोग बनावे के सुझाव दे रहल बानीं।

कथा-कहानी

# बेटी बेटा आ दहेज़

समता सहाय

*कईसन लड़की चाहीं तऽ कहलन लड़की कइसनो चली रंग-बेरंग सब बाकिर हमरा कार लमहर चाहीं।*

लोग कहेला बेटा के भईला से गाँव के धरती एक हाथ ऊँच हो जायेली। हमरा ससुराल में बेटा लोग ही ज्यादा बा, ओ हिसाब से भगवानपुर हिल स्टेसन हो जाए के चाहीं, वईसे धरती तनी ऊँच बाड़ी काहेकि बाढ़ ना आवे। अब ठीक उल्टा नईहर में खाली बेटिए लोग ओ हिसाब से नगई-चैनपुर घाटी कहाएके चाहीं। वईसे ओहिजा मेहन्दार में बावन बीघा के पोखरा बा। जब बेटी लोग होखत होई त पृथ्वी एक हाथ धँस जात होखीहें। बे खोनले पोखरा तईयार।

लोग कहे बेटा तहार हीरा ह हीराऽ तबे हमरा ख्याल आईल इनका बिआह में हीरा के हार लेब दहेज़ में। हमनी के समय में नौ लक्खा हार के बड़ी चर्चा रहे- **'मोहे नौलक्खा मँगवा दे रे...'**। मन में अरमान जाग गईल। छोट रहलन बाबू त कार के बड़ी सौख रहे। खिलौना वाला दू चार गो कार किन दिहले रहनी, अउर कुछ मैगी के साथे भेंटाईल, तौन रहे। सब गाडी के जानकारी रहे बाबू के।

अब नौकरी -चाकरी करे लगले, कहनी कहऽ त खोजी बिआह-शादी खाति लईकी ? लगन भी शुरू हो गईल बा। कईसन लड़की चाहीं तऽ कहलन लड़की कइसनो चली रंग-बेरंग सब बाकिर हमरा कार लमहर चाहीं। मने कार के भूत अभी उतरल ना रहे, हमरा पर त हीरा के हार सवार रहे हम कहनी बाबू एगो त तहार रंग अपने पक्का दूसरे तू गाडी खातिर बेरंग लड़की से बिआह करब। बाल-बच्चा कईसन होखीहे ? मने लाजो लागी बतावत कि हई हमार पोता-पोती ह। लमहर कार लेके का करब !? जब चढ़े वाला कउनो गत के ना होखे। अईसन परिवार लेके कहाँ जईबऽ ? अरे मारुति में से भी सुन्दर लोग निकली त ओकर सोभा बा। दू चार लाख कम के कार लीहे त हमरो हीरा के हार के सौख पूरा हो जाईत। अब त देखतानी हई कार के चककर में हार भी हाथ से निकल जाई। अब इहाँ से सलाह कईनी का लिआई तिलक-दहेज़ में त साफ़ मना कर दिहनी ना हार लिआई ना कार। बे दहेज़ के बिआह होई। अब त बाबू भी मना कर दिहलन कि दोसर के दीहल कार पर हाथ ना धरब।

**अब त लागता सगरी पूँजी डूबले बराबर बा !!**

## समता सहाय

सिवान, बिहार के रहे वाला समता सहाय जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। इहाँ के लेखनी में व्यक्तिगत अनुभव के बहुत कुछ पढ़े के मिलेला। गायन के क्षेत्र में भी समता जी के नाम बा। अभी इहाँ के दिल्ली में रह रहल बानी।

# भोजपुरी उनईस नइखे बाकी बीस के करी

अशोक शर्मा ' अतुल'

कवनो विषय भा प्रसंग पर जब कवनो बतकही चलेला त ओकरा समेसया पर अधिक जोर रहेला-हई ना भइल, हउ ना भइल । त फलाने जिमेवार, चिलाने कसूरवार । कहे के मतलब कि जेतना माथापच्ची समेसया बतावे पर होला ओतना समाधान पर ना होला । ओइसहीं जब कबो भोजपुरी भाषा के प्रसंग छिड़ेला त बतकही निम-नेख से शुरू होला आ एही पर खतम हो जाला ।

भोजपुरी भाषा के मान्यता आ एकरा विकास के बहाने सड़क से संसद तक हल्ला-गुल्ला हो चुकल बा, बाकिर नतीजा उहे ढाक के तीन पात । कबो राजनीतिक पेच के रोआई त कबो संसाधन के दोहाई । एह पर कबो विचार ना भइल कि भोजपुरी के वकालत करे वाला लोग के वकालत के आधार का बा । का एह पर कबो सोच-विचार होला कि भोजपुरी खातिर हमनी के आपन "व्यक्तिगत' भूमिका का होखे के चाहीं । दू-चार गो कविता, कहानी लिख लिहला से आ कवनो मंच पर खड़ा होके भाषण दे देहला भर से भोजपुरी के कल्याण हो जाई? हमनी के मांग जायज बा कि भोजपुरी के संविधान से मान्यता मिले के चाहीं । ठीक बा कि एह काम में बिलम भइला के राजनीतिक कारण बा, बाकिर खाली राजनीतिए के भरोसे बइठला से कुछु नइखे होखे वाला ।

मैथिली, बोड़ो, राजस्थानी के मान्यता मिल गइल त भोजपुरिओ के संविधान के मान मिले के चाहीं, काहे से भोजपुरी बोले वाला के गिनती ओकनी से जेयादे बा । एकदम सही, बाकिर एहो त देखीं कि मैथिलीभाषी और बोड़ोभाषी के आपना मातृभाषा के प्रति प्रेम आ हमनी के मातृभाषा प्रेम में का अंतर बा । अंतर इहे कि मन में भोजपुरी बसला के बादो "व्यवहार" में नइखे ।

अचिन्हार के आगे जब दूजना भोजपुरिया मिलेलन त बतकही भोजपुरी में ना, बलुक दोसर-तीसर भाषा में होखेला । एकरा पीछे मानसिकता ई बा कि कहीं भोजपुरी बोलला से हमनी के मान ना घट जाव भा केहू हमनी के गंवार ना कहो(काहे से कि अभीले भोजपुरी बोलला के मतलब गंवारूपन समझल जाला, ई बात अलग बा कि सिनेमा जगत में भोजपुरी के डंका बज रहल बा) । एगो अउर नजीर देखीं । स्कूल, कालेज में नाम लिखवला पर मातृभाषा वाला कोष्ठक में भोजपुरी के जगहा हिंदी लिखेनीसन । लइकवे जब आपना माई के ना मनीहनसन त दोसरा के मुंह ताकल अपने मुंह पर जूता मारल का ना कहाई ?

साहित्य लेखन के नाम पर कुछ पत्र-पत्रिकन के अवाला भोजपुरी कहां बिया पता ना चलेला । कुछ विद्वानन के किताब जरूर बा, बाकिर कहवां बा आ ओकरा प्रचार-प्रसार खातिर का होता, हमनी के मालूम नइखे । हो सकेला रुचि एगो कारण होखे, त बात उपलब्धता के भी बा । कहां से खोजल जाव भोजपुरी साहित्य आ के बतावे कि भोजपुरी खाली एगो बोलिए ना ई हमनी के आत्मा हिअ । अत्मे ना रही त देह कवना काम के ।

एहिसे भोजपुरी साहित्य आ साहित्यकार बिरादरी पर ठोस काम कइल जरूरी बा । ई त सभे जानता कि भोजपुरी साहित्य माने खाली कथे-कविते होला आ ले दे के भिखारी बाबा के रचल नाटक । कथा-कविता छोड़के कवनो अउर विषय जइसे राजनीति, धर्म-कर्म, विज्ञान, भूगोल, इतिहास पर भोजपुरी लेखन खोजला पर ना मिली । हो सकेला एह विषयन पर भोजपुरी लेखन बाजार के जरूरत ना होखे, बाकिर एहसे भोजपुरी के धार त बढ़ी । ई त कहइबे करी कि भोजपुरी भाषा में दुनिया के कवनो बात कहा-लिखा सकेला ।

बात एतने नइखे । ई कवन समझदारी कहाई कि बाजारी भा रोजगार के भाषा के चलते हमनी के आपन जुबान काट के फेंक दिहल जाव । उन्नति कइला के माने ई ना होला कि आपना बूढ़-पुरनिया लोग भुला दिहल जाव । बूढ़-पुरनिया के माने ओह पंरपरन से बा जवन अंटी ढिला कइलो पर कवनो बाजार में ना मिली । सोहर, सांझा माई, फगुवा के गीत, कोहबर के गीत, बेटी विदाई के गीत, पाहुन पुजाई जइसन तीज-तेवहार आ आयोजन अभी ले कायम बा त खाली "लोकजीवन' (गांव, खेत-खरिहान) में । आपना संस्कृति आ परंपरा के बचावे खातिर एकर संरक्षण जरूरी बा, जवन लेखन के रूप में हो सकेला । एहि बहाने आपना अतीत के गौरव गान हो जाई आ आवे वाली पीढ़ी के आपना पुरखन के विरासतो मिल जाई ।

संविधान से मान्यता मिलो भा ना मिलो, साहित्य अकादमी भोजपुरी के भाषा मानो चाहे मत मानो-एइसे कवनो बहस नइखे । काहे से कि भोजपुरीआ संतान के आपना माई के "स्वाभिमान' खातिर केहू से प्रमाणपत्र ना चाहीं । बाकिर एतने कि पहिले हमनीके खुदे ई बात माने के पड़ी कि भोजपुरी केहू से कम नइखे, एकरा के आपना बेवहार-सुभाव में शामिल करे के पड़ीआ लेक्चरबाजी छोड़के आपना कर्म से सिद्ध करे के पड़ी कि भोजपुरी केहू से उनईस नइखे ।


## अशोक शर्मा 'अतुल'

गुवाहाटी से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र दैनिक पूर्वोदय में उप-समाचार पद पर कार्यरत । हिंदी से असमिया सीखावे वाली पुस्तक "आओ असमिया सीखें' प्रकाशित। भोजपुरी, हिंदी में नियमित लेखन। भोजपुरी पत्रिका "आपन सनेस' (दूगो अंक) के प्रकाशन-संपादन (अब बंद)।

# भोजपुरी भाषा के गलन ( language assimilation )

पी. राज. सिंह

*भाषा समाज / समुदाय में जड़ भईल एह तरह के कुंठा भाषा के पुनर्जागरण ( revitalisation ) में बाधक होला । भोजपुरिया लोग के समुचित विचार करत मय कुंठा भा हीन भावना मन से बहरी काढ़ देबे के चाहीं*

भाषा समुदाय के भाषा व्योहार में बदलाव होला, भाषा के मौतो होला आ भाषा समुदाय के प्रयास से भाषा फेरु जिन्दो हो जाले । एह तीनो प्रक्रिया / विधी के सामाजिक भाषा शास्त्र में क्रमशःभाषा समाहितीकरण (language shift / assimilation / transfer ), भाषा मृत्यु (language death ) आ भाषा पुनर्जीवन ( language maintenance / revitalisation ) कहल गईल बा ।

भोजपुरी ही ना ई प्रक्रिया दुनिया के कवनो ना कवनो भाषा के साथे होत रहेला, इतिहासो में भईल बा । एह पोस्ट के मतलब भोजपुरी के संदर्भ में एकरा के समुझे के कोशिश बा ।

भाषा सन्दर्भ से अलगा ना हो सके । एकर प्रयोग कवनो ना कवनो सामाजिक सन्दर्भ में ही होला । आ भाषा संवाद के पुल के काम करेला । जब जब कवनो भाषा समुदाय के भौतिक संसाधन आ संस्कृति संकट में होले त एकर प्रभाव ओकर भाषो पर लउके लागेला ।भाषा समाहितीकरण / बदलाव के स्थिति में एगो भाषा समूह ( उदहारण खातिर इहाँ भोजपुरी के राख सकीले ) आपन प्राथमिक भाषा के प्रयोग कई तरह के सामाजिक सन्दर्भन में कम भा सीमित करे के शुरू कर देला । ई एगो अइसन प्रक्रिया ह जेकरा अधीन एगो देशी, गाँव गवई आ कमजोर वर्ग के भाषा शाषक भा प्रभावशाली वर्ग के भाषा के आगा गलत पघुलत जाला, आपन प्रतिष्ठा भुलात हलुक होत चल जाला आ धीरे धीरे ओहि भाषा में समाहित होत जाला । आ ओकर बदला में शासक वर्ग भा प्रभावशाली वर्ग के भाषा के स्थान देबे के शुरू कर देला । उदाहरण के तौर पर कहल जा सकेला कि एक समय अंग्रेजन के समय में हिंदी, उर्दू कुछ अइसने दौर से गुजरल बाड़ी सन । आजादी के बाद हिंदी आज कुछ प्रतिष्ठा पा लेले बिया । भोजपुरी अभी एह प्रतिष्ठा से बहुत दूर बिया ।

एह प्रक्रिया के पहिलका अवस्था में मूल, स्थानीय भाषा समुदाय दुभाषी हो जाला । माने आपन घर परिवार, गाँव जवार के भाषा के साथे साथे शासक भा प्रभावशाली वर्गो के भाषा सीखे बोले लागेला । फेरु धीरे धीरे आपन निष्ठा, आशा, भविष्य आदि दोसरकी भाषा के साथे जोड़े लागेला । दोसरकी भाषा कई प्रकार के औपचारिक सामाजिक सन्दर्भन में आपन स्थान बना लेले । माने मूल, मातृभाषा के प्रभावशाली / शासक वर्ग के भाषा में समाहितिकरन (assimilation ) के चक्र चले लागेला । एक समय अइसनो आ सकेला जब मूल भाषा मृत होखे के समीप पहुँच जाला । आज चीन देश में मंचू भाषा के बोले वाला लोग 100 से कम बाँच गईल बाड़े । मंचू के बोले वाला सभे चीनी भाषा के ओरि झुक गईल बा ।

कई बार औद्योगिक छेत्र में देश विदेश के लोग एक जगह इकट्ठा होला । कई भाषा आ बोली बोलेवाला लोग आपसी संवाद खातिर एगो संपर्क भाषा ( lingua franca ) के प्रयोग करेला जवन अधिकांश मामला में मालिक भा प्रभावशाली वर्ग के ही भाषा होला । अइसन समय दुभाषी भईल फायदा के सउदा होला । एकरा बिना काम ना चल सके । एहि कुल्हि कारणन से कुछ भाषावैज्ञानिक लोग दुभाषी ( language shift ) भईला के एगो सामाजिक रणनीति / कौशल के रूप में देखे के कोशिश कईले बा । एह रणनीत के सहारे एगो भाषा बोले वाला समाज एगो दौड़ में शामिल हो जाला जेमे जे ओकरा प्रतिष्ठा, पद, शक्ति आ पारिवारिक सुरक्छा मिल सके । माने upward social mobility मिल सके ।

समाज के अगिला सीढ़ी चढ़े के चक्कर में आ अगिला पाँत में जाये खातिर दूभाषी भईला के रणनीत के एगो साइड इफेक्टो बा । चूँकि निष्ठा, आशा, भविष्य आदि दोसरकी भाषा काओरि झुके लागेला, आदमी आपन भाषा आ संस्कृति के प्रति कुंठाग्रस्त आ उदासीन होत चल जाला । एगो हीन भाव के शिकार होत चल जाला । ई मनोभाव ढेरे भोजपुरियो लोग में लऊक जाला । भाषा समाज / समुदाय में जड़


## पी. राज सिंह

छपरा , बिहार के रहे वाला पी राज सिंह जी आर एस कालेज सिवान मे एसोसियेट प्रोफेसर बानी , नया तकनीकी से जुड़ल अपना मातृभाषा खाति हर तरह से लागल भीड़ल , अपना विशेष कैमरा से जवार के हर पहलू के कैद करत भोजपुरी भाषा के एगो साहित्यिक कलात्मक उंचाई दे रहल बानी । एह घरी इँहा के छपरा मे बानी ।

भईल एह तरह के कुंठा भाषा के पुनर्जागरण ( revitalisation ) में बाधक होला। भोजपुरिया लोग के समुचित विचार करते हुए एह तरह के सब कुंठा भा हीन भाव के मन से निकाल देबे के चाहीं। भाषा पुनर्जागरण ओह अवस्था भा प्रक्रिया से जुडल बा जवना के अधीन भाषा समुदाय आपन प्राथमिक आ मौलिक भाषा के प्रयोग एगो सामाजिक, आँचलिक आ राजनैतिक रूप से मजबूत भाषा के कठीन प्रतियोगिता के बावजूद कबो बंद ना करे। मातृभाषा के प्रयोग निरंतर जारी रखले रहेला। भोजपुरिया लोग के आज एहि भाव के साथे आगा आवे के चाहीं।

**भाषा मृत्यु के अवस्था तब होला जब ओह भाषा के बोले वाला अंतिम व्यक्ति ही बाँचल होखस। इतिहास में प्रमाण बा जब एगो भाषा समुदाय युद्ध में हार जाला, आपन वास स्थान से विस्थापित हो जाला आ प्रभु वर्ग के भाषा के नकल करे खातिर बाध्य हो जाला तबे ओकर भाषा धीरे धीरे मौत काओरि बढे लागेला।** आम बोलचाल में कहल जाला कि संस्कृत, लैटिन, ग्रीक आदि मृत भाषा हई सन। बाकिर बहुतेरे भाषाविद् एह मत से सहमत नईखन। भले आम बोलचाल में आज संस्कृत के प्रयोग केहू ना करे बाकिर भाषा विकास के क्रम में संस्कृत ढेर सारा पूर्ण विकसित आ स्वायत्त भाषा में समाहित बा जवना में संस्कृत के कई रूप व्याकरण सहित आजो जिंदा बा आ प्रयोग में बा।

यहूदी सब के भाषा हिब्रू एक समय मृतप्राय हो गईल रहे। बाकिर आज ई भाषा पुनर्जीवित हो गईल बिया। 19 वीं सदी के अंत आ 20 वीं सदी प्रारम्भ में यहूदी समुदाय ई भाषा के जीयावे के अथक प्रयास कईल लोग। आधुनिक सभ्यता देशी समाज के अपना तरह से ढाल रहल बा। भाषा में बदलाव आ मृत्यु के एगो बड़ कारण इहे बा। एकर ठीक उल्टा जहां जहाँ स्थानीय आबादी आपन पारम्परिक भौतिक संसाधन पर आपन रीति नीति के साथे काबिज बा उहाँ उहाँ भाषा बदलाव से बाँचल बा। ऊ भाषा समाज आपन भाषा के बचा के राखे में सक्छम बा।

एगो दुभाषी हो चुकल समुदाय के मातृभाषा  सब प्रकार के व्यक्तिगत पारिवारिक आ अनौपचारिक सन्दर्भन में,धार्मिक रीति नीति, लोक गीत आ लोक कथा तक ही सीमित हो के रह जाला। बाकिर अउर सब अधिकाँश औपचारिक सन्दर्भन ( domain ) जइसे कि शिक्च्छा, खेल, न्याय,राजनीति, व्योपार, अर्थ जगत, मनोरंजन, विदेश आदि में दोसरकी भाषा के प्रयोग बढ़त जाला। दोसरकी भाषा चूँकि प्रतिष्ठा आ विकास के माध्यम हो जाला एह से ओह समाज के निष्ठो ओकरे ओरि अधिका हो जाला। पश्चिमी आधुनिक सभ्यता के प्रभाव के कारण आज के युवा पीढ़ी आपन मूल भाषा से दूर हो जा रहल बा। साफ साफ कहल जाव त भाषा के बदलाव आ समहितीकरन के पाछे आधुनिकीकरन, औद्योगीकरन आ शहरीकरन बा। गाँव देहात से आबादी के पलायन के पाछे अउर कुछ कारणो बाड़ी सन जइसे कि आर्थिक विसमता / परिवर्तन, सामाजिक प्रतिष्ठा, आबादी,संस्थागत समर्थन ( शैक्छिक, राजनैतिक ) आदि।

भोजपुरी प्रदेश दू अढ़ाई सौ बरिस से दुनिया के बाजार में सस्ता श्रम संसाधन के रूप में प्रसिद्ध रहल बा। बहुत लोग आजो दूर दूर देशन में नौकरी, व्यवसाय खातिर जाला। पलायन आ विस्थापन एह छेत्र के सामान्य घटना ह। पलायन कर चुकल आबादी दुभाषी होखे खातिर मजबूर बा। धीरे धीरे ओकर मूल भाषा के प्रयोगो कम होत जाला औसहीं जइसे कि प्रवासी लोग गाँव जवार आईल गईल कम कर देला। धीरे धीरे माटी आ बोली स्मृति में ही सिमट के रह जाला। भाषा के संरक्षण छमता में आबादीयो एगो बड़ कारण होला। 30 करोड़ आबादी वाला भोजपुरी भाषा समाज जे में से अधिकाँश लोग गाँव में बसेला आ आपन पारम्परिक खेती, पशुपालन, व्यवसाय आदि में लागल बा आपन भाषा के बचावे में सक्छम बा। कम आबादी वाला भाषा पर हमेशा खतरा बनल रहेला।

एकरा अलावा दुभाषी हो चलल भोजपुरिया जाग्रत समाज के साहित्य, सोसल मीडिया, प्रिंट मीडिया, फिल्म, गीत संगीत आदि के माध्यम से भाषा आ माटी के प्रति हमेशा चेतना जगावे के प्रयास हो रहल बा। आज के तारीख में संचार संवाद के सबसे प्रभावशाली माध्यमन जईसे की इंटरनेट, सामाजिक नेटवर्किंग साईट, फ़िल्म आदि पर भोजपुरिया लोग के दमदार उपस्थिति बा आ दिन पर दिन ई बढ़ते जा रहल बा। जरूरत बा ऊ सब औपचारिक सन्दर्भनो में भोजपुरी के बहाल करे के जवन आज दुभाषी हो चलल भोजपुरिया समाज दोसरकी भाषा के सउंप देले बा। भाषा के विकास आ संरक्षण खातिर संस्थागत समर्थन के आवाज उठावे खातिर प्रबुद्ध वर्ग के आगा आवे के चाहीं। भोजपुरी खातिर ई मांगो उठ रहल बा। हमरा समुझे आखर एह छेत्र में एगो बड़ आ बरियार डेग आगा बढ़ा रहल बा। संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा के अनुसार भाषा के अधिकारो मानवाधिकार ही ह। दुनिया के कवनो जीवित जागल समाज एह अधिकार के छोड़े के ना चाही।

***

# मज़बूरी में भोजपुरी

निरंजन मिश्र

**'माई भाषा आपन भोजपुरी,**
**ई त बांटे ली दिलवा के दूरी...**
**...बोली भोजपुरी जय-जय भोजपुरी।'**

कॉलेज में रहनी ओह बेरा जब फेसबुक पर चंदन सिंह जी के ई भोजपुरी रिंगटोन के लिंक मिलल। तुरंत ही सुन के डाउनलोड भी कर लेहनी। आ एकरा के रिंगटोन में सेट भी कर लेनी। नया रिंगटोन सेट कइला के बाद एगो संघतिया से फोन करा के सुननी त बड़ा बढ़िया लागल। मन प्रसन्न हो गइल कि अब फोन अइला के सूचना अपना मातृभाषा के सुंदर गीत से मिली। ओही दिन साँझ के एगो अपना दोस्त से मिलनी जे हमरा साथ 12वी तक के पढ़ाई कइले बाड़न। हमनी के बात करत रनी सन एही बीच हमार फोन बाजल। रिंगटोन उहे रहे...'माई भाषा आपन भोजपुरी...।' ई घटना ह V3S मॉल के कैफे कॉफी डे के। साच कही त हमरो तनी अजीब लागल। लेकिन अजीब एसे लागल कि मोबाइल बाजल ह ई बात से ना कि हमरा मोबाइल के भोजपुरी रिंगटोन रहल ह। काहे कि हमार आदत ह घर से बाहर निकलते ही मोबाइल के वाइब्रेशन मोड़ पर लगा देनी। ओह दिन शायद भूल गइल रनी। खैर, हमनी के बातचीत खत्म भइल आ बाहर निकलनी सन। बाहर निकलते ही उ साथी समझावे लगलन कि 'यार पहले अपना ये रिंगटोन चेंज करो...तुम समझते क्यों नहीं ये मजबूरियां...ये बिहार नहीं दिल्ली है, लोग भोजपुरी को इंटेलेक्चुअल की भाषा नहीं मानते...लोग अजीब से देखते हैं अगर तुम भोजपुरी में बात करो।' हम कहनी, '
भाई, कहीं नौकरी के इंटरव्यू में त हम भोजपुरी बोले के नइखी नु कहत, अपना ऑफिस में दिल्ली के कवनो लड़की से त तू भोजपुरी नईख बोल सकत लेकिन अपना गाँव-घर, जिला जवार के जे लोग बा ओकरा से बोल सकत बाड़ऽ नु...ई बात तू भी जान तारअ आ हम भी कि हमनी के मातृभाषा भोजपुरी ही ह...तू भर अपना घर पर बात करे ल भोजपुरी में ही। त फेर कुछ अइसन लोग के अजीब से देखला के डर से जेकरा से तोहरा कवनो परिचय नइखे, तू अपना मातृभाषा से खुद को दूर करे के चाह तारअ...।

ए विषय पर खूब चर्चा भइल ओह दिन। साच कही त हमरा भी खुद से ही कवनो 'मज़बूरी' में उ रिंगटोन बदले के पड़ल आ ई बात एकदम सही बा कि ई आधुनिक समय के मज़बूरी ही हमनी के अपना मातृभाषा से दुराव के कारण बनत जात बा। भोजपुरी के माई भाषा के रूप में देखे आ सम्मान देवे वाला लोगन के एसे हो रहल अलगाव के कारण ही आज भोजपुरी पर अश्लील मानसिकता वाला लोगन के कब्जा भइल जाता। आ उ लोग व्यवसाय के नशा में अपना मातृभाषा के सौदा करे में लाग गइल बा लोग। हाल के हकीकत इहे बा कि ए बेरा अश्लीलता ही भोजपुरी ले एगो पहचान बन गइल बा। ई बात हमनी सभे भोजपुरिया जानत बानी सन, लेकिन हर बार आ हमेशा ई हकीकत बस शिकायत के एगो किस्सा बन के रह जाला। भोजपुरी से अश्लीलता के दूर करे के कवनो ठोस कदम जमीनी स्तर पर नइखे दिखत। हमनी के अपना आस-पास अश्लील भोजपुरी गीत बजावत लोगन के मना कर के आ समझा के ही ई समस्या से छुटकारा नइखी सन पा सकत। एकरा ला गंभीर प्रयास करे के पड़ी।
हम इहा भोजपुरी में अश्लीलता के बात एसे लिखनी ह कि आज के समय गाँव में भी लोग अपना लइका सब के बचपन से ही अंगरेजी आ हिंदी में बोले के सिखावत बा। कवनो भी पढ़ल लिखल अभिभावक ई नइखे चाहत कि ओकर लइका भोजपुरी बोले...एकर सबसे बड़का कारण बा अश्लील गीत सब के रूप में गाँव गली में बाजत भोजपुरी। कवनो सभ्यता, संस्कृति अउर भाषा जब तक भावी पीढी तक ना पहुँची तब तक ओकर विकास ना सकेला। आ ई दुर्भाग्य बा भोजपुरी के कि जे लोग बोले के शुरुआत ही भोजपुरी में कईलख आज उ नइखे चाहत कि ओकर बेटा बेटी के परवरिश भोजपुरिया परिवेश में होखे। आज के समय में भोजपुरी के संविधान के आठवा अनुसूची में शामिल करावे खातिर प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रूप से जेतना लोग आ संगठन लागल बा उ अगर ईमानदारी से अपना गाँव घर में लोगन से भोजपुरी के अश्लीलता मुक्त करे आ अपनावे के निहोरा आ प्रयास करे त सच में भोजपुरी के 'अच्छा दिन' आ जाइ। ए बेरा जबकि समूचा विश्व अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मना रहल बा हम अपना माई भाषा ला इहे कहेम कि,

'जवन भाषा में मुंह से निकलल पहिला बोल,
ओकरे गुण गावत रहब हरदम हम,
करब हर प्रयास एकरा के बचावे के सदा,
भोजपुरी के माई भाषा कहब हरदम हम।'

## निरंजन मिश्र

पश्चिम चम्पारण, बेतिया (बिहार) के एगो गाँव जयसिंहपुर के रहे वाला 'निरंजन कुमार मिश्रा' जी, अभी दिल्ली के एगो कॉलेज 'इआन स्कूल ऑफ़ मॉस कम्युनिकेशन से पत्रकारिता स्नातक के पढाई कर रहल बानी। पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न समाचार पत्र/पत्रिका में भी नियमित लेख लिखे नी। राजनीति, समाज, साहित्य-सिनेमा आ संस्कृति पऽ इहाँ के सअधिकार लिखेनी।


www.bhojpurisahityangan.com

# सुनऽ छोटी लाइन के गीत !

शशि रंजन मिश्र

बिहार के भोजपुर जिला में 70-80 के दसक में एगो गाना खूब चलल । गाना रहे छोटी लाइन के । हरेक ठहराव से पहिचान करावत ई गीत एह रेलवे लाइन के भक्ति गीत बन गइल ।

मनुष्य सामाजिक प्राणी ह । सामाजिकता के परिभाषा में आपन आस पास के हरेक चीज प्राकृतिक भा अप्राकृतिक से नाता जोड़ लेला । आपन एह नाता के नेह छोह के आउर लोगन के बीच बतावत रहेला । कुछ अयीसन बात जे कहीं लिखाईल ना बाकी सामाजिकता में पीढ़ी दर पीढ़ी बांचल गइल । नदी पहाड़ झरना कुआं सब से नाता जुड़ल आ सबके खाति लोग कुछ कथा कहानी आ गीत रचल । कुछ लिखित कुछ जबानी लोगन के बीच चलत रहल । स्त्रीलिंग पुलिंग के भेव देखत नाता जोड़ा गइल । गंगा माई से गोबरधन बाबा तक कहाईल । गीत रचाईल- हे गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो । इन्हे तक ना गाड़ी-छकड़ा-साइकिल-जहाज-रेल सबके गीत में ढाल दियाईल । कवनों नयका दुल्हिन के पिया रेल से परदेश जात बाड़ें त उलाहना देत बाड़ी- **रेलिया बैरन पिया के लेले जाय रे...** आ केहु सनेसा पठाके क़हत बा- **पनिया के जहाज से पलटनिया बनी अईह पिया...** हर जगह एगो लगाव बा । जड़ –चेतन सभे से नाता बा परेम आ उलाहना के ।

ओइसहीं बिहार के भोजपुर जिला में 70-80 के दसक में एगो गाना खूब बनल । गाना रहे छोटी लाइन के । छोटी लाइन (नैरो गेज रेलवे) के एगो लाइन आरा से सासाराम तक बिछल रहे । एह अंचल के जनता जनार्दन खाति ई एगो लाइफ लाइन रहे । आवाजाही के सबसे आरामदायक साधन जे पुरनका शाहाबाद के दूगो शहर के आपस में जोड़त रहे । लोग एह छोटी लाइन से आपन नाता जोड लेले आ एगो निमन गीत छंदबद्ध भईल ।

सुनलऽ छोटी लाइन के गाना
कईनी कजरी में बखाना
भईले आऽरे से रवाना
सुनऽ मोर बलमु

उदवंतनगर कसाप नियरानी
स्थिर डेरा गड़हनी ठानी
पानी लेके ओहिजा से
भईनी रफ्तार बलमु

चलते चलते में सेमरांव
पहुंचनी चरपोखरी के गाँव
धक्का देत धनौटी
दिहनी उतार बलमु

पीरो पास ही में सुननी
मन में इहे बतिया गुननी
आगे चलीं देखीं
हसनबाजार बलमु

सइयाँ होखीं जनी रंज
चलीं चलीं बिक्रमगंज
एहिजा से आगे मिली
घोसिया के बाजार बलमु

भईले साँझ संझौली आके
तकनी चारों ओर चिहाके

फोटो : एल जी मार्शल
साभार: विद्युत प्रकाश मौर्य

डर लागऽ ताड़े
सगरे अन्हार बलमु

बत्ती देखनी तमाम
लिहनी राम जी के नाम
अब इहे हऽ
शहर सासाराम बलमु

एह गीत में छोटी लाइन के सवारी गाड़ी के जतरा के वर्णन बा । हरेक ठहराव से पहिचान करावत ई गीत एह रेलवे लाइन के भक्ति गीत बन गइल । 1978 में एह लाइन के बंद होला के कुछ साल बाद तक ई गीत सुने के मिल जात रहे । बाकी अब बिलम गइल बा, शायदे केहु के इयाद होखे ।

कोयला आ पानी के सहारे दौड़त एह छोटी लाइन के जिनगी डीजल इंजन के आवे से खतम होखे लागल । ईंधन के खपत आ रफ्तार के मामिला में डीजल इंजन हमेशा बढ़िया रहे । फेर ओहमें भी सुधार होके डीजल मल्टीपल यूनिट (डीएमयू) इंजन के आवे से गुणवत्ता में आउर सुधार भईल । रख रखाव में भी खर्च कम रहे । अयीसने कुछ कारण भईल कि नैरो गेज लाइन बंद कर दियाइल भा ओह लाइन के बड़ी लाइन बना दियाईल । देश में अभीयों ढेर जगह चल रहल बा । कालका शिमला मार्ग पे नैरो गेज आजो चालू बा ।

नैरो गेज (छोटी लाइन) आ ब्रॉड गेज (बड़ी लाइन) के भेव पटरी के चौड़ाई से बा । छोटी लाइन में जहां रेल के पटरी के बीच के दूरी 2 फीट 6 इंच (कहीं कहीं 2 फीट) होला ओहिजे बड़ी लाइन में ई दूरी 5 फीट 6 इंच होला । गाड़ी के डिब्बा के नापो ओहि अनुपात में होला । भारत में छोटी लाइन के शुरुआत 1863 इसवी में गायकवाड़ बड़ौदा में भईल रहे । हालांकि सन 1862 में ही गायकवाड के महाराज खांडेराव गायकवाड़ पटरी बिछवा देले रहन आ ओहपे जवन गाड़ी चलत रहे ओकरा के बैल से खिंचल जात रहे । सन 1863 में ब्रितानी कंपनी नीलसन एंड कंपनी लोकोमोटिव इंजन लगा के देश के पहिला मीटर गेज (छोटी लाइन) रेलवे के शुरुआत कइलस । एकरा बाद त देश भ में छोटी लाइन के जाल बिछ गइल । अधिकांश लाइन के निर्माण ओहिजा भईल जहां से अंगरेजन के कंपनी भारत के प्रकृतिक संपदा के दोहन कर सके आ आपन कल कारख़ाना खाति कच्चा माल पा सके । बिहारो छोटी लाइन से अछूता ना रहल । एहिजा चारगो लाइन बिछल- डेहरी रोहतास लाइट रेलवे,आरा-सासाराम लाइन, बख्तियापुर बिहार लाइट रेलवे, फतुहा-इस्लामपुर लाइट रेलवे । एहमें अंतिम तीन के मार्टिन लाइट रेलवे कंपनी चलावत रहे । बिहार में 1903 ईस्वी में ई कंपनी बख्तियारपुर लाइन चालू कईलस आ फेर तीन नया लाइन आउर बनल । अस्सी नब्बे के दशक तक बिहार के सब छोटी लाइन बंद हो गइल । कुछ लाइन ब्रॉडगेज (बड़ी लाइन) में बदल दियाईल । बख्तियारपुर से राजगीर बड़ी लाइन के पहिले चालू करल गइल । 1978 से बंद आरा सासाराम लाइन के बड़ी लाइन होके चालू होखे में बहुत पेंच आइल । मार्टिन लाइट रेलवे एगो निजी कंपनी रहे । एह

## शशि रंजन मिश्र



आरा, बिहार के रहे वाला शशि रंजन मिश्र जी , भोजपुरी मे हास्य व्यंग्य के संगे संगे गहिर साहित्य के सिरजना करे खाति जानल जानी , ईंहा के हिन्दी आ भोजपुरी भाषा प पकड़ बेजोड़ आ धारदार बा । ईंहा के लिखल कई गो लेख हिन्दी भोजपुरी के कई गो पत्र पत्रिकन में प्रकाशित हो चुकल बा । एह घरी ईंहा के दिल्ली मे रहत बानी ।

लाइन के बंद होते एह कंपनी के जमीन आ संपत्ति पे लोग कब्जा कर लेलस । रेलवे के अधिकांश संपति गायब हो गइल । खैर अब ई इतिहास हो गइल, एह लाइन के बड़ी लाइन बनाके 2006-2007 में चालू कर दियाईल बा । पटना से सासाराम तक के यात्रा आसान हो गइल बा । एह मार्ग के ढेर गाँव खाति यातायात अब बहुत आसान हो गइल । शहरन के बीच के दूरी बहुत कम हो गइल आ क्षेत्र के विकास भी खूब भईल ।

अब समय बदल गइल । सड़क रेल सब बढ़ियाँ हो गइल । स्टेशन सब उहे बा, नैरो गेज से ब्रॉड गेज हो गइल । दिन भ के यात्रा अब कुछ घंटा के हो गइल । लोग के संपर्क आ हित नात के संपर्क अब बढ़ गइल बाकी अब केहु रेलगाड़ी से नाता नईखे जोड़त । अब लोग रेल आ बस से नाता बस टिकट के दामे तक राखेला, सामाजिकता सिमट रहल बा । केहु अब बड़ी लाइन खाति गीत नईखे बनावत आ गावत-

**सुन लऽ बड़ी लाइन के गाना... !!!**



**फोटो : एल जी मार्शल**
**साभार: विद्युत प्रकाश मौर्य**


www.bhojpurisahityangan.com

# लोक-जीवन आ प्रकृति

केशव मोहन पाण्डेय

> साँच कहल जाला कि लोकगीत तऽ प्रकृति के उद्गार होला। साहित्य के छंदबद्धता आ अलंकारन से मुक्त मानवीय संवेदना के संवाहक के रूप में मधुरता बहा के आम आदमी के भी तन्मयता के लोक में पहुंचा देला। लोकगीत तऽ सामान्य आदमी के सहज संवेदना से जुड़ल रहेला।

लोक-जीवन आ संस्कृति के ईश्वर जइसन अवर्णनीय कहल जाला। लोक-जीवन व्यापक आ अनगिनत तत्त्वन के बोध करावे वाली जिनगी के विविधता प्रवृत्तियन से जुड़ल ह। एह कारणे लोक-जीवन में प्रकृति साथे-साथे, ठाँव -ठाँव पर विविध माने आ भावन में लउकत रहेली। मानव मन के बाहरी आदतन के विकास के सभ्यता कहल जाला त आतंरिक आदतन के संस्कृति। लोक-जीवन के संस्कृति सबसे बेसी प्रकृति पर आधारित होला आ प्रकृति से प्रेरित। लोक -जीवन के विविध विशेषता में एगो सबसे बड़ विशेषता त ई हवे कि लोक -जीवन में आदमी के सगरो क्रिया-कलाप धार्मिकता से जुड़ल मिलेला। आदमी एह के कारन कुछू बुझेऽ। चाहे अपना पुरखा-पुरनिया के अशिक्षा आ चाहे आदमी के साथे प्रकृति के चमत्कारपूर्ण व्यवहार। भारतीय दर्शन के मानल जाव तऽ आदमी के जीवन में सोलह संस्कारन के बादो अनगिनत व्रत-त्योहार रोजो मनावल जाला। लोक-जीवन के ईऽ सगरो अनुष्ठान, संस्कार, व्रत, पूजा-पाठ, मंगल कामना से प्रेरित होला। ई सगरो मांगलिक काज अपना चुम्बकीय आकर्षण से नीरसो मन के अपना ओर खींच लेला। एह अवसर पर औरत लोग अपना कोकिल सुर-लहरी से अंतर मन के उछाह प्रकट करेला लोग। औरतन द्वारा गावे वाला गीतन में अवसर के अनुसार वर्णन के विषय तऽ होखबे करेला, सथवे ओह लोक-गीतन के उछाह में प्रकृतियो के नइखे भुलावल जा सकत। मंगल कामना वाला ओह लोक-गीतन में प्रकृति के सुन्दरता के साथ बनल रहेला।

लोक माने सर्वसाधारण जनता। ऊ जनता जेकर आपन व्यक्तिगत पहचान ना हो के सामूहिक पहचान होला। ऊ जनता, जवन खाली कवनो जाति-धरम आ कुल-खानदान के मेढ़ के बीच में कैद ना रहेली, ओहमे सभे बा। दीनहीन, शोषित, दलित, जंगली जाति, कोल, भील, जनजाति, संथाल, नाग, किरात, हूण, शक, यवन, खस, पुक्कस आदि सबहर लोक समुदाय के मिलल रूप के ही लोक कहल जाला। आ ओहि लोक के मिलल-जुलल रूप के लोक संस्कृति कहल जाला। भले ओह लोक संस्कृति के दूर से देखला पर सबके अलग-अलग रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान, पहराव-ओढ़ाव, चाल-व्यवहार, नाच-गाना, कला कौशल, भाषा आदि सगरो अलग बा त का, साँच त कि तबो सभे ओह लोक-संस्कृति के कारणे एक्के माला में जुड़ल रहेला। ओह माला के सुन्नर प्रकृति से निकटता बना देले। लोक-संस्कृति के चर्चा में ना प्रकृति के भुलावल जा सकत बा आ ना ओह जीवन के आधार लोक-गीतन के।

साँच कहल जाला कि लोकगीत तऽ प्रकृति के उद्गार होला। साहित्य के छंदबद्धता आ अलंकारन से मुक्त मानवीय संवेदना के संवाहक के रूप में मधुरता बहा के आम आदमी के भी तन्मयता के लोक में पहुंचा देला। लोकगीत तऽ सामान्य आदमी के सहज संवेदना से जुड़ल रहेला। ओह गीतन में प्रकृति के सौंदर्य के बड़ा बढ़िया प्रस्तुति कइल गइल बा। प्रकृति के वर्णन बा तऽ मन-भावनी सावनी महीनो के वर्णन मिली। सावन के महीना में प्रकृति के हरिहरी भरल सुन्दरता चारू ओर परिलक्षित होला। आकाश में करीआ-करीआ बदरी देख के संयोगिनी औरत पेड़ पर झूला डाल लेली। ओह बेरा झूला झूलत जवन गीत गावल जाला, ओह के कजरी कहल जाला। कजरी में बेला-चमेली आदि के फूल फूलाइल बल्लरीअन के सुन्दर वर्णन मिलेला। रउरो देखीं ना, -

बेला फूले असमान
गजरा केकरा गरे डालीं जी।

प्रकृति के संगीतमयी कहल जाला। जब प्रकृति गुनगुनाले तबे लोकगीतन के वास्तविक जनम होला। तरह-तरह के दृश्यन के सहज असर के कारने


## केशव मोहन पाण्डेय

तमकुही रोड, सेवरही, कुशीनगर, उ. प्र. के रहे वाला केशव मोहन पाण्डेय, एम.ए.(हिंदी), बी. एड. बानी। अलग अलग मंच ला दर्जनो नाटक लिखले आ निर्देशित कइले बानी। अनेक समाचार-पत्र आ पत्र-पत्रिकन में अढ़ाई सौ से अधिका लेख, आधा दर्जन कहानी, आ अनेक कविता प्रकाशित। भोजपुरी कहानी संग्रह 'कठकरेज' प्रकाशित। आकाशवाणी गोरखपुर से कईगो कहानियन के प्रसारण, टेली फिल्म औलाद समेत भोजपुरी फिलिम 'कब आई डोलिया कहार' के लेखन-निर्देशन कइले बानी।

तऽ लोकगीत प्रकृति के रस में लीन हो जाले। कजरी, झूला, हिंडोला, आल्हा, गोधन, छठ आदि एकर प्रमाण हऽ। कातिक के अँजोरिया छठी के छठ व्रत कइल जाला। ओह अवसर पर निर्जलो व्रत रहला पर औरत लोग भाव-विभोर हो के गीत गावेला लोग। ओह गीतन में धार्मिक मनोभाव उजागर होला। धरम के नाम पर प्रचलित विश्वास पारिवारिक विचार के बल देला। ऊहे पारिवारिक विचार, घरेलू निष्ठा आ आत्मा के संयम आदि छठ गीत के विषय हऽ। ओह गीतन में हर जगह कोंहड़ा, नेबूआ, केरा, हरदी, ओल, कोन, सुथनी आदि सामानन के वर्णन मिलेला। देखीं ना, -

कवन देई के अइले जुड़वा पाहुन,
केरा-नारियर अरघर लिहले।

एगो चित्र अउरी देखीं। देखीं नाऽ, एगो भक्त परिवार छठ माई के पूजा करे नाव से घाट पर जाता। गंगा जी के झिलमिल पानी से चित्र और निखर जाता -

गंगा जी के झिलमिल पनीया
नइया खेवे ला मल्लाह,
ताही नइया आवेले कवन बाबू
ये कवना देई के साथ।
गोदिया में आवेलें कवन पूत
ये छठी मइया के घाट।

सामाजिकता के जिंदा राखे खतिरा लोकगीतन में लोक संस्कृतियो के सहेजल जरूरी बा। कहल जाला कि लोकगीत ना रहीत तऽ पागलन के संख्या बढ़ गइल रहीत। एतने ना, लोकगीतन के कारने ही आजुओ सबके आपन गाँव-गिराव ईयाद आवेला। आजुओ ईहाँ के गाँवन में, जहवाँ छठ, पिड़िया, बहुरा, पनढरकऊआ आदि लोक व्रत-त्योहार लोक उत्सव के रूप में जीवित बा, ओहिजा प्रकृति भी जीवित बाऽ। शहर के गति से पिछुआइल लोक-गाँवन में सालो भर मौसम के अनुसार फल-फूल, साग-सब्जी के मनमौजी लता-लड़ी बेसुध होके घरन के छत-छान्ह पर पसरल रहेली आ अपना उन्मादल हरिहरी से मानव-मन के आकर्षित करत रहेली। सगरो मोहबे करेला। छठीए के गीत में एगो अउरी वर्णन देखीं, -

केरवा जे फरेला घवद से,
ओहपर सुगा मेरड़ाय,
सुगवा के मरबो धनुष से,
सुगा गिरे मुरछाय।

साँच त ई ह कि लोक संस्कृति कबो शिष्ट समाज के आश्रित नइखे रहल। शिष्ट समाज लोक संस्कृतिए से प्रेरणा लेत रहल बा। देखीं ना, बियफे के पूजा में केरा के पूजा होखे चाहें रोजो साँझि के तुलसी के पूजा, प्रकृति रानी सब जगह वर्णित रहेली। हर मांगलिक अवसर पर झुण्ड में औरत लोग जब गीतन के झूम-झूम के गावेला लोग, तऽ ओहके झूमर कहल जाला। झूमरो में तुलसी के वर्णन देखीं, -

अपने त जाले रामजी कासी नहाए
हमरा के छोड़ले महा जाल


फोटो–शशि रंजन मिश्र

अकेले जीअरा तुलसी के
छोड़ दिहले राम।

आदमी के जिनगी में बिआह सबसे प्रसिद्ध आ प्रधान संस्कार हऽ। संसार के सगरो जाति-संप्रदाय में ई संस्कार बड़ा उछाह से मनावल जाला। बिआह के मांगलिक बेला पर गावे जाए वाला गीतन में आनन्द आ उछाह के सथवे करूणा आ वेदनो के मिश्रण रहेला। वइसे तऽ दूल्हा-दुलहिन कीहाँ गावे जाए वाला गीतन में अंतर होला, बाकिर तबो प्रकृति के सानिध्य रहेला। सगुन के गीत में आम के पेड़ के वर्णन देखीं, -

अमवा के देखुअन मोंजरिया लिहले
चेरिया बलकवा लिहले
अरे, ओही रे सगुन राम गइले
सीता के लेअइले
कोसिला मनवा हरषित।

राम जी मर्यादा पुरुषोत्तम के सथवे लोक-जीवन के महानायक हवें। मांगलिक गीतन में राम-कृष्ण के चर्चा जरूर होला। राम जी के बारात के आराम करे खातिर बरगद, आम आ महुआ के जुड़ल पेड़ अच्छा मानल जाला। देखीं एगो बिआह के गीत जेहमें सबके वर्णन बा, -

अमवा महुइया, बरगद जुड़ी छँइया
आरे जँहवा तेतर के ई गाछ
ऊहे दल उतरी।

बिआह के विधान में चउथारी होला। ओह चउथारी में ईनार के साथे पीपरे के पेड़ के परिक्रमा कइल जाला। चउथारी के अलावा धार्मिको लगाव के कारन पीपर के पेड़ के वर्णन लोक-कंठ से खूबे होला। एगो वर्णन रउरो देखीं, -


www.bhojpurisahityangan.com

हम चली अइनी बरम बाबा आस हे
दीं ना बरम बाबा अपने सुहाग हेऽ।

ध्यान से देखल जाव तऽ भोजपुरी में देवीओ-देवता से जुड़ल अनगिनत गीत मिलेला। आराधना करे वाला लोग अपना-अपना तौर-तरीका से अपना आराधक के कृपा पावे के बेचैन लउकेला लोग। ओह आराधक लोग पर आधारित गीतन में लवंग, इलायची, पान, सुपारी के वर्णन खूबे मिलेला। रउरो एगो देवी-गीत देखीं -

सुन्दर बा सेनुरा
सुन्दर लवंगीया
सुन्दर बा पान-सुपारी
हे मइया!
खोलीं केंवाड़ी।

देवी माई के वर्णन होई तऽ नीम के वर्णन होखबे करीऽ। देवी माई नीम के डाढ़ पर आसन लगावत आ झूला-झूलत वर्णित होली। पचरा आदि में तऽ रउरो सुनले होखेब। एगो गीत देखीं, -

नीमिया के डाढ़ मइया
बइठे आसन मारी
की झूली-झूली ना,
मइया गावेली गीत
की झूली-झूली ना।।

देवता में भगवान शिव सहज रूप से अपना पुजारी लोग पर प्रसन्न हो जाले। शिवजी के एही भोलापन के कारण भोला कहल जाला। भोला भंडारी के प्रसन्न करे खातिर भांग-धतूरा के जरत पड़ेला। देखीं, -

खोआ मलाई शिव के मनहीं ना भावे
भंगिआ के गोला कहाँ पाईं हो
शिव मानत नाही।
का ले के शिव के मनाईं हो
शिव मानत नाहीं।।

ई कहल जाला कि भगवान शिव भांग के सथवे धतूरो पीए लेऽ आ मगन रहेलेऽ। अड़भंगी शिवजी के गीतन में धतूरो के वर्णन मिलेला। एगो उदाहरण देखीं, -

फूलवा लोढली गउरा
धतूरा तुरली गउरा,
पतवा लिहली सुरकाई
ए शिव छोड़ दीं झीनी साड़ी।

एकरा बाद शिवजी के बेलपत्तर भावेला। उनका स्तुति के बेलपत्तरो के वर्णन देखीं, -

पूड़ी-कचौड़ी शिव के मनहीं ना भावे
बेलवा के पात कहाँ पायीं हो
शिव मानत नाही।
का ले के शिव के मनाईं हो
शिव मानत नाहीं।।

लोक संस्कृति के ई रूप भावाभिव्यक्ति के शैली में मिलेला। ओह अभिव्यक्ति से लोक-मानस मांगलिक भावना से ओत प्रोत हो जाला। लोक जीवन में लोक मानव के मन बोलेला। बुझाला कि प्रकृति अपनहीं गावत बा, गुनगुनात बा। लोक जीवन में त डेगे-डेगे पर लोक संस्कृति के दर्शन होत रहेला आ ओहमे प्रकृति के विविध रूपो नजर आवत रहेला। साँच त ईहो बा कि भारतीय समाज में औरत लोग हमेशा दबावल गइल बा लोग। ओह लोग के गोड़ में कुल, खानदान, मान, मर्यादा, शील, सुभाव के बेड़ी लगावल बा, बाकिर अगर ईमानदारी से सोचल जाव तऽ औरत ना चहती तऽ लोकगीत एतना समृद्ध भइल रहीत? ई तऽ सभे जानेला कि अधिकांश लोकगीतन के रचइता लोग के नामे नइखे पता। एह हाल में अगर केहू सजोवले बाऽ तऽ ऊ हमरा-रउरा घर के नारीए बाड़ी। वर्तमान समय में आधुनिकता शहरन से हो केऽ भले गाँवन-देहातन के लोक-जीवन में आपन रंग जमा लिहले बाऽ, बाकिर अवसरे विशेष पर सही, आजुओ कहीं मांगलिक गीत सुनाला तऽ प्रकृति के विषद वर्णन आत्मा के तृप्त कऽ देला। मन के विभोर कऽ देला। एक बेर रउरो ध्यान तऽ देऽ के देखीं। ई पक्का बा कि राउरो मन अघाऽ जाई।

फोटो–शशि रंजन मिश्र

# भोजपुरी गज़ल

मनोज भावुक

जब से शहर में आइल तब से बा अउँजियाइल
रोटी बदे  दुलरुआ  खूंटा से बा बन्हाइल

गदहो के बाप बोले, दिनवो के रात बोले
सुग्गा बनल ई मनई  पिंजड़ा में बा पोसाइल

शूगर बढ़ल रहत बा, बी.पी. बढ़ल रहत बा
ग़जबे के जॉब बाटे किडनी ले बा डेराइल

जे सुर में सुर मिलावल, जे मुंह में मुंह सटावल
ओही के बा तरक्की, ओह पर बहार आइल

मीटिंग के बदले मेटिंग, सर्विस के बदले सेटिंग
जेकरा में बा हुनर ई, ऊ हर जगह फुलाइल

अइसे त फेसबुक पर बाड़न हजार साथी
संकट में जब खोजाइल, केहू नजर ना आइल

नेटे प देख लिहलस माई के काम- किरिया
बबुआ बा व्यस्त अतना लंदन से आ न पाइल

साथी के घात से बा गतरे गतर घवाहिल
रिश्तन के जालसाजी भावुक  के ना बुझाइल

# तू हमार माई भाषा

हृषिकेश चतुर्वेदी

तूँ ही नजरिया के कोर हऊ,
तूँ ही अंखिया के लोर हऊ,
तूँ ही रूप के संसार हऊ,
तूँ ही जीभ के सिंगार हऊ।

तूँ ही हमार जान हऊ,
तूँ ही हमार पारान हऊ
परगट भईल विचार हऊ,
मन में बसल उद्गार हऊ।

दुर्गति के केऽ बा जिमेवार,
दुर्गति के केऽ बा देखनिहार,
दुर्गति कईलस, अंचरा के फार,
दुलरुआ बेटा तोहार हऽ ऊ।

अंचरा फेरू से सियाइबि हम,
गईल मान लेआईबि हम,
"ऋषि" के केहू माने-ना-माने,
भोजपुरी! तूँ माई हमार हऊ।

## मनोज भावुक

जन्म 2 जनवरी 1976 , कौसड़ , सीवान , बिहार प्रकाशित पुस्तक - तस्वीरी जिंदगी के (ग़ज़ल-संग्रह ); चलनी में पानी (कविता - संग्रह ) युगांडा  और लन्दन में इंजिनियर  अब मीडिया / टीवी चैनल आ फिल्म में सक्रिय

## हृषिकेश चतुर्वेदी

हृषिकेश चतुर्वेदी जी , बलिया के रहे वाला वर्तमान मे कलकत्ता पशचिम बंगाल मे कार्यरत बानी , आखर से शुरू से ही जुड़ल बानी आ लगातार भोजपुरी मे लिख रहल बानी।

# तीन गो गीत

कन्हैया वकील तिवारी

1.

आहो रामा बहेला बसंती बयार कोइलिया शोर मचावेले
पिया मोर छोड़के गइले अंकवार सेजरिया जिया तड़पावेले

एक त रात रहे भकसावन
दूजे पुरवा लागे सिहरावन

आहो रामा अँखिया में कजरा कटाह टिकुलिया पिया के बोलावेले
पिया मोर छोड़के गइले अंकवार सेजरिया जिया तड़पावेले

मेहंदी माने ना हमरो बात
छोड़के जाये नाहीं मोर हाथ

आहो रामा अँचरा ना देबे पनाह जे अँखिया जल बरसावेले
पिया मोर छोड़के गइले अंकवार सेजरिया जिया तड़पावेले

अबहीं छुटल ना पाँव महावर
भईले सेजिया छोड़ यायावर

आहो रामा दिहले ना कवनो ललनवा अटरिया काटे धावेले
पिया मोर छोड़के गइले अंकवार सेजरिया जिया तड़पावेले

2.

भोजपुरी भाषा प्रेम के परिभाषा ह बोली में रस चुएला
तनी बोलल कर भईया, राउर बोली करेजा छुएला
बहकावा में पड़ के अपना भाषा के मत लतिआव
फूल के कुम्हला जईला पो अपने कामे आवेला

3.

आज शुभ दिन बसंत पंचमी के आईल बा
माँ सरस्वती के गली गली मूर्ति धराईल बा
पढ़वईया लोग सब पूजा में व्यस्त बाड़े
गवईया लोग के मंदिर में ताल ठोकाईल बा
सभे शुरूआत करेला अपना कला के सरस्वती वंदन से
लिलार पो टीका लगावेला लोग रोली अवरू चंदन से
नि:शेषजाड्यापहा सभके जेहन में कुलेल करेला
लोगन के जियरा जुडा जाला माई के अभिनंदन से

बाकी एगो सवाल त पीछहीं छूट गईल बा

काहें सभके जिनिगि में अन्हरिया भईल बा

प्यार के बोली लोग काहे नईखन बोलत
दोसरा के बढ़ंती से लोग काहें छहाँईल बा

## कन्हैया वकील तिवारी

कन्हैया वकील तिवारी जी रोहतास बिहार के रहे वाला हई , भारतीय वायुसेना से अवकाश प्राप्त वारंट अफसर , इलेक्ट्रिकल इंजिनियरिंग में डिप्लोमा हई। हिन्दी, अंगरेजी अवरू भोजपुरी में कविता लिखेके शौक बा । एह घरी इँहा के बैंगलोर में रहत बानी ।

# दलित के ?

सरोज सिंह

तीनों तबका के मेहररुअन के हालात जनला के बाद ई निर्णय लिहल मोसकिल बा कि "दलित के ?"

## पहिलका तबक़ा (अंजोरा)

सुरुज देवता के अंजोर करे से पहिले जब तीन चौथाई शहर सुतल रहेला तब्बे कसमसात उठ जाले अंजोरा। अन्हारे जब हाथ के हाथ ना लउकेला, लउक जाला ओकरा ओसारा में राखल खाली बाल्टी। एगो हाथे दू बाल्टी दोसरके हाथ दांत में गुल मांजत उ चहुंप जाले म्युनिस्पलिटी के कल के ओर जहाँ पानी भरल एगो मोर्चा संभारे से कम काम ना होला। घर में पानी भर के नहा-धो के चाय में रोटी बोरत जोर से गोहरावे ले -

"ए भगेरुआ उठ अबेर भईल, आजू तनखाह के दिन ह"। उम्म्ह! अधनीने खिझियात भगेरू कहे लागल...

"तोहके कई बेर कहनी, नाव मत बिगाड़ हमार भगीरत नाव ह "...तू जो, हम उठ जाईब" कहत भगेरू करवट बदल के महटीया के सूत गईल।

चाह ख़तम कइके अंजोरा दीवार पर टांगल शीशा के सोझा केश कंघी कइ के भर मांगे सेंदूर अउर टह-टह लाल टिकुली साट लेले ,शीशा में अपना के देख के ही लजा जाले, भगेरू के बात मन पड़ जाला ओकरा

"रे अनोजोरिया,तोर माथा के टिकुली बुझाला जइसे सुरुज देवता अंजोर करत उग अईलन, हमार पूरा जिनगी में अंजोर कर दिहले तें"। टिकुली के निहारत ओकर निगाह माथा पर उभरल चोट के निसान पर चल जाला। ...15 बरिस पुरान चोट अंजोरा भुला जाईल चाहे ले मगर उ निसान भुलाए ना देला।

अंजोरा जेकर जनमला प, ओकर ईया के अगरइला के ठेकान ना रहे सउरिये में से चिल्लाये लगली "अरे देखसं रे अंजोर हो गईल ... ई चमटोली में कईसे जनमलस ? बुझाता राम जी पाता भुला गइले"

बस थरिया ना पिटाइल बाकी एगो बेटा होए के ख़ुशी पूरा मनावल गइल। घर खानदान के पहिलौठी उहो देवी नियर ...। भक-भक गोर रंग ....देवी दुर्गा नियर टानल आँख तब्बे से ओकर नाम अंजोरा रखा गईल। ईया के दुलारी अंजोरा के लरिकाईं खूब दुलार में बीतल। अंजोरा के बाबु जोखू तपेदिक के बेमारी में सर्ग सिधार गईलन ....माई, अउर ईया के काम-काज अंजोरा के कब्बो नीक ना लागल। उ कब्बो ई ना समझ पवलस कि, माई बेर-अबेर इहे गाना काहें गावेले ..?

"चमवो के दमवा लगवला ए राम जी<br>
केहू बिराजल महला-दुमहला<br>
केहू के न आटल छानी,ओसारा<br>
चमवो के दमवा लगवला ए राम जी<br>
बोले न पीपर कुछु बोले न कदम्ब<br>
ई कुल हवे बडवार मनई के छदम<br>
चमवो के दमवा लगवला ए राम जी "

मगर जब गवना कई के ससुरारी गईल तब कुल बुझाए लागल कि, चाम के रंग में भेद नइखे जाति के रंग में भेद बा .....।

भदैया गाँव के चमटोली में सबसे भरल-पुरल घर बैजू राम के रहल। मुखिया के ख़ास अदमी, जेतना दू नंबर के काम होखे बैजू के जिम्मा रहे एहिसे टोला में ओकर दबदबो रहे। बड़का बेटा बुद्धिराम खातिर बैजू खुद अंजोरा के हाथ मांगे गईल रहलन ....ईया के बहुत मन ना रहल, इहाँ बियाह करके, मगर पूरा टोला में बैजूये के दुआर पक्का के रहल। इहे लालच अंजोरा के बियाह बुधिराम से तय करा दिहलस।

बैजू के छोटका बेटा भगीरथ रहल। आजाद खयाल भगीरथ के कब्बो मेहतर-भंगी के काम न रुचल.. उ आपन टोला के लईकन के छोड़ के, बाबुसाहब लोगन के लईकन के संगे दोस्ती गांठे, एकरा खातिर कई बेर पिटाइलो रहे। अभी नीक से गोछ-मोछ जामलो ना रहे कि गाँव के 'टान्जिस्टर काका' के संगे पंजाब निकल गईल। तब से भगीरथ भगेरू कहाए लगलन। 'टान्जिस्टर काका' कवनो जमाना में धूरा कहास, एगो अनाथ लइका गाँव वालन के दाना-पानी पर आश्रित रहे वाला,जब जिनगी काटल मोस्किल हो गईल, तब पंजाब मजूरी करे जाए वाला झुण्ड में मिल गईलन अउर जब लौट के अइलन त उनका कान्हा पर हमेशा ट्रांजिस्टर बाजत रहे, एहिसे गाँव के लइकन उनकर नाव 'टान्जिस्टर काका' रख देलेसन।....एही तरह भगीरथ कुछ बरिस बाद जब नकदी कमा के ले आईल तब से टोला में इज्जत बढ़ गईल।

अब उ भंगी भगेरू न रहल राजमिस्त्री भगीरथ बन चुकल रहे।

अंजोरा के गवना करावे बैजू, बुधिराम के संगे भगेरूयो गईलन। पियर लुगा में अंजोरा गोराई देख के भगेरू के आँख चुन्हिया गईल। बहुत हैरानी भईल कि ई पगलेट के बियाह हेतना सुनर मउगी से ?

"बाबूजी ई का कईलऽ? अंजोरा के जिनगी से खेलवाड़ ?

"चुप भगेरुआ, एकदम चुप, तोरा भागे पराये से फुर्सत नइखे बुरबकवा के निसा करे से फुर्सत नइखे, घरे खियाई बनाई के रे?

डपटत बैजू भगेरू के चुप करा दिहलन।भगेरू कुछ दिन बाद फेर दिल्ली


www.bhojpurisahityangan.com

चल गईल ।जात समय अंजोरा के चेतवलस...

"भौजी इहाँ कुछ नइखे, बिला जईबू, चलऽ हमरा संगे शहर में इज्जत के रोटी मिली"

मरुआईल अंजोरा आपन उदासी छूपावत, मुस्किया भर देहलस,.....

अंजोरा के जिनगी में जइसे गरहन लाग गईल, जब ओकरा पता चलल कि, ओकर मरद बुरबक-बताह त बटले बा संगे गंजेड़ीयो ह ! घर के काम-काज के संगे लिपब-पाथब..सोइरी,नरकटाई जच्चा-बच्चा के गुह-मूत, देह मीजल सब काम करे के पड़ल । माई के गावल गीत अब बुझाए लागल .....रात बिरात अंजोरा के बाथा गीत में उपट आवे ...।

**"मड़ई में भइले बियाह,कोठरी में गवन भईले हो**

**का इहे दिन खातिर हम रहली जतन कईले हो..**

धीरे-धीरे ससुर के रंग-ढंग बदले लागल ...अंजोरा के असहाय बूझ के अपना बस में करे खातिर, पूरा दम लगा दिहलस, चकमक टिकुली, रंगीन लुगा ,गमकउआ साबुन, स्नो-पावडर अंजोरा के देके मोह-छोह देखावे लागल !

"चिंता मत कर तें, बुधिरामवा कवनो काम के नइखे त का भईल? हम बानी नू, कवनो चीज के कमी ना होए देब तोरा "

अंजोरा ससुर के बदनीयती के भांप लेले रहल कब्बो लगे ठेके न दे ..ससुर फनफना के रह जास झूठमूठ के इल्जाम लगा के कई बेर बुधिरामो से पिटवा चुकल रहे। रात के गांजा पीया के कवनो बहाने बुधिराम के पठा के अंजोरा के आगे पीछे कुकुर नियर दुम हिलावे लागे ....मगर अंजोरा टस से मस ना भईली। एक दिन फुंफकार के कह दिहलस,...

"रऊआ चुरूआ भर पानी में जाके डूब मरी, बेटी सरीख पतोह पर नियत ख़राब करऽतानी, नरको में ठेक ना लागी ...धोखा से नसेड़ी-गंजेड़ी से बियाह कइ के कवन जनम के बईर सधले बानी जी?"

पनपनात बैजू अंजोरा के ना पाइ के धमकीयो दे दिहलस-

"दू बीत्ता के मउगी,बुरबक भतार, ओपर से एतना गुमान,ससुरी के गुमान माटी में ना मिला देहली त असल बाप के जनमल नाही "

भिनुसहरे बैजू मुखिया के दुआरी पहुच गईल ..

"गोड़ लागऽतानी मालिक "

"का हाल बा रे तोर ? जबसे बेटवा के गवन कइले, लउकले ना ?" सुनले बानी की इन्नर परी बियाह के ले आईल बाड़े, दरसन कब करइबे ?

"का बताई मालिक हमार पतोहिया जब्बर मेहरारू बिया,सउसे घर में नाक में दम कईले बिया, केहू के कहल में नइखे ..आ छिनाल एक नंबर के, हम त राउर सेवा में हाजिर कर देती बाकी ससुरी बिगड़ैल बछड़ी लेखा लागेले कुदूके अउर अंड-बंड बके ...."

"आछा रंडी के ई मजाल ?"

"रुक अभी ओकर माथा ठेकान लगावऽतानी,अरे मुन्गरिया, जो त

# सरोज सिंह

बलिया , युपी के रहे वाली सरोज सिंह जी , हिन्दी भोजपुरी आ बंगला साहित्य मे उभरत एगो बरिआर नाव बानी । हाले मे इँहा के लिखल हिन्दी काव्यसंग्रह " तुम तो आकाश हो " आईल ह । भोजपुरी मे सैकड़न गीत गजल कविता कहानी के रचना कई चुकल बानी । पाक कला मे दक्ष सरोज जी एह घरी गाजियाबाद मे बानी ।

पगलेटवा के मउगी के बोल... आपन भल चाहत बिया त अन्हियारे खलिहान पर आ जाई, ना त समूचा गाँव के सामने बेइज्जत करब"

मुखिया के सनेस सुनके ,अंजोरा के आन भभक गईल, गुर्रात मुन्गिया से कहलस

"जा कही दे मुखिया से "हमरा के अइसन वईसन मत बुझस, हम कवनो रंडी ना हई, जे केहू के साथे सूत जाईब, ससुर-भतार उनकर जी हुजूरी करस हम नाही करब"

कहे के तो जोस में अंजोरा कह गईल बाकी ओकर अंजाम से उ सिहर गईल मुखिया कुछो कर सकेला ।... कुछ दिन धमकी, गाली गलउज चलल फेरु हार-पाछ के मुखिया के अउर बैजू गाँव भर में छिनाल, कुलटा ,डाइन कही के बदनाम कईल सुरु कर देलेसन।

"अरे मानी सभे इ ससुरी निछन्न राते, अखरे देह, एक हाथ में झोंटा खोलले एक हाथ में सूप,कजरौटा,झाड़ू आ दोसर हाथे कपूर जरा के, असमसान घाट जाले, उहाँ भूत खेलेले, आ भोर होते घरे आ जाले"

अईसन कुल बात सुनके चार लोग अउर इकट्ठा होके सुने लागे ।..एक दिन त अति हो गईल। मुखिया बुधिराम के कुछ रुपिया के लालच देके अंजोरा के घसीट के ले आवे के कहलस ।.....बुधिराम के सौ-सौ के नोट के आगा अंजोरा गाय गोरु बुझाय लागल। झटे घरे पहुँच के गोहरावे लागल।

"रे छिनाल कहाँ बाड़े निकल बहरी " "चल ससुरी तोहार मिजाज मुखिया बाबु ही ठीक करिहें ....."

अंजोरा ओ घरी सांझ के चुल्हा जोरत रहे। चुपचाप सुनके कवनो जवाब न दिहलस ..पिनपिनात बुधिराम चूल्हा के आगा चुक्का-मुक्का बइठल अंजोरा के पीठी में एक लात मरलस, अंजोरा के माथा चूल्हा के मुहानी तर जोर से भीड़ गईल। जरत चइली अंजोरा के माथा में धंस गइल । दरद अउर खीस से बिखियाईल अंजोरा पलट के हाथ में जरत लुआठी लेके बुधिराम के आगे लहरावत कहलस,...

"ते कवना बात के हमार खसम रे ....ते रंडियन के दल्ला हवे, ..जो....**आज से ते हमार खसम ना अउर हम तोहार मेहरी ना...जोर**

**जांगर बा त छू के देखाउ, देवी मईया के किरिया, इहें के इहें गाड़ देब "**

माथा के चोट, हाथ में लुआठी अउर अंजोरा के चंडी रूप देखि के बुधिराम सिटपिटा के उहाँ से परा गईल!

अंजोरा हाली-हाली दू चार गो लुगा आ जमापूंजी लेके 'टान्जिस्टर काका' के घरे पहुँच के हाथ जोड़ के उनका से बिनती करे लागल, कि कसहू इहाँ से बहरी निकाल द भा भगेरु के पता दे देस .... 'टान्जिस्टर काका' अनुभवी अदमी रहलन माजरा कुल बुझत देर न लगुवे ....

'आज रात इहाँ रुक जा, भोरे दिल्ली के ट्रेन मिली, भगेरू आजकल उहें बा,ई ह ओकर पता "

तब से अंजोरा दिल्ली के रुख कईलस फेर मुड़के गाँव ना देखलस ......।

अब उ भगेरू के नामे सेनुर टिकुली बड़ा सवख से लगावेले ... शीशा में माथा के चोट के निसान सोहरावत ककही से साइड मांग फार के बार चुआके छुपा लेले ! अब उ चमार के मेहरारू ना राजमिस्त्री के मेहरारू हिय !

## दोसरका तबक़ा (सरिता)

सुगनी उठ, पापा के नास्ता, खाना बना दिहे हम जा तानी" बेटी के उठा के अंजोरा निकल गईली अपना काम पर। सुगनी हाई स्कूल पास कई के टेलरिंग सीखे जाले।

जहाँ अंजोरा रहेले ओकरे आस-पास बस्ती में तमाम बांग्लादेसी प्रवासी परिवार भरल बा ...केहू के मरद रेक्सा चलावेला केहू के मरद मजूरी भा मिस्त्री के काम करेला। मेहरारू कुल घर में झाड़ू-पोछा, बरतन-बासन करेलीसं। सब से अंजोरा के खूब छन गईल बा। के कवन जात के ह, एसे केहू के फरक ना पड़ेला। ..साफिया अब संपा बन चुकल बिया एहि तरह साजिदा .... संजू , निलोफर ...निर्मला, बन चुकल बाड़ी सन। ओकनी के पता बा असली नाम अउर जात से शहर के लोगनो के फरक पडेला। मेमसाहेब लोगन के मेहरबानी से जवन चाय-पानी मिलेला, जात के पता चलते ही ओ लोग के नेमहां गिलास-कप बिसैना हो जाई।

कुछ दूरी पर HIG अउर MIG कालोनी बा। उहें कुल एके संगे बतियावत -गपियावत काम पर जायेलिसन। सबके काम करेवाला घर बटल बा।

अंजोरा पहिले MIG कालोनी में सरिता के घरे झाड़ू बर्तन करे जायेले।...सरिता के नींन अंजोरा के कालबेल से टूटेला। ओकरा बाद जइसे सरिता के देह में बिजली फिट हो जाला। दुनु लईकन के उठा के तैयार करऽ, टिफिन तैयार करऽ,..फेर पतिदेव के उठावऽ, उनकर चाय-नाश्ता, टिफिन तैयार करऽ ! अंजोरो साथे-साथे लाग के कुल काम निपटावे में मदद करेले। घर खाली भईला पर सरिता अपना अउरअंजोरा खातिर चाय बनावेले, फेर बईठ के कालोनी के गोसिप के साथ चाय पियाई होला।

"चार बजे आईब दीदीजी "कह के अंजोरा दोसरा घरे काम निपटावे निकल जाले।

सरिता अंजोरा के गईला के बाद वाशिंग मशीन में कुल कपड़ा धो-गार के, आपन पूरा न हो पावे वाला हसरत के तरह ...जोर से झिड़क के कपड़न के रेंगनी पर टांग देले।

लईकन के फ़रमाइश के खाना बनाके, नहा-धोके पूजा करत समय घर के बरक़त मांगेले, घर दूबारा बसे से पहर भर पहीले जवन ओकर ख़ास आपन समय होला, हिसाब के डायरी निकाल के दूध,अखबार,राशन,सब्जी,ट्यूसन,दवाई के हिसाब लगावत बचल तनखाह गिनेले। सांझ के पतिदेव से रिमोट के मसला न होखो, ए खातिर ..रिपीटेड सीरियल देख के संतोस के लेवेले। लईकन के स्कूल से आवते ही फेर से सरिता के देह के मसीन चालू हो जाला रात के बिछवना पर पहुचला ले। ओहिजो पतिदेव के उलाहना पीछा ना छोड़ेला।

"का हो गईल बा तहरा, "केतना लबर-झबर रहेलू, मिसेज सिन्हा के देखऽ केतना टिप-टॉप रहेले "तू त अभिये से ठंडा हो गईलू "

पति के फरमाइस पूरा कर के करवट बदल के उ इहे सोचेले कि,

"का इहे जिनगी ह?सब के फ़रमाइश पूरा कइल ? का उ प्लास्टर आफ पेरिस हिय? जे सबके अलग-अलग साँचा में बस फिट होत रहऽ ? पढाई-डीग्री खाली बियाह तय करे खातिर जरुरी रहल? इ कइसन मकड़जाल बा, जेमे लोक लाज, संस्कार के जाल सघन होत जाता, बाहर निकले के कोसिस में अउर धंसत जात बानी ? आखिर में जब कवनो जवाब न मिलेला तब सरिता कुल सवालन के तकिया बना के सूत जाले।

## तिसरका तबक़ा (सूजी मैडम)

सूरूज देवता जब कपारे पहुचेलन तब अंजोरा पहुँच जाले सूजी मैडम के कोठी पर ..सूजी मैडम जे पहिले सुजाता रहली ..इनका सोसाइटी में सुजाता नाम फैसन में नइखे एसे सूजी नाव से बोलावल जाली।

अंजोरा के बनावल ब्लैक काफी से मैडम के नीन खुलेला। इंकर दुनु लईका दून स्कूल, होस्टल में पढेलेसं ...सालाना छुट्टी भईला प घरे आ पावेलंस। पति बिजनेस खातिर हमेशा घर से बाहरे रहेलन।

सूजी मैडम अपना के व्यस्त राखे खातिर किट्टी,सोसल वर्क, ब्यूटी पार्लर, खरीदारी, पार्टी में अझुराइल रहेली । पति के घरे आवते ही अपना के हर तरह के मेकप से संवारके उनका आगा सजल धजल रहेली।

पति के घंटा भर फ़ोन पर केहू से बतियावत देखियो के अनदेखी कर देली। उड़त-उड़त एक्स्ट्रा मेरिटल अफेयर के ख़बर के उ बेल्कुल सुनल ना चाहेली।

काहें से कि ऊ सिक्युरिटी, सान अउर स्टेटस के बर्खास्तगी से बहुत खौफ़ज़दा बाड़ी। उनका इ ठीक से पता बा कि, पति से अलग उनकर कवनो वजूद नइखे। अब त ठेहुनवो भारी होए लागल बा उमिरदराज होए के डर सतावे लागल बा। घर में अंजोरा ,माली ,खानसामा ,चौकीदार के इलावा अउर केहू पुछार करे


www.bhojpurisahityangan.com

वाला नइखे। ई कुल सोच के मैडम के भीतर सांस के साइफन लाग जाला, जे पिछलका बटोरल सुख के बाहर फेंकत जाला ओकरा बदले झुर्री, ब्लडप्रेशर , चिड़चिडापन, खाली दिन अउर खलिहा रात वापिस देला। इहे कुल सोच के बदहवासी में सूजी मैडम तिसरका सिगरेट सुलगा लेवेली अउर सोचेली कि,

"का बच्चा पैदा कईल, अच्छा पढ़ावल-लिखावल , यूरोप के सैर कइल,पति के फरमाईस पूरा कईल, देर रात तक पार्टी कईल.....का इहे जिनगी ह?

कहीं अउर कवनो जवाब ना पाके ,सूजी मैडम जवाब में अपने बुदबुदा देली ...परजीवी हईं।

एतने में अंजोरा उनका हाथ से सिगरेट छीन के, खाना के साथ डिप्रेसन के दवा खिया के, उहाँ से विदा लेले।

त अइसे संझा होते ही ख़तम हो जाला अंजोरा के काम।

**"अब हम बेजायज कहल न मानब**

**बहुत नचउलऽ अब नाही नाचब**

**घूरो के दिन फिरल हो राम**

**संझा भईल अंजोर, चलऽ अपने धाम "...**

गीत गुनगुनात, सब्जी-रासन कीन के आपना संघतियन के संगे बेफिकीर होके चल पड़ेले अपना घर के ओर !

अइसना में तीनों तबका के मेहररुअन के हालात जनला के बाद ई निर्णय लिहल मुस्किल बा कि "दलित के?"

## कथा-कहानी

# बियाह कटवा

पियूष द्विवेदी भारत

शुक्ला जी गाँव के चौउराहा प पहुँच के, एने-ओने ताके लगले। जईसे कुछ खोजत होखस। फेर जाके बरगद के पेड़ तर बईठल एगो आदमी से पूछने, "ई हुशियार पुर ह न ?"

"हूँ, का भईल?" ऊ आदमी कहलें।

"अरे, हरिहर तिवारी जी की इहाँ जाएके बा। घरवा नईखी जानत।" शुक्ला जी कहलें।

"तिवारी भाई किहाँ, उनकर रिश्तेदार हईं का ?"

"नाही, बाकिर सब ठीक रहल त रिश्तेदार बन जाईब, ओही खातिर आईल बानी।"

"अच्छा, ऊ कईसे?"

"केहू से सुनि के उनकी बड़का लईका खातिर आईल बानी। सुननी बड़ी होनहार लईका ह, आ परिवारो नीक बा।"

"अच्छा, शादी-बियाह के फेर में" ऊ आदमी तनि गंभीर होके कहलें, "नाही, बढिए बा। तिवारी भाई, अपने देहीं ठीक आदमी हंवे। आ लईकओ....ठीके ह, बस तनि...?" ई कहिके ऊ आदमी चुपा गईलें।

"बस तनि का? कौनो बाति बा ?" शुक्ला जी चौक के पूछलें।

"नाही, कुछ खास ना। सब ठीक बा।"

"नाही, कौनो त बाति बा, बताईं। हमरी लईकी के जिनगी के सवाल बा।"

"कहल त ना चाहत रहनी हं, बाकिर सुनी, तिवारी भाई त ठीक आदमी हंवे, बाकिर ऊ लईका एक नम्बर के पियक्कड़ ह। झगड़ा-लड़ाई ओकरा खातिर आम बा।"

"का कहतानी, सही में ?" शुक्ला जी एकदम बऊवा गईने।

"हम काहे खातिर झूठ बोलब, रऊरा जाईं, खुदे देखब।"

"ना, अब ना जाएब, एकदम ना जाएब। राऊर धन्यवाद भाई।" कहिके शुक्ला जी वापस चल दिहलें।

अब ऊ आदमी के बगल में बईठल नन्हका कहलस, "का काका, पियक्कड़ त छोटका ह न ?"

"बाकिर ई आईल त बड़का खातिर रहने ह।" कहिके ऊ आदमी मुस्काए लगले।


## पियूष द्विवेदी भारत

देवरिया युपी के रहे वाला पीयुष द्विवेदी भारतीय जी, स्वतंत्र लेखन के क्षेत्र मे बानी , कई गो अखबार पत्र-पत्रिका मे इँहा के लेख छप चुकल बा। भोजपुरी मे इँहा के लगातार लिख रहल बानी। एह समय इँहा के नोएडा मे बानी।

# मंतोराना फुआ

सुमन सिंह

“ई लुग्गा के देलस हऽ हो चंपा ?” मंतोरना फुआ चंपा के नखशिख ले निहरले के बाद बहुत प्रेम से पुछलीं।
"सामने वाली भाभी जिनकर कपड़ा धोइला उहे देली हई फुआ जी।" चंपा मधुरे सुर में जबाब दिहली।
"हुँह ! अपने त ऊ मोटकी नीक-नीक पहिरेले अउर तोहके फाटल-पुरान दे देवले...तनिको लाज न बरेला ओके। बतावऽ भला इहो कवनो बात ह।"
मंतोरना फुआ चंपा के पीछे-पीछे लागल रहेली। कब्बो बरतन माँजत खा उनके लग्गे खड़ा होके बतियावस। कब्बो पोछा लगावत, कब्बो झाड़ू बहारत त कब्बो कूड़ा फेंकत, एक्के सुर में बोलस। हफरी छूट जाय बाकी मानस ना।
" लइकवा पढ़े गइल ह हो चंपा ?"बुआ जिज्ञासा से लबालब रहेली।
"हँ बुआ जी।"चंपा बरतन माँजत, मुड़ी गड़ले बोलली।
"लइकिया ?"
"उहो"
"अदमिया तोहार पियल छोड़लस की ना ?"
“कहवां बुआ जी, थेथर नू हऽ... जब ले दुई लात न मराई तब ले ना छोड़ी।” चंपा अब बुआ जी से त्रस्त हो गइल रहली।
"अरे नाही.... औरत जात के ई कुल ना बोले के चाही बिटिया।" मंतोरना बुआ उपदेसक क भूमिका में मैदान में उतरे के तइयारी करे लागली, बाकिर चंपा उनके बकबक से घबरा गइल रहली।
"बुआ जी ! तनी देर सुत काहें न लेत हईं ?"
"अरे दिनवा भर सुतल-सुतल देहियें दुखाये न लागेला हो।"
"त टीवीए देख लिहीं।"
"अंखियाँ दुखाये लागेला नू ए चंपा।"
"त कहीं घूम-फिर आयीं।"
"केकरे घरे जाई। सब केहू आपन केवाड़ी बन क के घरे में घुसल रहेला। हमनी के गाँव-देहात के अदिमि। हमहन के इहाँ ना नीक लागेला।"
"अउरी केतना दिन ले रहब।"
"देखऽ जब बिटिया टिकस कटा दें।"
**"ओकरे पहिले तऽ तूँ बहुते लोगन क टिकस कटा देबू बूढ़ा।" चंपा बुदबुदात ,झनकत-पटकत बरतन माँजे लगलीं।**
"तोहार गाँव कहाँ पड़ेला चंपा।"
"बहुत दूर पड़ेला। तोहरा ना बुझाई।"
"काहें न बुझाई..बताव।"
"हिम्मतपुर जानेलू ?"
"नाही, बलिया में ह ?"
"नाही।"
"त गाजीपुर में ?"
"अरे नाही भाई।"
"त बिहार में ?"
"हमार कपार दुखात ह।" चंपा मारे खुनुस में सीसा क गिलास उठवलीं अउर तोर देहलिन।
फुआ सिटपिटा के अपने कमरा ओरी चल देली आउर चंपा काम छोड़ के घरे।
साँझी के चंपा अपनी मलकिनी से जोर-जोर से कहत रहली-
"हमरा काम न करे के ह तोहरे घरे भाभी जी। ऊ बूढ़ा कपार खा जाली।"
"अरे चंपा ! बस एतना बदे काम न छोड़ेके चाही। ऊ आज नाही त काल्ह चल जइहैं। बाकी जबले केहू भरोसे के देखभाल करे वाला न मिल जात तब ले त बुआ रहबे नू करिहं ।"
अगले दिन से घर में घनघोर चुप्पी के राज हो गइल। बुआ अपने कमरा में बंधक बनल टुकुर-टुकुर टीवी निहारस आउर जब उबिया जास त खिरकी-दुआर झांकें लागस बाकि चंपा ओरी भुलाइओ के ना ताकस। चुप मार के फुआ केहू तरे दू दिन बितवली। उनके अब लगे लागल कि उ कउनो कैदी हईं। दू कमरा के मकान में बंद फुआ के जब दम घुटे लागल त बुचिया से कहलिन-
"हमरा गाँवे जाये के बा। हमार इहाँ मन ना लागेला ए बुचिया.. बहुत भयल कासी वास। हमरा जाए दऽ..। "फुआ के नान्ह लइकन मतीन जिदियात देख के बुचिया घबरा गइली।
"फुआ कौनों दिक्कत-परेसानी होखे इहाँ त बतावऽ। देख तऽ इंहा रहत-रहत केतना सुग्घर हो गईल बाड़ू। सब केहू कहेला कि फुआ जी का खाली कि एतना गोर-गार हो गइल बाड़ी।" बुचिया फुआ के फुसलावे के कोसिस में लवलीन रहलिन बाकि फुआ टस से मस ना भईली।
"अंगार...दिनवा भर कोठरी में बन-बन पियरा गइल बानी अउर तोहरा हम गोर-गार देखात बानी। दिन भर तू लोग काम पऽ चल जालू अउर हम इंहा बइठल दुआर अगोरिला, इनकर-उनकर मुँह जोहिला केहू अपने ओरी के भेंटाय कि जी आन-मान होवे... बाक़ी चिरई क पूतो ना देखाला.. हमार टिकस कटा द।" फुआ रोये-रोये हो गइलीं। बुचिया घबरा गइली-
"ठीक बा फुआ... एतना घबरा जन काल्हे टिकट करा दिहिला तोहार।"
बाकि फुआ के बुचिया पर अब तनिको भरोसा ना रह गइल रहे। अब घरे जे आवे ओहि से निहोरा करे लागस-
"ए बाबू, ए बचवा ! हमार टिकस कटा द लोग।" फुआ के ई दसा देख सब केहू बुचिया के आड़े-अलोते गरिआवे लागल-
"मारऽ अपने सुआरथ के फेर में बुढ़िया क जान लेत बा लोग।" बुचिया सुन के अनसुना करत जांस। फुआ से नीक, भरोसेमंद उनका केहू देखइबे न करे कि उ फुआ के छोड़स। फुआ के मन बहलावे खातिर बुचिया


www.bhojpurisahityangan.com

## सुमन सिंह

बनारस , उत्तरप्रदेश के रहे वाली सुमन सिंह जी , बनारस मे ही लेक्चरर के पोस्ट प कार्यरत बानी । आखर से जुड़ल सुमन सिंह जी हिन्दी मे कई गो पत्र पत्रिका खाति लिख चुकल बानी, लिख रहल बानी । वर्तमान मे बनारस मे रह रहल बानी




उनका के एगो बियाह में ले गइली । लइकी के माई बुचिया के सखी रहलीं । बुचिया के देखते उनका लेके लइकी से मिलावे चल दिहलीं ।
लइकी के मेकऽप होत रहे । ब्यूटीशियन उनके सजावत रहे । फुआ के लइकी के लग्गे बइठा के बुचिया सखी संगे बरात क सुआगत-सत्कार करे चल दिहलस । फुआ कुछ देर ले ब्यूटीशियन के देखत रहली बाकिर जब ना रहल गइल त कहे लगलि-
"कौने बुटीपारले से आइल बानी रउआ ।"
"लंका से, नाज़ से ।" भोजपुरी बोले-समझ में आवे के बावज़ूद ब्यूटीशियन खड़ी में बोललीं ।
"आछा-आछा । केतना लिहिला सजावे-बजावे क ?"
"दस हज़ार... स्किन ट्रीटमेंट सहित ।"
"बाप रे बप्पा! ई लीपले-पोतले बिना कउन अकाज... एतना में त हमरे गाँवे छोट-मोट भोज-भात हो जाइ अउर मय गाँव हिकभर खाई ।"
ब्यूटीशियन समेत सब केहू फुआ पर हंसे लागल ।
"हई जवन गहनवा पहिरले हऊ असली ह बुच्ची ?" फुआ धीरे-धीरे लइकी के लग्गे सरक अइली अउर गहना-कपड़ा छू-छू के पूछे लगली ।
"हाँ" लइकी फूल के कुप्पा ।
"बड़ा भारी बाटे... बड़ा महँग होइ नू हो... तोहार बाबू बड़-बढ़ूआ अदिमि होइहें । का करेलें..सरकारी नोकरी कि पराइबेट ?"
"सरकारी नौकरी ।"
"उपरियो खूब मिलत होइ ?"
"मतलब ?" लइकी फुआ के कहनाम ना समझ पइली ।
"बड़ अदिमी हऊ जा तोहन लोग बचवा । हमार एगो काम कर दा बचवा । खूब पुन्न मिली... घर-ससुरे राज करबू । पाहून रानी बना के रखिहें । हमार टिकस कटा दऽ... हमरा आपन गाँवे जाए के बा । अबही फुआ सुर धइले चाहत रहलीं कि बुचिया आ गइल । फुआ ओ बेरी चुप लगा गइली बाकिर बाद में गाँव जाये के जिद धइले फुआ खाईल-पियल और बुचिया से बोलल-चालल छोड़ दिहली । अब बुचिया फेरा में पड़ गइली कि फुआ उपास करत-करत बेमार न हो जास । कहीँ बेमार होके खटिया धय लिहन त के उनकर सेवा-सुसुरसा के करी । एहि चिंता में पड़ल बुचिया बिना आगा-पाछा कइले गइली आ टिकट कटा लिअईली ।
"ए फुआ चलऽ उठा खा ला ।"
"भूख नईखे ।" फुआ बहुत मनावन कइले प खिसिया के बोलली ।
"हई देखऽ तोहार टिकट हो गइल ।" फुआ मनेमन गदगद बाकि जनावे ना देवे के फेर में चुप्प लगवले रहली । जब बुचिया उनके कमरा में से खाना लेके जाये लगली त फुआ धीरे से गोहरवली-
"आछा त लले आवा । भूख त नइखे बाकी केहू तरे दू कौर खाइए लेब ।" खात-खात फुआ पूछत गइलीं-
"टिकसवा क बजे वाली गाड़ी के मिलल ह ?"
"शाम के चार बजे के ।"
"काहें! भोर वाली के ना मिलल... काहे से कि भोरे चहुँपतीं त बचवा के सुभीता होत... साँझी ले त ऊ स्कूले में पढ़ावत रहेलें नू ।"
"घबरा जन बाउजी से बात हो गइल बा । केहू के भेज के तोहके लिया अईहन ।" फुआ के चेहरा अब फूलगेंदा हो गइल ।
"ले आव त तनी तोहरे खातिर ठेकुआ बना दिहिं बुचिया... तनी से चूरा-मोमफली मंगा दे भूंज देहीं । पाहुन के पसंद ह नू ।"
फुआ मगन । रात बारह बजे ले जाग के ठेकुआ बनवली, चूरा भूँजलिं । बुचिया से बतियावत-बतियावत लगे कि बिहान कर दिहन । बुचिया दिन भर क खटल ऊंघाय अउर फुआ से कहें-
"तनी देर सूत रहऽ फुआ बिहाने जाये के बा ।"
"त कवन गड़िया में पहाड़ तोरे के हऽ बुचिया सुतहीं के नू बा ।" बुचिया ऊंघाय और फुआ बतियावस । बुचिया के ना रह गइल त कहलिन-
"जा फुआ नाही त ट्रेनवा में ऊंघाय लगबू अउर स्टेशन आई त पता ना लग पायी । गाँवे उतरे से पहिरे कहीँ अउरी... ।" बुचिया क बात सुन के फुआ घबरा गइली-
"तू सुत्ता अब हमहूँ जात बानी ।" फुआ सुते गइली बाकी उंघाई न आइल । एक बार फिर साड़ी-कपड़ा बैग में से निकललीं फिर धइली । टिकस देखस फिर बटुआ में धरस फिर निकाल के देखस फिर सम्हाल के धरस । पईसा-रूपया गिनस-धरस । करत-करत भिनुसार हो गइल । अब फुआ बुचिया के जगावे लगली ।
"उठा ये बुची । आफिस न जइबू का... ।"
रसोई गइली आ भुजिया-पराठा बनावे लगली । अपने खईली अउर परेम से बुचियो के खियवली । जाये के बेरी चंपा के हाथ प पचास क नोट ध के असीस दिहली ।
"फुआ जी भूल-चूक माफ़ करब" चंपा रोये लगली ।
"बक पागल... रोवल थोड़ी जाला । लइकन के हमरी ओरी से मिठाई खिआ दिहऽ । मरद से झगरा जन करिहऽ । नागा मत करिह नाही त हमरे बुचिया के दिक्कत हो जाइ ।" चंपा सिसक-सिसक के रोये लगली अउर सोहर के फुआ जी क गोड़ लगली ।
रस्ताभर केहू न केहू फुआ जी के मिले अउर प्रनाम करे । सब एक्के बतिया कहे-
"का ए फुआ जी, टिकस कटाइए गइल अबकी पारी नू... ।"
"का फुआ सबसे टीकट कटवाए खातिर कहले रहलू ह ।" कब्बो बुचिया खिसियाये कब्बो हँसे लागे ।
"आपन खियाल रखिह बुचिया । पाहून के हमरी ओरी से आसिर्वाद कहिह, जिया जा, जुड़ा लोग ।" बोगी के खिड़की से मुड़ी निकलले फुआ बुचिया के असीसत रहलीं ।

"फिर अइहा फुआ।" लोर पोछत बुचिया कहलीं।
"अब त मटिए आई बुचिया...जियत जिनगी में त गाँव-जवार ना छूटी।" बुचिया के छुट्टी ना मिलल एहि से फुआ के अकेले जाए के पड़ल रहे। अईसे पहिले जब कहीँ जायेके होखे त केहू न केहू उनके संगे रहे। अबकी बारी फुआ एकदम अकेले रहलीं बाकी गांवें जाये क एतना खुसी रहे कि उनके तनिको चिंता न रहे।
आराम से गोड़ फइलवले पूरा सीट छेंकले रहली।
"दादी जरा साइड होइए...।" फुआ देखलीं एगो बीस-बाइस साल क लइका उनके सामने खड़ा रहे।
"ना ई हमार सीट ह। हई देखा टिकस... बुचिया कहले रहलीं कि जबले टेशन ना आई तबले सीट छोरीहऽ जन।"
"हाँ,लेकिन बीच वाली बर्थ मेरी है तो यहीं बैठूंगा न। कहाँ जाऊँगा ?"
"हम का जानी कहाँ जइबा.. बाकी हम इहवां से हिल्लब ना।" फुआ एकदमे अड़ गइली त लइका ऊपर वाली सीट प जाके बइठ गइल।
"थोड़ा खिसकिये बैठने दीजिये।" ऐसे पहिले कि फुआ कुछ बोलस एक जनी आके लदद् से उनके गोड़ पर ढह गइली।
"अरे माई रे तोरलू हमार गोड़ ले बितलू...च्..च्..च्।" फुआ गोड़ सुहरावत, मन ही मन गरिआवत रहली कि मोबाइल क घंटी बाजे लगल। उठवलीं त ओहर से बुचिया पूछत रहलीं कि का हाल बा। फुआ कहरत-कहरत कहे लगलीं-
"एक त अदिमि आके दूसरे के सीट कब्जिया लेवेलन अउर गोड़ओ तोड़ देवेलन बुचिया। केहू के एतनो ना मोट होवे के चाही कि हवा-बतास छेंका जाय।" बुचिया फुआ के दस मिनट ले समझवली तब जाके फुआ चुपचाप खिड़की ओरी मुँह कइके बईठलीं।
"मम्मी-मम्मी कुरकुरे खरीद दो न प्लीज।"
"नहीं। चुप मारके बैठो। नुकसान करता है न..।" फुआ के बगल में बइठल मम्मी लइका के जिद कइले प पहिले त समझावे-बुझावे क कोसिस कइलीं बाकी जब ना मानल त मारे लगलीं।
"अरे मोटको सोना नियन लइका के मारत हउ। तोहार हाथ टूट जाइ..कोढ़ी हो जइबू। अपने खा-खा के हथिनी भइल बिआ हत्यारिन और लइका के सुतरी मतीन क घल्ले बिआ ।आवा बाबू.. हमरे लग्गे आवा। का खइबा हमार लाल।" फुआ बोलावत रह गइलीं बाकी लइका माई के डरे पंजरियायल ना। लइका के माई अउर फुआ में तब तक झगरा भयल जब तक कि लइका क माई माने मोटको के स्टेशन ना आ गइल। जात-जात ऊ फुआ के गरिआवत गइलीं- "बुढ़िया नरक में जाओगी..देख लेना कोई पानी को नहीं पूछेगा।"
"जो-जो आपन देख.. ढ़ोला परी तोके। जम क दूत कच्चे चबाई जइहन स।"
मोटको के रहले झगरा जरूर रहल बाकी फुआ के मनसायनों रहल। कुछ देर चुपचाप बईठलिन फिर ठेकुआ खा के पानी पियल चहलीं त पता लगल बोतल क ढक्कन खुल गइले से कुल पानी गिर गइल रहे। पानी खातिर सबकर निहोरा कइलीं बाकी केहू पानी लावे खातिर तइयार ना भयल। उनकर कंठ सुखा गईल। लागल खाँसी आवे त पानी क बोतल उनके सामने कइले उहे लइकवा ठाढ़ रहे जउने के भगवले रहलीं। पानी पी के फुआ क आत्मा जुड़ा गइल।
"आव बइठ बचवा...कहाँ घर पड़ेला तोहार।"
"कानपुर।"
"ई कनवा में का खोंसले बाड़ऽ ?"
"इयरफोन..गाना सुनते हैं..।"
"भजन के कि फिलिम के ?"
"सब।"
"हमरो नाती कुल दिनवा भर तोहरे नियन कनवा में खोंसले घुम्मत रहेलन स।
"कहाँ जात बाड़ऽ ?"
"दिल्ली।"
"का करे?"
"इंटरव्यू देने"
"बियाह भईल बा तोहार?"
"नहीं ,लिव इन में रहता हूँ।" लइका अब पूरा मज़ाक के मूड में आ गइल रहे।
"माने।"
"बिना शादी के साथ रहते हैं।"
"अरे दीनानाथ ! त रखनी रखले बाड़ऽऽ..।" फुआ आँख-फाड़ लइका ओरी निरखे लगलीं ।लइका ठठा के हँसत रहे।
"कवने जात क हव ?"
"श्रीवास्तव ।"
"लाला हव तू त। हमरे गाँवे तोहरे लायक एक जनी के लइकी बियाह जोग बाड़ी। कहऽ त बात चलायीं।"

www.bhojpurisahityangan.com

" बिलकुल। नेकी और पूछ-पूछ।"
"रखनिया के छोड़ देबऽ नू ?"
"हाँ। पक्का..श्योर-श्योर।"
एतने में फुआ के स्टेशन आ गइल। लइका जिनकर बियाह के जिम्मा ले ले रहली उनकर झोरा ले-ले उनका के सकुसल स्टेशन पर उतार दिहलस। नमस्ते क के जब ऊ चले लगल त सौ के नोट उनके मुट्ठी में फुआ थमावे लगली।
"नहीं-नहीं यह सब नहीं..मैं पैसा नहीं लूँगा।"
"हमार प्रान सुखात रहे ओह घरी तू हमके तरला..ए बचवा हमरे नाती नियन हव.. मना जन करऽ।"
फुआ आँसु पोछत चलल जात रहलीं, अउर अपने सीट पर वापिस आके लइका सौ क नोट निहारत उदास बइठ गइल।
स्टेशन पर उतर के फुआ एतना खुश भइली कि लागे रो दीहें। एहर-ओहर अइसे तांकें जैसे कौनों भटकल-भुलाईल लइका के अपने घरे क रस्ता देखा गइल होखे।
"अरे हे साहू ! का बेचत बाड़ऽ बचवा।"
"अरे फुआ आप! परनाम-परनाम।अरे फुआ कहवां गइल रहलीं ह जी, रवा बिना घर-दुआर उदास होइ गयल रहल ह।"
"बुचिया इहाँ नू गइल रहलीं ह हो। आपन बतावा मजे में बाड़ऽ नू..का ले ले बाड़ऽ।"
"आम ह फुआ।"
"कवन, लंगड़ा हउए कि दसहरी?"
"चौसा ह फुआ अउर एक- डेढ़ किलो ले तोतापरी हउए।"
"कइसे किलो ह?"
"इहे पचास-साठ रुपैया...।" साहू अबही अउरी कुछ बोलें कि फुआ खुनसाए लगलीं।
"का रे सहुआ गाँवों-घरे के इदमी के ठगबे..।"
"ठीक बा फुआ तोहरे खातिर पैंतालीस रुपिया..।"
"तोहार मुँह फूँको पाँच-दस रुपिया में राजा हो जइबे ?"
"अब एक्को पइसा कम ना होइ फुआ जी..हमरो बाल-बच्चा हउवन। रवा लोगन से ना कमाई त केसे कमाईल जाई।" सहुआ हाथ-पैर जोरे लागल बाकिर फुआ टस से मस ना भइली।
"ठीक बाटे त रवा खातिर तीस रुपिया..अब कम ना होई फुआ..राउर परजा हई जा हमनी के।"
"ठीक ह। चल तउल।"
"एक पसेरी कि दू पसेरी?"
"पाव भर।"
"आँय,का फुआ काहें मजाक करत हउ केतना चढ़ी पावभर में।"
"चार-पाँच गो चढ़ा दे।"
"त एक किलो हो जाइ..।"साहू परेसान हो गइलन।
"कहत हई कि पावभर में पाँच गो चढाव त पांच गो चढ़ाव।" फुआ जिदिया गइलीं। साहू कसमसाय के रह गइलन बाकि पाँच गो आम तउल के देवे के पड़ल।
अब जउने दुकाने प फुआ जांय उहे उनके देख के थरथराय। अबही फुआ मोल-भाव करते रहलीं कि कतवारू दौरल अइलन।
"अरे फुआ कब चहुँप गइल ह गड़िया। लागत बा बिच्चे में कउनो चैनपुलिंग ना कइलन ह स ससुरा नाहीं त गँउवे ओरी रुक जाइत..।"
"अबही के अइले ह मुंहफुकना.. मर गइल रहले ह ? केतना देरी से टेसने प बौंडीयात बानी..उफ्फर पड़ी तोरा... पिलुआ..।"
"आछा चलीं नाही त बसिया छूट जाई फुआ।"
कतवारू के गारी-फक्कड़ देत फुआ बस में बइठली। बस में गाना बजत रहे-'आय हाय हो बाबू दरोगा जी..कउने गुनहइया पियवा बन्हला मोर..बाबू दरोगा जी।
" ई कइसन गाना बाजत बा हो..कपार दुखा गइल। बन करऽ लोग।"
फुआ खूब खुनसायें बाकिर गाना बंद ना भइल।
"ए फुआ तोहार गाना सुने क उमर बीतल। भजन सुनऽ भजन । हमहन के गुड्डू रंगीला क फैन हई जा। तू केकर हउ हो फुआ....?" कंडक्टर हँसे अउर फुआ के चिढ़ावे।
"चिड़कवनिया बनवले बाड़ऽ जा । हँसऽ जा हँसऽ जा। उमरिया सबकर एक दिन आवेला भजन सुने के..।"
फुआ जेतने कऊंचे ओतने सब हंसे लागे। फुआ एहिकुल में अझुरायल देखबे ना कइलीं कि उनका से दू सीट आगे घुँघुट कढ़ले एगो दुल्हिन बइठल रहे। केहुतरे सबके कूचत-कांचत फुआ दुल्हिन किहाँ पहुँच गइली।
"केकरे घरे क पतोह हऊ बचिया?" दुल्हिन चुप।
"कउने गाँवे जात हउ?" एनो पारी दुल्हिन कुछ ना बोललीं। फुआ नइहर-ससुरे सब पूछ घललीं बाकिर दुलही मुड़ियो ना हिलावें।
"ना बोली फुआ, ना बोली...गूंग-बहिर हिय।" पीछे से केहू बोललस अउर पूरा बस ठहाका से गूँज उठल।
"साँचो हो बचिया?" फुआ अब बेकल हो गइलीं। अबकी बारी दुल्हिन ना में मुड़ी हिलवली। फुआ मगन।
"तनी मुहवा देखावऽ त बचिया?"
"मत देखा फुआ चुरइन हिय...राती में लागे लागी।" एना पारी सबके संगे-संगे दुल्हियो हँसे लागल।
"तोहार हँसी सुनके जियरा जुड़ा गइल बचिया।"
"त ले ले जा न फुआ इनका अपने संगे हमरो बवाल छूटी... जियरा जुड़ा जाइ।"
"के ह रे मरकिरवना...कब्बे ले अऊँजवले बाड़े।"
"दुल्हिया क पति परमेस्सर हउवन फुआ बाकिर पुजइया पीठ प दुई सोंटा मार के होला...ह नू भउजी। ठीक कहत हई कि ना?" बस ड्राइवर मज़ाक कइलन।
"बस चलाव-बस.. ढ़ेर कउंचाव जन नाही त ठीक ना होइ जनले।"
"चलवते नू हई फुआ... लऽ तोहार गाँव आ गइल। सम्हाल के ले जईहे रे कतवरुआ फुआ के। परनाम हो फुआ।"
" खुस रहऽ बचवा, जिया लोग।"
फुआ दुल्हिन के अँचरा में दुई गो आम मुँह दिखाई ध के असीस दिहली। बस से उतरत घरी फुआ के आँख भर आइल। डीह बाबा लउके लागल रहलन।

पुण्यतिथी

# माटी के लाल राजेंदर बाबु

राजेश पाण्डेय

**जन्म - 3 दिसम्बर 1884**

**मृत्यु-28 फरवरी 1963**

सीवान शहर से पश्चिम दू कोस दूर जीरादेई गाँव बसल बा। एइजा गईला पर अईसन बुझाला कि उंहा के घरवा से अब निकलके आवते बानी। बड़ा ही गजबे के सिहरन देहि में पैदा हो जाला, एह धरती पर आके।

डॉ० राजेंद्र बाबु के नाम आवते एगो अईसन व्यक्ति के तस्वीर सामने आवेला जे त्याग के मूर्ति रहले। एगो सादगी पसन्न आदमी उ व्यक्ति जे देश के सबसे बड़ पद के दू बार शोभा बढ़वले। एगो अईसन आदमी जे अपना मति से लगाव, बोली-बानी से प्रेम करके सिखवले। उहे व्यक्ति जे कई देशन के संविधान के मथ के आपन देश खातिर मोती जईसन संविधान दिहलस। उंहा के हमेशा राजभाषा हिंदी आ मातृभाषा भोजपुरी के जोरदार वकालत कईले बानी।

एगो उ आदमी जेकर कुशाग्र बुद्धि इतना रहे कि उंहा के उत्तर के जाँच करेवाला कहनी की हमरा से निमन त परीक्षा देवे वाला बा। एगो उ आदमी जवन हमेशा गांव के सादगी सहकारिता, आपन गोड़ पर खड़ा होखे वाला समाज पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलत आवत सामाजिक आउर धार्मिक रीति-रिवाज के वकालत कईनी।

उहाँ के बी०ए० के डिग्री देत समय कलकता विश्वविद्यालय के कुलपति कहनी की देश के उंच से उंच पद राजेंद्र जी के गोड़ पर लोटी। भोजपुरी के प्रति उहाँ के प्रेम बेजोड़ रहे, एह जवार के केहू चल जाव त उहाँ के एही भाषा में बतियावत रही। 1922 में छपल उँहा के हिंदी में लिखल पहिला किताब "चम्पारण में गाँधी" काफी नाम कमईलस।

उहों के नाम, मान-सम्मान एतना रहे की उंहा के भारतीय राजनीती के अजातशत्रु कहात रहीं। उंहा के पुण्यतिथी प भोजपुरी माटी के लाल राजेंद्र बाबु के कोटी-कोटी प्रणाम बा।

www.bhojpurisahityangan.com

# दिल जब बच्चा था जी

बृजकिशोर तिवारी

लेखक आपन लईकाईं के किस्सा से रवा सभे खूब परिचित बानी। एक से एक बदमासी के किस्सा लेखक के बचपन से निकलल। एही कड़ी में लेखक के नया बदमासी से परिचय करीं :

बचपने के बात ह। हमार मामा चार भाई लोग ह, ओह में हमार माई एकही बहिन। आ चारो मामा खाति, ओह घरी ले हम एकलौता "भगिना"। हमार बहुत मान दान रहे उंहवा। चारो भाई में तीन भाई त रुपिया पईसा ले टाठ बा लोग बाकी एगो मामा के पोजीसन तीनो भाईयन से तनी कमजोर बा, उनकर नाव ह-बब्बन।

उहे मामा, केहू तरे तीन-पाँच कई के पक्का के मकान बनवा लिहलन। मकान त केहू तरे बन गईल आ अब गृह-प्रवेश के कार्यक्रम के तैयारी होखे के रहे। ओही घरी हमनी के छुट्टी में घरे (गाँवे) आईल रहीं जा। भईल कि जब ममहरा गृह-प्रवेश होत बा, त ओहिजे चलल जाव।हमहूँ मामा गाँव आ गईनी। मामा, जोड़-तोड़ के घरवा नीके बना लेले रहलन, बाउंडरी भी खींचा गईल रहे। बस एगो कमी रहे अभी ओह में गेट ना लागल रहे। मामा कहलें- बढ़िया साईत बा, पहिले गृह-प्रवेश हो जाव, गेट-सेट त बादो में लागत रही।

दूई-चार महिना पहिले एगो दुसर मामा के लईका के बियाह रहे। उनकर नाव रहे- छोटन। उ मामा, रिसेप्सन में बड़ा बरियार बेवस्था कईले रहलन।

अब इंहवा उहे बात उठल कि गृह-प्रवेश के बेवस्थो ओही तरे टाईट होखे के चाहीं। कहे के त, सभे कह देवो, बाकी जेकरा बेवस्था बनावे के रहे (हमार मामा) उ त मकाने बनावे में लेझरा गईल रहलन। उ ओतना झकाश बेवस्था करस त कईसे करस ? इज्जतो, के बात रहे। बढ़िया-बढ़िया घरे, खान खियान बा। लोग आई त का कही ?

एही में, जब कोई "बब्बन मामा" से कहो कि- देखिहा बब्बन, खाए पिए के बेवस्था "छोटन" लेखा रहो। "बब्बन मामा" ,एही बाती पर पिरिक (पिनिक ) जास।

हाँ हाँ ... हमरो घरे कौनो "छोटन" लेखा रूपया के पेड़ लागल बा ? उ त बड़का नौकरी करेलन आ उनकर त रिसेप्सन रहल ह। जेतना खियावे में, लगवले ना ओह ले तेबरी-चौबरी त उनका के गिफ्ट आ रुपिया भेटा गईल रहे। हमरा के, गृह-प्रवेश में कौनो रूपया मिले के बा ?

ना,ना! हमरा, बस के नईखे ओयिसन बेवस्था कईल। हम सादा-सपाटा बेवस्था राखब। पईसा बिना हमार बाउंडरी में गेट ना लागल आ तोहन लोग के हरियरी लउकऽता। मामा, एही तरे बेवस्था के नाव पर बड़बड़ास।

हमहू त चहुंप गईल रहनी ओहिजा। .

एक दिन "बब्बन मामा" के सन्घे सांझी खा घुमे निकलनी। कहनी- मामा जी, इतना काहे परेशान बानी ? गृह-प्रवेश के लेई के ! भगिना, चुप ना रहबऽ ... तुहू, उहे बात उठऽवला। मुस्किया के कहनी-हमार बात त सुनीं। कहऽ का काहे के बा ?

इ बतायीं मामा जी जदी गृह-प्रवेश के खर्चा, गृह-प्रवेश में ही निकल जाव तब ?

मामा जी के चरण में, झटका वाला बरेक लाग गईल कहनी- का मतलब ?

पहिले हाँ आ ना बतायीं।

देखऽ भगिना, तू हव खुरफाती। कुछ उंच-नीच हो जाई तऽ ? हम हाँ कईसे कह दीं ? पहिले बात का बा, इ बतावऽ ?

मामा के हम आपन बात समझवनी त मामा के चेहरा पर 1000 वाट के बलब के लाईट आ गईल। फेरु त, मामा जी जोर शोर से गृह-प्रवेश के बेवस्था में लाग गईनी। फेर-फेर जाके, "छोटन मामा" ले पूछी- भईया, हउ रेसेप्सनवा वाला बेवस्था करे खातिर कहाँ कहाँ जाए के पड़ी ? (माने कहाँ का मिली) सभे हैरान !

"बब्बन" में गृह-प्रवेश खातिर एतना बदलाव कहाँ ले आ गईल ?

मामा गृह-प्रवेश के खान खियान के सामान बेवस्था में लाग गईलन। हमरो

के काम मिल गईल रहे। कारड ( कार्ड ) छपवावे खातिर आ अपना खातिर एगो बढ़ियाँ बुशर्ट-पैंट ख़रीदे के। कारड के मजमून हमरा के लिखवावे के रहे। प्रिंटिंग प्रेस में कई बार काट-छाट कई के, असली मजमून बहरी आईल।

**ईश्वर के असीम अनुकम्पा से हमार नयका घर के गृह-प्रवेश (वास्तु पूजा) दिनांक..... दिन..... के सुनिश्चित भईल बा। अपार हर्ष के बात इहो बा कि हमार एकलौता भगिना बाबू बृजकिशोर के जनमदिनो एही दिन के बा।**

**रउवा सभे से अनुरोध बा कि एह दुनो कार्यक्रम में भाग लेके हमरा के अनुगृहित करीं।**

**दिनांक......दिन.....**
**कार्यक्रम रउवा सभे के आवे तक**

**प्रेषक-बब्बन दुबे**

फेरु का, नियत समय पर गृह-प्रवेश के कार्यक्रम ख़तम भईल। हमहूँ नयका कपड़ा पहिन के, टिका लगा के "जन्मदिन के केक" काट दिहनी। जेतना लिफाफा में "जन्मदिन के गिफ्ट" के पईसा आईल मामा जी के खलयिती (पाकेट) में गईल आ नजदिकिया हित नात लोग से, दू-चार गो कपड़ा हमरो के मिलल। सब बितला के दुई दिन बाद एगो दूर के मौसी हमार माई ले पुछली- दीदी, हमार लईका आ राउर लईका इ दुनो त "फागुन" में के हऽ लोग। खाली साल के अंतर रहल ह। आ अभी त "जेठ के महीना" चलत बा। बाबू के जन्मदिन अभी कईसे ?

# बृजकिशोर तिवारी

पलामू झारखंड के रहे वाला बृजकिशोर तिवारी जी एह समय शक्तिनगर सोनभद्र मे कार्यरत बानी। भोजपुरी मे हास्य व्यंग्य के रचना इँहा के एगो अलग आ उंच पहचान बनावेला। आखर पेज से जुड़ल बृजकिशोर जी भोजपुरी मे लगातार रचना कई रहल बानी भोजपुरी मे लिख रहल बानी।

माई हँसी के कहली- जाके हउ "बब्बन" आ "बाबू" से पूछऽ मौसी के समझवनी दादा। अरे मौसी साटिकफिटिक में उहे तारीख बा। झट दे बात फेर के मौसी ले पूछनी- इ बतावऽ खान-पान के बेवस्था कईसन रहे बब्बन मामा के ?

मौसी कहनी- अरे खान-पान तऽ टार दिहल छोटनों के।हाँ, मौसी खान-पान देखल जाला ढेर ना सोचे के। केहू तरे मौसी ले जान छूटल। ना त सब गुर माटी कई दिहिती उ तऽ !

मामा गाँव ढेर दुरिहा ना रहे। अपना गाँवे आके 20 दिन बाद फेरु गईनी मामा गाँव। देखनी कि बब्बन मामा बाउंडरी में "गेट" लगवावत रहलन ह। हंसी के कहलन – भगिना ! बाउड्री के "गेट" बने भर दाम, लिफफवा में रहल हऽ... हा हा हा !!!





www.bhojpurisahityangan.com

# काका के शर्त

मनोज कुमार

बूझन काका के कवनो चीज के कमी ना रहे, बाकिर शुरूये से उनकर सुभाव कम से कम खरच करे वाला बनल रहे जेसे सभे केहू उनका के काका कंजूस आ मक्खीचूस जइसन उपाधि दे देले रहे।

बसंत पंचमी!

एह दिन गांव के चौपाल पे हर साल लइका लोगन के तरफ से जोर-शोर से सरसती पूजा के आयोजन होखत रहे। अबकि बेर भी पहिले लेखा ही पूजा करे के निर्णय भइल रहे। एह आयोजन खाति का लइकन सभे के उत्साह देखते बने। बीस दिन पहिले से ही तइयारी होखे लागल रहे। शहर के प्रेस से पूजा खाति चंदा मांगे वाला रसीद किना के आ गइल रहे। लइका लोग रोज सुबेरे-शाम पीअर रंग के रसीद लेके चंदा तसीले खातिर गांव भर में दूआरे-दूआरे घूमें। कुछ लइका लोग शहर जाये वाला रोड पे राहगीर आ सवारी गाड़ी रोक के भी ड्राइवर लोगन से चंदा इकट्ठा करत रहलें।

एक दिन भोरहीं कुछ लइकन के झूंड बूझन काका के दुआर पर चंहुपल। बूझन काका गांव भर में अपना कंजूसी खाति मशहूर रहलें। एह से लइका लोग उनका के 'कंजूस काका' के नावं से भी पुकारें। लइकन में से केहू कहत रहे-''सारा गांव जानेला, बूझन काका तनी मनी छोट कंजूस नइखन। चंदा देहे के नावं पर उनकर गांठ तनको ढील ना होखेला।''

''बड़का मक्खीचूस बाड़ें।'' महेश कहलस-''पिछला हालि एक सौ एकावन रूपिया के रसीद दिआइल रहे त एगारे गो रूपिया देले रहलें।''

''आ उपदेश सुनावेलें से अलग...।'' भरत कहलस।

''अबकि बेर उनका के आसानी से ना छोड़ल जाई।'' गोपी जेकर हाथ में चंदा काटे के रसीद रहे, कहलस-''उनका से चंदा ले के रहे के बा। दू सौ एकावन से एक्को पइसा कम ना।''

''इहो एगो अजूबा बात हो जाई!'' अजइया कहत रहे-''बूझन काका! आ दू सौ एकावन रूपया! कबो संभव नइखे।''

''तहनी के खाली देखत रह जा।'' गोपी कहलस।

बूझन काका गांव में अकेले रहत रहलें। मेहरारू दस बरस पहिले परलोक सिधार गइल रहली। एगो लइका रहे जे पिछला कई साल से दिल्ली शहर में रह के पढ़ाई करत रहे। गांव में उनकर अच्छा खासा खेती-बाड़ी रहे जेसे उनका के कवनो चीज के कमी ना रहे, बाकिर शुरूये से उनकर सुभाव कम से कम खरच करे वाला बनल रहे जेसे सभे केहू उनका के काका कंजूस आ मक्खीचूस जइसन उपाधि दे देले रहे।

कोठरी के दरवाजा खुलल त बूझन काका बाहर निकललें। पचास बरिस से बेसी के उमर हो गइल रहे। देह पर खद्दर के कुर्ता-पाजामा आ माथा पर गमछा के मुरेठा बंधाइल रहे। हाथ में एगो कुदारी लेले रहलें।

फोटो: शशि रंजन

''का बूझन काका? सबेरे-सबेरे कहां के तइयारी होखे लागल?'' गोपी पूछलस।

''खेत पे जाये के तइयारी होता बिटवा। अउर कहवां जाइल जाई?'' बूझन काका कहलें।

''हमनी सब सरसती पूजा के चंदा मांगे आइल बानी जा।''

''हूँ। बुझाता एहू साल पूजा होखे जा रहल बा।''

''हाँ काका। पूजा धुमधाम से कइल जाई। एही खाति चंदा मांगल जाता।''

''नीमन बात ह। केतना के रसीद कटले बाड़?'' बूझन काका पूछलें। गोपी कहलस-''बस काका, दू सौ एकावने रूपया के रसीद कटाइल हवे।''

बूझन काका चुपा गइलें। सभे केहू के बुझाइल कि अबे ऊ नाक-भौं सिकोड़ के चार गो उपदेश सुनइहें आ ना-नुकुर करत भीतरी जा के एगारे गो रूपिया ला के दिहें। जबकि अइसन ना भइल आ ऊ कुछ बदलल स्वर में पूछलें-''पूजा के काथि-काथि तइयारी भइल हवे?''

सुन के सभे केहू के घोर आश्चर्य भइल। सब एक-दूसरा के मुंह ताके लगलें

। काहे से कि अइसन बात कबो केहू ना पूछे। चंदा के नावं पे लोग ना-नुकुर कर के कुछ दे के आ आपन पिंड छुड़ा लेत रहलें। पूजा के पूरा कार भार लइके लोग संभाले।

गोपी बतवलस-''मूर्ति के बयाना दिया गइल बा। बंगाली मिस्तरी दू हजार ले लें, बाकिर हमनी के कहनी ह कि लइकन के पूजा ह एह से डेढ़ हजार से ज्यादे हमनी के ना दे सकब।''

''आ तहनी के ऊ बड़का गो बाजा...ओ के काथी कहेलऽ जा?'' बूझन काका पूछलें।

''डीजे।'' अजइया कहलस।

''हां, ऊ त जरूरे बंधाइल होई?''

''ओकर बयाना त पहिलहियें दिया चुकल बा। बड़का डीजे आई।''

''आ ओपर खूब फूहर-फूहर गीत बजइबऽ जा।'' बूझन काका के ई बात पे लइकन के बीच सन्नाटा पसर गइल।

''ना काका।'' गोपी बात के संभारे के कोशिश कइलें-''अइसन बात नइखे। हमनी के कबो फूहर गीत ना बजावेनी जा।''

''तहनी के सरसती माई के पूजा करेलऽ विद्या खाति कि मजा लेहे खाति? पूजा शांत मन से भक्ति भाव से करे वाला चीझू ह कि शोर शराबा क के, माइक पर फूहर गीत-गाना बजा के आ हुडदंग मचा के कइल जाला? तहनी के एही के पूजा मानेलऽ जा?''

''काका, हमनी के अइसन कबो ना करेनी जा।'' अबकि हाली भरत कहलें।

''हम तहनी के एगो कहानी सुनाव तानी। खटिया पर सभे केहू बइठ जा।'' बूझन काका दुआर पर खटिया बिछावत कहलें।

''काका, हमनी के अभी कई घरे चंदा मांगे जाये के बा।'' गोपी हालि से कहलें-''कहानी फेनु कबो सुन लिहल जाई। रउओ के जे देहे के बा दे दीं त हमनी के जाइल जाव।''

लइकन के ई बात के भय रहे कि अगर बूझन काका खटिया पर बिठा लिहें त फेनु आपन उपदेश झारे लगिहें। सभे केहू के माथा उधियाये लागी आ आखिर में कुछो भेंटइबो ना करी। चंदा के नावं पर इहां से ठन-ठन गोपाल ही जाये के पड़ी।

''पहिले बात त सुन ल। घबरात काहे बाड़ जा!'' बूझन काका कहलें आ सभे केहू के निहोरा क के खटिया पे बिठा लिहलें।

अनमना के सभे केहू के बइठे के पड़ल। अब लइकन के मंडली के इ फिकर रहे कि इहां केतना देर बइठ के माथा चटाये के पड़ी?

बूझन काका एगो दूसर खाट बिछा के बैठ गइलें। कहलें-''देख! नया जमाना के एगो लमहर भक्तराज रहलें। ऊ सरसतिये पूजा में ना बलुक दूर्गा पूजा, काली पूजा सभे में आपन भक्ति के जोश देखावें। पूजा के बाद मूर्ति के जब भसान होखे जास त ऊ जम के नाचे गायें आ हुल्लड़ डांस करे।''

लइका लोग चुपचाप बूझन काका के बात सुनत रहलें। ऊ आगे कहलें-''एक हाली के बात हवे। भक्तराज एक हाली नाव से नदी पार करत रहलंे। संजोग अइसन भइल कि बीच नदी में जाके नाव पलट गइल। भक्त महाराज डूबे लगलें। डूबे के बेरा ऊ मदद खाति चिल्लाये लगलें।

# मनोज कुमार

वाल्मिकी नगर , बिहार के रहे वाला मनोज कुमार जी , आखर से शुरु से ही जुड़ल बानी । पेशा से अध्यापक , कार्टुनिस्ट आ साहित्यकार मनोज कुमार जी भोजपुरी कार्टुन आ हिन्दी मे बाल साहित्य खाति जानल जानी । वर्तमान मे मनोज जी मोतिहारी बिहार मे रह रहल बानी।

कबो सरसती माई, कबो दूर्गा माई, कबो काली माई के नावं लेके पुकार लगवलें।''

''फेरू का भइल?'' महेश पूछलस।

''फेरू का होई। भक्त के मदद खाति सरसती माई, दुर्गा माई, काली माई सभे चंहुप गइली।''

''आगे....?'' अजइया मुंह बइले पूछलस।

''आगे का होखे के रहे! तीनों माई लोग ओकरा अगवा आके लगली नाचे-गाये।''

''नाये-गाये ?''

''हां।'' काका कहलें-''तब भक्त महाराज पूछलें कि हे माई, हम तहार एतना भक्ति करेनी आ आज डूब तानी त तहनी के नाच ताड़ू जा! हम के बचावत काहे नइखू? त माई कहली कि याद करऽ, तूं हमनी के भसान में के तरे नाचेलऽ। ओही से हमनियों के नाच रहल बानी जा।'' एतना कहके बूझन काका हंसे लगले।

''इ त हंसी खाति एगो कहानी हवे। अइसन कहीं होखेला?'' लइकन में से एक जना कहल।

''हर कहानी कुछ सनेस देला।'' काका कहलें-''अब ई हमनी के ऊपर बा कि हम ओके के तरे लेहेनी? कुछ बुझलऽ कि ना?''

''राउर बात बूझल आसान नइखे, काका।'' गोपी कहलें-''हई लीं दू सौ एकावन रूपया के रसीद। अब हमनी के दूसर घरे चलल जाई।''

''हमार बात अभी पूरा नइखे भइल।'' बूझन काका कहलें-''हम तहनी के पूजा करे से कबो मना नइखीं करत। बाकि जवन काम गलत होखे ओकर विरोध जरूर करेनी। हम तहनी के पूजा में भी साथ देहब, बाकिर हमार एगो शर्त बा।''

''कइसन शर्त ?''

''तहनी के हमार कुछ बात माने के पड़ी। हम तहनी के पूजा के पूरा खर्च उठाये खाति तइयार बानी।''

एतना देर में इ एगो नया बात सुने के मिलल रहे। लइकन सभे अचकचा के एक-दूसरा के मुंह ताके लगलें।

‘‘काका, भोरे-भोरे मजाक करे खाति हमनियें के भेंटाइल हईं का?’’ गोपी के मुंह से निकलल।

‘‘हम मजाक नइखीं करत। सांच कहत हईं।’’ बूझन काका कहलें।

‘‘बाकि पूजा में त ढेर खर्चा होखेला। देखत नइख कि मंहगाई केतना बढ़ गइल बा? पूरा गांव से चंदा तसीलाला। तबो खर्चा पूरा ना पड़ेला आ उधार चढ़ जाला।’’

‘‘मनमाना ढंग से एने ओने फिजूलखर्ची करब त अइसने होई। मरजादा में रह के कवनो कार करब त जस भी मिली आ माई के आशीर्वाद भी। नवका लइका लोग में कुछु करे के जोश त खूब होला बाकि सही-गलत पहिचाने के होश ना रहेला।’’

‘‘हमनी के जवन सही बुझाला काका, उहे करे के कोशिश करेनी जा। जान-बूझ के केहू गलत कार ना करे के चाहेला?’’

‘‘नया उमिर में जोश होला। इ उर्जा बड़हन से बड़हन कार भी कर सकेला।’’ काका कहलें-‘‘बाकिर एकर नियंत्रण भी ओतने जरूरी ह। अगर ई ऊर्जा गलत दिशा मंे आगे बढ़ी त कवनो समाज खाति ठीक ना होई। तहनी के हमार बात मंजूर होखे त हमरा नावं पे पांच हजार एक रूपिया चंदा लिख ल जा।’’

‘‘प-पांच हजार...एक...रूपिया...?’’ गोपी हकबका गइलें।

‘‘हाँ। कम पड़ी त अउरो भी मिल जाई।’’

‘‘काका, राउर शर्त का हवे?’’ सभे लइका कुल्ही संभल के बइठ गइलें। पांच हजार त दूर, अबले गांव में केहू पांच सौ रूपिया भी एकमुश्त ना देले रहे। एतना रूपया में त पूरा पूजा ठाट से निपट जाई।

बूझन काका लइकन खाति जइसे आज अबूझ पहेली बन गइल रहलें। केहू के आपन कान पर विश्वास ना होखत रहे। ऊ कहलें-‘‘हमार शर्त एकदम साधारण हवे। पूजा कवनो मनोरजंन आ आडंबर के चीज ना ह। तहनी के रोड पर आवे जाये वाला हर राहगीर आ सवारी गाड़ी के रोक के चंदा वसूले के कार बंद करे के पड़ी। एह से आपन इलाका के बदनामी होखेला। चंदा राजी खुशी से मिले वाला चीज ह, जबरन वसूली से ना।’’

‘‘जब रउआ पूरा खर्च दे रहल बानी काका, त अउर केहू से चंदा लेहे के जरूरते कहां पड़ी अब?’’ गोपी कहलें-‘‘उ सब त पइसा कम पड़ जाला त मजबूरी में करे के पड़ेला।’’

***‘‘आ दूसर बात, पूजा में शोर-शराबा जइसन प्रदूषण आ हाला-हुड़दंग करे के जरूरत नइखे। आपन पर्यावरण के देखभाल आ सुरक्षा के जिम्मेदारी अब नवका पीढ़ी पर ही बा। हम बाजा बजावे से मना नइखी करत बाकिर जे बजे ऊ मन के सुकून देहे वाला धार्मिक गीत-संगीत होखे के चाहीं। भक्ति के नावं पे दूअर्थी फूहर आ अश्लील गीत ना बाजे के चाहीं। बल्कि आज अइसन गीतन के बहिष्कार करे के जरूरत बा जे हमनी के भाषा, समाज आ संस्कार में जहर घोल रहल बा।’’***

‘‘हमनी के मंजूर बा।’’ सभे एक साथ कहलें।

‘‘इ पूजा खाली लइकन के ना बलुक पूरा गांव जवार के होईं। सभे केहू एमे शामिल होई। गांव के बड़-बुजूर्ग से लेके बहू-बेटी ले सब कोई। केहू के साथ कवनो भेदभाव ना होखे के चाहीं। सब केहू के सम्मान देहे के होई। अगर माई-बहिन के सम्मान ना मिलल त सरसती माई के कइसन पूजा? कइसन सम्मान? कुछ बूझलऽ कि ना?’’

‘‘रउआ निश्चिंत रहीं, काका।’’ गोपी जे लइकन के ऊ दल के मुखिया रहलें, बूझन काका के भरोसा दिला के कहलें-‘‘हमनी के पहिले रउआ के सही से कबो ना बूझ पवनी जा। बाकिर राउर सगरी बात हमनी के अब बुझा गइल बा। जवन रउआ कहत बानी ऊ त हमनियों कुल्ही चाहेनी जा। बाकिर माथ पर रउआ लेखा कवनो बड-बुजूर्ग अभिभावक के हाथ ना रहला से तनिक ऊंच-नीच हो जाला। अइसन अब से ना होई। राउर सगरी बात के हमनी के खुशी-खुशी पालन करब जा। हम विश्वास दिलावत हईं कि रउआ के शिकायत के कवनो मौका ना मिली।’’

‘‘हम इहे सुने के चाहत रहनी।’’ बूझन काका कहलें-‘‘त जा। आ जा के पूजा के तइयारी कर। खर्चा के कवनो परवाह ना करिह।’’

‘‘रउआ के बहुत-बहुत धन्यवाद, काका।’’ जाये से पहिले गोपी पूछलें-‘‘बाकिर हम एक बात ना बूझ पवनी ह कि रउआ कवन खुशी में हई सब कर रहल बानी? पहिले त रउआ अइसन ना रहनी?’’

‘‘अब जब पूछत बाड़ त बताये में कवनो हर्ज नइखे।’’ बूझन काका मुस्करा के कहलें-‘‘दिल्ली में हमार लइका पढ़त रहलें। ओकर पढ़ाई के खर्च बहुत ज्यादा रहे, एह से हम कम से कम खर्चा में हियां आपन कार चलावत रहनी। बाकि पइसा ओकरा लगे भेज देत रहनी। सरसती माई के किरपा से अबकि बेर ऊ सिविल सर्विस के कम्पटिशन में पास कर गइल बाड़ें आ अब बड़का अफसर बने जा रहल बाड़ें।’’

‘‘वाह काका। इ त बहुत खुशी के बात ह।’’ सभे केहू बूझन काका के बधाई देहे लागल। तब ऊ आपन मन के बात कहलें-‘‘अब हमरा पर कवनो विशेष जिम्मेदारी ना रहल। आपन गांव में इस्कूल नइखे। ओ खाति हम आपन जमीन मे से कुछ हिस्सा दान करे जा रहल बानी जेसे गांव के लइकन के शिक्षा खाति दूर ना जाये के पड़े। आखिर शिक्षा से ही समाज के विकास संभव बा। सरसती माई के आशीर्वाद सबके मिले!’’

आज लइका लोगन के चेहरा पे बूझन काका के प्रति एगो नया आदर के भाव लउकत रहे।

# जातीय गर्व आ श्रेष्ठता

मनोरमा सिंह

> गांव से परिचित लोग के मालूम होई कि कवनों गांव में दक्खिन टोला दलित लोग के बस्ती होला।

पूस महीना बीत चुकल बा बाकी जाड़ा माघ के पियरई संगे शीतलहरी में लिपट के अबही जाए के तैयार नईखे। मां से पूछनी ठंन्ढ़ा बढ़ गईल बा नू ? देखअ बंसतपंचमी आवे के बा आ सुनतानी फुल सुईटर बाहरे बा अबले तहन-लोग के। मां कहली जाए द, दू हफ्ता भी जाड़ ना पड़ी त गहुं में बाल कईसे धरी,दाना कईसे गोटाई? गृहस्थ के जान में जान आ गईल होई इ लौटल जाड़ से। मां रांची से बोलत रहुवी,हम बंगलोर में सुनत रहनी आ मन गहुं के हरियर हरियर खेत, सरसों के पियर पियर फूल से जुड़ात रहुए। याद पड़ल एक जमाना रहुए दुआर प दुगो सुंनर बैल, एगो टायरगाड़ी रहत रहुए, बैल खेत जोते खातिर आ टायरगाड़ी अनाज भा जरूरत मौका प घर के लोग के भी एन्ने—ओन्ने चहुंपाए—ले आवे खातिर, साथे याद अईलन 'सिन्नन काका' हमनी के हरवाह अउर गाड़ीवान। सिन्नन काका के घर'दक्खिन टोला' में रहुए, **गांव से परिचित लोग के मालूम होई कि कवनों गांव में दक्खिन टोला दलित लोग के बस्ती होला।** इ बात मन पड़ला से फेर हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के एगो विद्यार्थी रोहित वेमूला के आत्महत्या के बारे में सोचे लगुवी। पिछला दस दिन से रोहित के मौत के बहाने पूरा देस के आपन जातिय गरब आ अभिमान में रचल बसल चरित्र अउर समाज के निचला पायदान के लोग के लेके आपन पूर्वाग्रह के बारे में सोचे चाहे आत्मनिरिक्षण करे के मौका जरूर मिलल होई। आखिर ई सोच पीढ़ी दर पीढ़ी से ही आगे बढ़ल बा अउर जवन गांव के सब तस्वीर हमनी के नीक—नीक लागेला अधिकतर लोग के जात—पांत आ उंच—नीच भेदभाव के पहिला पाठशाला आ शुरूआती सबक गांव से ही मिलेला। एतना पक्का सबक कि जातिगत भेदभाव कवनो प्रचलन, रिवाज , केकरो अमानवीय ना लागेगा, ना करे वाला के ना सहे वाला के उहो लोग के सोच में डाल दीहल जाला कि फलाना जात में जनम लेले बानी त फलाना काम हमरे के करें के परी। नाहीं त का कारण ह कि आजादी मिलला के आधा सदी से ज्यादा समय बीत गईला के बावजूद रोहित जईसन होशियार आ तेज लईका के लिखे पड़ गईल कि 'मेरा जन्म ही एक घातक दुर्घटना है' *मुझे हमेशा से खुद से समस्या थी। मैं अपने शरीर और आत्मा के बीच बढ़ती दूरी को महसूस करता हूं। हो सकता है दुनिया को समझने में मैं शुरू से ही गलत रहा होऊं, प्यार, पीड़ा, ज़िन्दगी, मौत को समझने में गलत रहा होऊं, कोई जल्दी भी तो नहीं थी. लेकिन मैं हमेशा जल्दी में रहा. जीवन शुरू करने को बेताब, इस सब के बीच कुछ लोगों के लिए जीवन ही अभिशाप है, मेरा जन्म एक बड़ी दुर्घटना है. मैं बचपन के अकेलेपन से कभी बाहर नहीं आ सका, अतीत का वह उपेक्षित बच्चा मेरे साथ रहा।"*

एक्के माटी, एक्के देस, एक्के पुरखा पुरनियां के सब विरासत एक्के बराबर रहला के बादो आखिर काहे हमनी के समाज के एगो बड़हन हिस्सा ई सब से काट दिहल गईल बा। रोटी,कपड़ा त सब कमा लेवेला बाकी आत्मसम्मान आ मनुष्य होखे के गौरव काहे छीन लिहल गईल बा। सबसे गंभीर चिंता के बात इ बा कि हमनी में से ज्यादा लोग के ई बात के अहसासे नईखे कि उ कईसे केकरो आत्मसम्मान प चोट कर देले आ कईसे खुद के बड़ा आ दूसरा के खाली जात के नाम लेके छोटा बना देवेला।


www.bhojpurisahityangan.com

# मनोरमा सिंह

सिवान , बिहार के रहे वाली मनोरमा जी , स्वतंत्र पत्रकार के रुप मे अपना लेखन शैली से बहुते प्रभावित कईले बानी । कई गो पत्र पत्रिका आ अखबार खाति इँहा के लगातार लिख रहल बानी । एह समय इँहा के बंगलोर मे बानी ।



खैर, बात करत रहीं सिन्नन काका के, त उहो तीसरी कसम के हीरामन जईसन गमछी के मुरेठा बान्ह के गाड़ी हांकत रहुअन, गरमी के छुट्टी में हमनी के जब गांवें आवत रहनी जा भा मां जब गांव से आपन नईहर जात रहली तब उ टायरगाड़ी में बांस के खपच्ची लगा के सुंदर साड़ी से आड़ बना के आ मोटका गद्दा बिछा के दुगो मसनद लगा के गाड़ी तईयार क के स्टेशन ले आवत रहले चाहे मां के उनुका घरे चहुंपा आवत रहुअन। दुनु बैल उनकरे चेला रहुवन सन, उनुकर मेहरारू हफ्ता में एक दिन आके 'गोहरा"पाथ' देत रहली आ ईया चाहे चाची, फुआ लोग में से केकरो देह बाथा होखला पर हाथों—गोड़ दबा देत रहली।

ई त सब जानेला कि बचपन बहुत भोला होला, बहुत सांच आ यर्थाथ , तब समझ में ना आवेला आ ना दुनियां के बनावल भेदभाव, ऐही से बचपन के उ याद में सब अच्छा बा, कुछ कारण पिताजी के समाजवादी सोच के भी रहल कि अपना दुआर पे हमनी के एक बराबर में बईठे, बात करें जईसन भेदभाव कब्बो ना देखनी। हां ईया चाय—शरबत, खाए—पीए के बतरन जरूर अलगा रखवईले रहली, हमनी के समझ आ गईला के बाद आपन मां के जरूर हमनी के अलग बरतन के सोच से मुक्त क देहनी जा। सही माने में बड़ भईला के बाद बेगुसराय में जात—पांत आ दलित,पिछड़ा समाज के लोग के भेदभाव, अत्याचार, उत्पीड़न के बहुत घटना पढ़नी—सुननी जा, कुछ देखबो कईनी, लेकिन सीवान जिला में आवेवाला हमार गांव में हमनी के याद में अमानवीय अत्याचार, उत्पीड़न जईसन कौनों घटना ना देखनी,आ ना विरोध के कोई आवाज सुननी, एगो पातर विभाजन रेखा खींचल रहुए, अपना मन से सब ओकरा के मान लेत रहुए आ गांव में लगभग सब ठीक जईसन माहौल बनल रहत रहुए। जईसे हरवाह रखला प पांच चाहे दस कट्ठा खेत उनका के दिया जात रहुए, जबले उ घर के खेती संभलिहे उ खेत के सब अनाज—उपज उनकर,कौनो मौका प भोज—भात होत रहुए त अपने से जाति आधारित पांत बन जात रहुए पहिले बाबाजी लोग खात रहुअन, फेर भाई—पट्टीदार ओकरा बाद सब लोग आ आखिर में दक्खिन टोला के लोग के पांत विछावल जात रहुए । जजमानी सिस्टम में जे सेवा करत रहुए सबके छोट जोत वाला एगो खेत दे दिहल जात रहुए, चाहे परिवार के पुरोहित होखस, आ चाहे हरवाह आ चाहे बाल—दाढ़ी बनावे वाला हजाम लोग के परिवार। लेकिन का ई काफी रहुए? उ बात का सोच के हिसाब कैसे होई जब राउर दुआर प बराबर में कोई नईखे बैठ सकत, एक बरतन में चाय—शरबत नईखे पी सकत। खाली जात से तेली होखला प भोरे-भोरे केहु के मुंह अपशगुनी कैसे हो जाला आ दोसर के सामने पड़ गईला पे गाली—बात मिले लागेला। अईसन ढ़ेर छोट छोट आदत के साथ हमनी के बड़ भईल बानी जा। अउर बात भी मन पड़ता जे इहां लिखल जरूरी बा, कि हमार पापा इंडियन आयल बरौनी में नौकरी करत रहले, उहां बाथरूम आ टॉयलेट साफ करे खातिर हफ्ता में दु दिन सफाई कर्मचारी आवत रहले, ज्यादातर लोग उनका के सामने के दरवाजा से घर में ना घुसे देत रहे, पीछे के दरवाजा से ही आवे के कहत रहुए। कुछ लोग त इ हद तक सोच वाला देखनी जे सफाई कर्मचारी के बख्शीश देला के बाद लौटल छुट्टा भी हाथ से ना छुअत रहे। पढ़—लिख के कुछ बन गईला के बादो 100 में 95 लोग कोटा के ताना मार के निकल जात रहुए । बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के हॉस्टल में रहे वाला लोग 'कामन रूम' के तंज कैसे भुल सकेला। अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति के जौन लईकी के कोटा के भीतर दाखिला होत रहें उ लोग में से 10—15 लईकी के एक्के संगे एगो बड़हन हॉल जेकरा कॉमन रूम कहल जात रहे ओकरे में बेड अलॉट होत रहे। बढ़िया से बढ़िया लईकी के आंख में कॉमन रूम के नाम पर हिकारत देखे के मिले, विश्वविद्यालय प्रशासन भी कम पूर्वाग्रही ना रहत रहे नाहीं त आरक्षित श्रेणी में गरीब आ सामाजिक तौर पिछड़ा समाज से आवेवाला विद्यार्थी के संगे कॉमन रूम जईसन भेदभाव काहे? सांच कहल जाउ त अब सब जल्दी बदले के चाही, जईसे कुम्हार के घर से ही माटी के बरतन काहे आयी? हजाम लोग ही नोह काहे काटी, जुलाहा ही काहे कपड़ा बीनी, विधि विधान, रीति रिवाज के नाव प होखे तब्बो जात आधारित बांटल सब काम खत्म होखे के चाही, ब्राह्मन काहे ना नोह काटी, राजपूत काहे ना चाक चलाई। जब तक इ स्तर पर सोच ना बदली तबले केतनो बड़ विश्वविद्यालय होखे आ केतनो पढ़ल लिखल लोग उनकर बोली आचरण से आपनी जातीय गरब आ श्रेठता के बोध भी ना जाई।

# नुरैन अंसारी के दू गो कविता

नुरैन अंसारी

## बसंत

सर्दी, ठिठुरन, कँपकँपी के बीतते तुरंत।

ओस, पाला, शीतलहरी, के होते ही अंत।

झुमत, गावत, हंसत हँसावत आ गइल बसंत।

मोजर धइलस आम पर, गमके लागल फुलवारी।

खेत सजल सरसों के, जईसे कौनो राजकुमारी।

झडे लागल पत्ता पुरनका, फूटे लागल नया कपोल।

साँझ सबेरे सुने के मिले, कोयल के मीठे बोल।

जब बहे बयरिया पुरवईया, फसल खेत लहराय।

देख के सफल मेहनत आपन,खेतिहर खूब अगराय।

जईसे साधना सफल भइला पर खुश होखस संत।

झुमत, गावत, हंसत हँसावत आ गइल बसंत।

चूमे माथा धरती के उगते किरिनिया भोर में।

चादर हरियाली के पसरल गँउआ के चारू ओर में।

रतिया भी लागे सुहावन, निमन लागे धुप भी।

हल्की ठंडी, हल्की गर्मी से बदलल मौसम के रूप भी।

खटिया में गुटीयाइल बुढऊ, खड़ा भईलेंन तन के।

ये रंग-गुलाल के मौसम में, चहके चिरई मन के।

पंख लगा के इच्छा सबकर, उड़े चलल अनंत।
झुमत, गावत, हंसत हँसावत आ गइल बसंत।

## नेह

जे सच में आपन होई ऊ कहा जाई रूठ के ।

एकदिन लौट आई फेर दुनिया से लूट के।

इ वादा बा हमार, तू अजमा के देख ल,

केहु ना चाही तहरा के हमरा नियन टूट के।

लोग खा लेला किरिया निभावे के जिनगी,

पर समय बीतते ही पता चल जाला झुठ के।

ई नेहिया ,सनेहिया के रिश्ता अटूट ह,

लोग  मर जाला एकरा बिना घूँट-घूँट के।

"नूरैन" घर के बात घर में सलट जाव त बढ़िया
ना त लोग फायदा उठावेला आपस में फुट के।

## नुरैन अंसारी

गोपालगंज , बिहार के रहे वाला नुरैन अंसारी जी , भोजपुरी आ हिन्दी मे लगातार गजल आ कविता के सिरजना कई रहल बानी। आखर प शुरु से ही नुरैन जी के लिखल भोजपुरी कविता आ गजल आ रहल बा। ईँहा के एह घरी दिल्ली मे बानी।


www.bhojpurisahityangan.com

# दू गो कविता

जे. पी. द्विवेदी

## डहकत मनई

गुरुवा तनि बताउ उनके
इहवाँ घर घर आग लगल हौ।
घुमला फिरला से फुर्सत नईखे
सचहुं उनकर भाग जगल हौ।

उरुवा जनि बनावा हमके
केकरे माथे मुकुट सजल हौ।
डूबल जाता सगरी जनमत
केकर कहवा का मनल हौ॥

भर दुपहरिया कुहुकत बीतल
कनवो मे बस रुआ भरल हौ।
आँख खोल के देखा एहरों
भरल बजारे मनई मरल हौ॥

बहुते आस लगल बा तोहसे
तोहरे से ही नेह लगल हौ।
तन मन धन से इहें सजावा
ढेरों रूपिया इहों धरल हौ॥

अपना घर के तुरत सुधारा
डहकत मनई तोहे मिलल हौ।
ओकरो खाति राह बनावा
भर माथा सुनसान दिखल हौ॥

दमगर बात बतावा इहवें
नैतिकता के धुआँ उठल हौ।
कूल्ही जुगत लगवा इहवें
ढेरिकों ले अरमान जगल हौ॥

## बुद्धि हेरा गइल

शब्दजाल मे
अझुराइल मनई
बूझ न पवलस
ई सब्जबाग
जवान देखावल गइल
समुझावल गइल।

गते गते
उनकर चाल बुझाये लागल
कभियो केहु भी
गरियावे लागल
काम धंधा बिला गइल
चेहरो मुरुझा गइल।

अब फिकिर
काहे ला
तब तू लोग
अन्हरा गइला
गमिराहे दरद
किस्मत मे ढुका गइल।

सीकम भर लूटी लोग
जेकर राज ओही क दोहाई होला

## जयशंकर प्रसाद द्विवेदी



मूलतः बनारस के जयशंकर प्रसाद जी ए घरी गाजियाबाद में रह रहल बानी। भोजपुरी आ हिन्दी के ढेर पत्रिका में इहाँ के कविता नियमित रूप से प्रकाशित होत रहेला।



www.bhojpurisahityangan.com

# दू गो कविता

## पिंजरा के पंछी

ज्योत्स्ना प्रसाद

स्त्री भइला के दर्द सदा सहे के पड़ेला
हृदय में आग बा पानी बन बहे के पड़ेला
हाथ बढ़ा के चाँद छुए के रहे तमन्ना
नाकामी से चाँद से नजर चुरावे के पड़ेला
ताल में ताल मिलाके चले के रहे चाह
जमाना से पीछे चलला के कसक सहे के पड़ेला
जुबान परिस्थिति वश चुप भले ही रहे
दर्द आँसू के परिधान में सजल छलक-छलक पड़ेला
ठान के भी कुछ हम कभी कर ना पाइले
कर्तव्य-बेड़ी में पिंजरा के पंच्छी बन छटपटाइले
अँसुवन के लड़ी से बन्दनवार सजावे में
हो गइल अब साँझ अपना के ओह रंग में ढाले में
गंधहीन फूल जइसन अब ई जिन्दगी बा
मैत्रेयी, गार्गी बने के सपना आज मुँह चिढ़ावेला
बीत गइल समय अपना के समझावे मे
अँसुवन के लड़ी पिरो-पिरो बन्दनवार सजावे में

## जिंदगी

लोकेंन्द्र मणि मिश्र

जीत बा और बा कब्बो हार जिन्दगी
फूल बा और बा कब्बो खार जिन्दगी
सुख और दुःख के कवनो समुन्दर नियन
पतवार बा कब्बो मंझधार जिंदगी
उड़ि रहल बा धुआँ द्वेष के हर जगह
ओह धूआँ में मिलल बा प्यार जिन्दगी
ई अन्हरिया भले दुःख के बाटे घना
बाकी ओह में छिपल भिनुसार जिन्दगी
बाग़ उजड़ल भले राज कांटन के बा
आई बगिया में फेर से बहार जिंदगी
कवनो बाधा के रोकले जवन ना रुके
यार अइसन सुन जलधार जिन्दगी
जवन नफ़रत के हरदम मेटावत चले
सुनि ल "दीपक" ग़ज़ल के बिचार जिंदगी

ज्योत्सना प्रसाद



लोकेन्द्र मणि मिश्र




www.bhojpurisahityangan.com

# जुल्मी बयार

अनूप श्रीवास्तव

घाव खुलल होखे त, जुल्मी बयार बुझाला,
साँच कहि देहला से, दुस्मन इयार बुझाला।
तरो-ताजा रहीं रउआ, गंग-धारा के जइसे,
रुकला पे ढेर दिन त, हितवो भार बुझाला।
घाव खुलल होखे त ...

जेकरी बातिन में, लोगवा के खार बुझाला,
ओकरी आँखि में, हमरा त पियार बुझाला।
जहिया होला बिहान, संगे ओकरी सुरतिया,
झुराइल मुखड़ा पे, तहिया निखार बुझाला।
घाव खुलल होखे त ...

जबहिनो आवेला ऊ, घोड़ा पे सवार बुझाला,
सज्जो दुनिया ओके आपन जवार बुझाला।
आ घुरियावेली सँ काहे, ई तितली सहरिया,
भेसवा, भूसवा से त अनुपवा, गँवार बुझाला।
घाव खुलल होखे त ...

माई भाखा से नेहि, जेके खेलवाड़ बुझाला,
जब देनी हम जवाब, त पलटवार बुझाला।
हम हईं भोजपुरिया, आ लिखेनी भोजपुरी,
बेसी तलवार से, कलमिया के धार बुझाला।
घाव खुलल होखे त ...

मिले छुट्टी त, भर दिनवा तेवहार बुझाला,
जिनगी हरिहराइल, आ सदाबहार बुझाला।
हम पड़ीं के बेमार, घरवा रहीं जौने दिन,
ओहि दिन त मगलवारो, अतवार बुझाला।
घाव खुलल होखे त ...

# सवालन में लोकतंत्र

गंगा शरण शर्मा

गणित में बा आंकड़न के महत्व
लोको-तंत्र में बा आंकड़न के सम्मान
बाकिर जब खेले लागेलन स आंकड़ा
धर्म जाति संप्रदाय के गोटी
मिटे लागेला सामूहिक -निरपेक्षता -एकता
पिटे लागेला सद्भावना-मरयादा -सहिष्णुता
तब दरके लागेला विश्वास जनता के बेवस्था में !

जब बन जाला -गुनाह
अवाज विरोध -प्रतिरोध के
भीड़तंत्र बन जाला -शकल
बाजीगर से लोकतंत्र के
अदनी दउरे लागेला चापलूसी भरल
तब कइसे मुकम्मल होई रिश्ता
पाठक आ रचनाकार के !

का समय बदल गइल बा
लोकतंत्र में चुनत चुनत
आपना खातिर 'भला आदमी'
हमनीं के चुने के पड़त बा आज
सुविधाजनक दबंग आदमी
चाहे वंशज गिरगिट के सही
भले ही हो ऊ दागी भा भ्रष्टाचारी !

## अनूप श्रीवास्तव

## गंगा शरण शर्मा

# परमात्मा के सनेस



अभिषेक यादव

ई मायानगर ह जाल प्रिये
ना करिह तू बवाल प्रिये।
लख चौरासी पार भईल।
अब कर ना मलाल प्रिये।
ई मायानगर ह जाल प्रिये
ना करिह तू बवाल प्रिये।

पहिला झोंका माया के
जब कोखि पलत रहबू तू,
बकैंया जे खिचे लगबू
माई-2 कहबू तू।
न माई क दुलार सह
न बाबूजी के प्यार कर,
कोहनाइल मैना जइसे
कूहुं-2 सवाल कर।
त बात समझ में आई कि
ई नगरी बडी अझुराइल बा,
एक-एक लोगवा आपस मे
लासा नियर लासाईल बा।

जे बचकानी में बच गईल
का मोह करी हलाल प्रिये ?
ई मायानगर ह जाल प्रिये
ना करिह तू बवाल प्रिये।

दूसरा आन्ही माया के
जे रहबू तू रवानी में,
खर-पात अस झर जईबू
ई उड़ाले जाई छान्ही के।
बस अतने मन में मथ तू
ई रंगवा बहुते फीका ह,
सभ एकतार में जुडल बा
का भारत का अमरीका ह।
तन लोभ धरि मन वासना
एहि बीचे गूथा जइबू तू,
ई बात हमार ना साथ रहि
एह माया बीच अझूरेबू तू।
बस सही राह प डेगे-2
करिह तू कमाल प्रिये,
ई मायानगर ह जाल प्रिये
ना करिह तू बवाल प्रिये।

तीसरा बवंडर माया के
जे हीत-मित बन जइबू तू,
दुनियादारी के पह्ड़ा में
बहुते चक्कर खइबु तू।
गोल-गोलाई समझ न आई
मोका हाथ से छूट जाइ,
अब पछतइले का मिली
जे माया नगरी लूट जाइ ?
बस कोठिला गहना-गुरिया में
नित-2 दिनवा बीती हो,
छल-बल-कल भाव में
छूटी धरम के नीति हो।
बस इहाँ के करम कमाई
करि तोहैं सवाल प्रिये,
ई मायानगर ह जाल प्रिये
ना करिह तू बवाल प्रिये।

चौथा बिजली माया के
जे तहरा ऊपर गिरी हो,
देंह से नेह भंग भइल
तब तू भइलु भीरी हो।
अब तीरथ धाम जानेलू
लोभ-पाप के सौदा में,
उठक-पटक जे भइल बा
माया-उमिर के ओहदा में।
जब तीन पांव के टेक प
ईयाद हमार सताई हो,
ईहंवा भीरी आवे में
माया तोहे डेराई हो।

मंगल कमना तहरा के
जा जिय तू सौ साल प्रिये,
ई मायानगर ह जाल प्रिये
ना करिह तू बवाल प्रिये।

अभिषेक यादव




www.bhojpurisahityangan.com

# जाड बीतल बसंत आइल

जयनित कुमार मेहता

जाड़ा बीतल,बसंत आइल।
सब प्राणी के मन हर्षाइल।
हरियर बा धरती के आँचल,
सुरुज देवता अइलन माकल,
सभे रजाई छोड़ के भागल,
चर-फर बा,देहिया अलसाइल।
जाड़ा बीतल...

दिन आपन मुँह खोले लागल,
पपिहा पिहु-पिहु बोले लागल,
फूल-पतइया डोले लागल,
अमवा-गछिया बा मोजराइल।
जाड़ा बीतल...

इन्हां-उंहा ले घूम गइल बा,
के कलियन के चूम गइल बा,
ओठवा पे मुस्कान धइल बा,
भौंरन के चोरी पकडाइल।
जाड़ा बीतल...

# भाग जगावऽ

चंद्रभूषण पाण्डेय

जागऽ देव अब तूहूँ जागऽ
राजनीति में भाग अजमावऽ
देखीं तोहरो गरह नक्षतर
तूहूँ कवनों उपाय सूझावऽ

अफ्सरा के तू मोह तेआग के
विकसवा के तू आस जगावऽ
धरम जात पऽ जनि दीहऽ तू
देसे पऽ तू धेआन टिकावऽ

जब्बे परे बिपत्त जे कवनों
तिसरा आंख के गत्ते दबावऽ
रहे जगत में ना केहू भुखा
राजगद्दीन के मान बढ़ावऽ

बेटिन रहस सुरक्षित सगरी
माई-बाप के मत बुढ़वावऽ
लाचारी के दम जनि भरिहऽ
देसे विदेस में नाम कमावऽ

जयनित कुमार मेहता

चंद्रभूषण पाण्डेय

# मन के झमड़ा पर सनेह के लत्तर

**अनिल प्रसाद**

ई छोटहन जिनगी के आपा-धापी में अईसन लमहर के बा।
ई जिनगी जियला के सुख-दुःख में अईसन गहिरा के बा॥

हमनी के अपना अपना मातृभाषा में बोलीं लिखी गाईं चाहे ना।
हमनी के ऊँच-नीच नफा-घाटा, झूठ-साँच देखे वाला के बा॥

हम पाईंट-शर्ट स्लिम फिट पहिनी चाहे बंडी आ धोती कुरता ।
हमरा के मेहीनी से देखे-परखे आ निहारे-सराहे वाला के बा॥

हम पित्जा नूडल्स बर्गर खाईं चाहे गोझा गुझिया बेरहीन।
हमरा पीछे-पीछे पर के लाड़-पयार से खिआएवाला के बा॥

समाज में ब आपन बोली बोले में लाज लागता केतना।
रोज मम्मी पापा से हिंगलिश में बोलवावे वाला के बा॥

हमनी आपन दाल-भात के खातानी छुपा के अन्तःपुर में।
ऊ देखीं दुआर पर डोमिनो के पार्सल ले के खड़ा ई के बा॥

गाँव में रात के किस्सा में राकस खैनी खातिर गुदरावता।
ओकरा बादो डिज्नी लैंड में हमनी के इंतज़ार में के बा ॥

अगर रउआ आपन मातृभाषा के आदर-सत्कार ना करेब।
त सोच लीं रउआ के मजधार में डूबे से बचावेवाला के बा॥

आज हमनी के मातृभाषा के मान-प्रतिष्ठा भंवर में फँसल बा ।
हमनी में इनका के संभार के सागर पार करावे वाला के बा॥

हम अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु अईसन हुशियार बालक-बीर बानी।
लेकिन हमरा के चक्रव्यूह से निकाले वाला समझदार के बा॥

अपना माटी के सोंध-सुगंध से भागत जाएब जेतने दूर ।
त सोच लीं रउआ के अपना जमीन पर राखे वाला के बा॥

अपना मातृभाषा के भाव के छाँव से निकल के बहरी चल जाएब।
त रउआ मन के झमड़ा पर सनेह के लत्तर फईलावेवाला के बा॥

# खेवनहार

**स्यंदन सुमन**

ऐ रहबर ! हमराही के आदमी त बुझ भेंड़ ना
अपना निहित सवारथ के दरिआव में अब त बान्ह बांध कहीं
सज्जन लो के मोल बताव गुंडा-मवाली से काहे बा कम ?
लोकसभा भा विधानसभा में जाए के कवना सज्जन में बा दम ?
बड़ीआरा आ धनपोसुअन के डमरूताल प भईया
लोकतंत्र करत बा ताता-थईया
पहिन के करिआ चश्मा लोगवा , बांट रहल बा स्विस के खाता
मुलुक के हर थाना में देखीं, रोज नवहा अपराधी पोसाता
कालाधन भा उजरधन के भुला गईल बा आता-पाता
मंहगाई के मार से देखीं कईसे लोगवा सगरो छपटाता
हे लोकतंत्र ! तू हीं बताव बा केकरा खातिर इ कानून
आ केकरा खातिर इ आजादी ..?
गली गली में बंगारू,मधुकोड़ा रउरा मिलिहें ए राजा
जहां देखीं जयचंद लउकिहें नेता लो के भेस में
राष्ट्र के गरिमा बौना हो गईल, सवारथ परबत के चोटी
उहे दुर्दिन दुअरा खड़ा बा,खाई के फिर घास के रोटी ...?
शहीद लोगन के सपना ...
सोचले रहन कि गरीबी-दुर्दिन मिट जाई
बाकिर चानी रहल धनपोसुअन के
लोगवा बिखरत-तडपत रहले एहिजा
चल पड़ल तिजारत हीरा-जवाहिर के
झेलम के निरमल पानी लोर बनके देस में फएलत बा
उजर बगबग लुगा माई भारती के काहे भईल मईल
साजल समाज में निहित सवारथ के बद अरमान ना पनकीत
जब पढ़ल-लिखल जनता होईत बद फरमान ना सरकित
जुल्मी के जुल्मी कहे में जहवां जीभ डरेला
पौरुष होला क्षार उहां दमघोंट जवानी के होला
हे खेवनहार ! हमराही के आदमी त बुझ डांगर ना |


www.bhojpurisahityangan.com

# कैरियर: सुझाव आ विकल्प ( वाणिज्य विशेष)

अनुराग रंजन

एह अंक में वाणिज्य (COMMERCE) के क्षेत्र में उपलब्ध विकल्प के बारे में बतावे के प्रयास

एह घरी लईकन के लगे आपन कैरियर बनावे के अनगिनत विकल्प बा,बाकि सही सुझाव आ मार्गदर्शन ना मिलला के कारण ना जाने केतना प्रतिभा जंग खात बा । एहिसे से उचित सलाह आ विकल्प रऊआ सब के सोझा पहुँचावे के ई हमार एगो प्रयास बा।

10+2 पास कईला के बाद सबसे पहिलका डेग आपन कैरियर ला विषय चुनल होला । आपन पंसद के विषय चुनल पढ़ाई में समय खपवलो से जादा जरुरी होला । रिसर्च कहेला की आपन मनपसंद क्षेत्र में जे आपन कैरियर बनवले बा उ जादे सफल भईल बा । एहसे आपन पसंद के सही दिशा में आगे बढ़ावे के खातिर, हम एह अंक में वाणिज्य (COMMERCE) के क्षेत्र में उपलब्ध विकल्प के बार में बतावे के प्रयास कर रहल बानी।

## 1. चार्टर्ड अकाउंटेंसी

10+2 में कॉमर्स लेवे वाला छात्रन के पहिलका पसंद चार्टर्ड अकाउंटेंसी होला । रऊआ ई जान के आश्चर्य हो सकेला की भारत के चार्टर्ड अकॉन्टेंट्स के मांग ऑस्ट्रेलिया,कनाडा आ ब्रिटेनो जईसन देश में बा।

अंतरास्ट्रीय अवसर के उपलब्धता के वजह से चार्टर्ड अकाउंटेंसी नवहा छात्रन खातिर कैरियर बनावे ला नीमन विकल्प बन चुकल बा । 'द इंस्टिट्यूट ऑफ़ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ़ इंडिया' भारत के एकमात्र पंजीकृत संस्था ह,जवना के भारत सरकार से मान्यता हासिल बा । अधिका जानकारी ला www.icai.org प लॉग इन कईल जा सकेला।

## 2. कंपनी सेक्रेटरीशिप

ए घरी कॉमर्स लेवे वाला छात्रन के बड़हन समूह के पसंद कंपनी सेक्रेटरी बनल बा । आज हर उ कंपनी जेकर 'पेड-अप पूंजी' 1 करोड़ से अधिका बा,ओकरा एगो कंपनी सेक्रेटरी रखल अनिवार्य बा । तीन गो चरण में होखेवाला एकर प्रवेश परीक्षा के विस्तृत जानकारी www.icsi.edu पर उपलब्ध बा।

## 3. कॉस्ट एंड वर्क अकाउंटेंट

फाईनांस के क्षेत्र में ई एगो नया विकल्प उभर रहल बा। चार्टर्ड अकाउंटेंसी आ कंपनी सेकेरट्रीशिप के जईसन ही तिन स्तर फाउंडेशन,इंटरमीडिएट आ फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण क के कॉस्ट अकाउंटेंट के योग्यता हासिल कईल जा सकता । कॉस्ट अकाउंटेंट उ पदाधिकारी होला जे अपना तकनीकी दक्षता से कंपनी के पूजी आ लागत के उचित हिसाब आ इस्तेमाल कईल होला । अधिका जानकारी ला अकाउंटेंसी ऑफ़ इंडिया

के वेबसाइट www.icmai.in पर लॉग इन कईल जा सकेला।

## 4. लॉ (कानून)

वाणिज्य से 10+2 कईला के बाद एगो बड़ समूह लॉ के क्षेत्र में जाला। 5 बरिस के लॉ इंटीग्रेटेड पाठ्यक्रम पूरा कई के कानून के क्षेत्र में छलांग लगावल जा सकेला। पहिले एह इंटीग्रेटेड पाठ्यक्रम में खालि बीएएलबी के पाठ्यक्रम ही रहत रहे। लेकिन समय के मांग देखत बीएएलबी के अलावे व्यापार प्रबंधन के चाहत रखेवाला छात्र ला बीबीऐएलएलबी,विज्ञान के छात्र ला बीएससीएलएलबी आ कॉमर्स के छात्र ला बीकॉमएलएलबी के कोर्स उपलब्ध बा।
एह पाठ्यक्रमन में दाखिला ला एगो विशेष परीक्षा देवे के होला जवना के कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट(क्लेट) कहल जाला। एह प्रवेश जांच के माध्यम से प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयन मे दाखिला के अवसर मिलेला।

## 5. बैंकिंग

अगर हम ई कही कि आवेवाला कुछ साल बैंकिंग सेक्टर के नाम होखेवाला बा त कउनो अतिशयोक्ति नईखे। आवेवाला कुछ साल में 1 लाख से अधिका छात्रन ला बैंकिंग सेक्टर के दरवाजा खुलेवाला बा। 10+2 के बाद प्रवेश ला क्लर्क लेवल के आवेदन करे के होला।
भलही कई बैंकन में अब कलर्को खातिर स्नातक ही आवश्यक योग्यता बा, तबो 10+2 के बाद कुछ विकल्प बाड़ी स। अगर प्रोबेशनरी ऑफिसर के रूप में प्रवेश करे के चाहत बानी त वाणिज्य से स्नातक क के,प्रवेश परीक्षा के रणनीति तईयार करी। बैकं के खाली पद के जानकारी अखबार आ रोजगार समाचार में आवत रहेला।

## 6. बिजनेस मैनेजमेंट

भारत के बढ़त अर्थव्यस्था जहवाँ एक ओरी कॉरपोरेट दुनिया ला नया मंच बा,ओहिजा बिजनेस मैनेजरन के भारी मांग छात्रन ला कैरियर के आधार बा। 10+2(कॉमर्स) के बाद 3 बरिस के डिग्री बिजनेस मैनेजमेंट के दुनिया में प्रवेश दिला सकत बा। एह पाठ्यक्रम के अलग-अलग विश्वविद्यालय में अलग-अलग नाम से जानल जाला।
कही एकरा के बीबीए(बैचलर इन बिजनेस एडमिंस्ट्रेशन) कहाला त कही बीबीएम(बैचलर इन बिजनेस मैनेजमेंट) कहाला। एह पाठ्यक्रम से स्नातक कईला के बाद कवनो अच्छा संस्थान से एमबीए कईला के बाद पीछे मुड़ के देखे के जरूरत ना पड़ेला।


# अनुराग रंजन

भोजपुरी खाति जागरुक नवहा, अपना कैरियर खाति पढाई के संगे संगे भोजपुरी भाषा मे लगातार लिख रहल बानी। छपरा, बिहार के रहे वाला अनुराग रंजन जी वर्तमान मे कोटा, राजस्थान मे बानी।

## 7. पत्रकारिता

एगो समय रहे जब एह विषय के अंग्रेजी भा हिंदी से जोड़ के पढ़ावल जाव। बाकि एह घरी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के चमक-धमक छात्रन के एगो बड़ समूह के आकर्षित कईले बा। वाणिज्य 10+2 के बाद 3 वर्षीय बैचलर्स इन जर्नलिज्म के पाठ्यक्रम मिडिया के क्षेत्र में प्रवेश दिला सकेला।
एह क्षेत्र में संघर्ष के वजह से स्थायित्व कम बा। एहिसे से एह जोखिम के ध्यान में राखि के एह क्षेत्र में जाए के योजना बनावे के चाही। सफलता खातिर भाषा पर पकड़ अत्यन्त जरूरी बा।
वाणिज्य से पढ़ाई कईला के बाद पत्रिकारिता के क्षेत्र में कैरियर बनावे वाला छात्र इंडियन इकॉनमी, सीएनबीसी जईसन चैनल में रोजगार ढूढ़ सकेला। एह चैनलन में वाणिज्य के जानकार के आर्थिक,बिजनेस पेज भा प्रोग्राम के जिम्मेदारी दिआला।

## 8. कंप्यूटर साइंस

बहुत पहिले खाली गणित के छात्र ही एह क्षेत्र में प्रवेश करत रहे। समय के साथ बढ़त मांग के देखि के कई गो विश्वविद्यालय अब वाणिज्य आ आर्ट्स के छात्रनो के एह क्षेत्र में प्रवेश देत बा। बीएससी(कंप्यूटर साइंस) आ बीएससी (आईटी) में प्रवेश ला ज्यादतर विश्वविद्यालय 10+2 में गणित मांगेला। बीसीए (बैचलर इन कंप्यूटर एडमिंस्ट्रेशन) में अईसन कवनों बाध्यता नईखे।
यदि राउर रूचि कंप्यूटर साइंस में बा त बिना कुछ सोचले बीसीए चुन सकीले। खालि एह बात के ध्यान रहे की पाठ्यक्रम रेगुलर होखे, डीएलपी ना। ना त संपूर्ण व्यवहारकि ना मिल पाई जवन एह क्षेत्र में सफलता के आधार बा।
कैरियर में सफलता के मंगलकामना के साथ विज्ञान आ आटर्स के विकल्प के जानकारी आवेवाला अंकन में।

# भारत-पाक रिश्ता मे फंसल पेंच

गौरव सिंह

> पाकिस्तान के कहनाम इ रहल बा कि कबाइली लड़ाका, राजा हरी सिंह के साइन होखे से पहिले कश्मीर के ढेर हिस्सा जीत लेले रहे एह से पूरा कश्मीर पाकिस्तान के ह।

भारत अउरी पाकिस्तान के रिश्ता ऐतिहासिक अउरी राजनितिक कारण से काफी जटिल रहल बा। कई बार दुनो मुल्क के प्रधानमंत्री कोशिश कईले बाड़े ताकि दुनो देश के रिश्ता के बनावल जा सके। लेकिन कुछ ताकत आजो ओह देश में मौजूद बा जवन कबो ना चाही कि भारत अउरी पाकिस्तान के रिश्ता में सुधार आओं। मूल रूप से भारत पाकिस्तान के रिश्ता में दरार पड़े के शुरुआत 1947 में भारत-पाकिस्तान विभाजन से पैदा भईल असंतोष के कारण भईल। एशिया के दुनो काफी महत्वपूर्ण देश रहल बा काहे कि समुद्री किनारा से अच्छा खासा संपर्क रहल बा। दुनो देशन के बीच सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई अउरी भौगोलिक समानता होखला के बादो दुनो देश के बीच छतीस के आकड़ा रहल बा। इ बात त खैर सभे के पता कि देश विभाजन भईला के बाद मूल रूप से दुगो देश बनल भारत जहाँ हिन्दू बहुसंख्यक रहले अउरी पाकिस्तान जहाँ मुस्लिम बहुसंख्यक में रहले। पाहिले पाकिस्तान दू हिस्सा में रहे। पहिला पूर्वी पाकिस्तान जवन आज बांग्लादेश कहाला अउरी दूसरा पश्चिमी पाकिस्तान जवन आज पाकिस्तान कहाला।

हालाँकि छोट-मोट ढेर झड़प भईल बा भारत आ पाकिस्तान से लेकिन तीन गो लड़ाई काफी भयावह रहल बा। पहिला, कश्मीर विवाद के लड़ाई, दूसरा, 1971 में बांग्लादेश के स्वतंत्रता दिवावे खातिर भारत-पाकिस्तान के लड़ाई अउरी तीसरा 1999 में भारत पाकिस्तान के कारगिल के लड़ाई। एगो बड़ा बढ़िया पैटर्न रहल बा हर लड़ाई के कुछ समय पाहिले ही अच्छा सम्बन्ध खातिर कवनो बढ़िया कदम उठावल गईल बा। आ हर लड़ाई के बाद एगो समझौता कईल गईल बा जवना के हमेशा अनदेखा कईल गईल बा। लेकिन जबे कवनो बात समझौता के तरफ से बढ़ल बा तबे एगो समूह द्वारा कवनो ना कवनो विधि वार्ता में खलल डाले के प्रयास कईले बा। उदहारण के रूप में 2001 में इंडिया के पार्लियामेंट प अटैक भईल, 2007 में समझौता एक्सप्रेस में बमबारी के घटना भईल, 2008 में भईल मुंबई अटैक के बात होखे अउरी 2016 में पठानकोट में हमला भईल। बहूत सारा लोग के आजो कंफ्यूजन रहेला कि आखिर एकर शुरुआत कहाँ से भईल। सबसे पाहिले हम ओकरा के क्लियर करे के कोशिश करब तब वर्तमान आ भविष्य के सम्बन्ध प आइम।

## गौरव सिंह



रोहतास, बिहार के रहे वाला गौरव जी इंजीन्यरिंग के छात्र हईं। भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। ए घरी गौरव जी VIT यूनिवर्सिटी वेल्लूर , तमिलनाडु से पढ़ाई कर रहल बानी।


### कश्मीर विवाद मय विवाद के जड़ रहल बा

कश्मीर विवाद के पीछे एगो कहानी रहल बा कि आखिर शुरू कहाँ से भईल पूरा विवाद । जब अंग्रेज भारत छोड़ के जात रहसन तब अंग्रेज ‘लैप्स ऑफ़ पैरामाउन्सी’ नाम से एगो अधिकार दिहले । एकर माने इ कि जवन अधिकार अंग्रेजन भीरी रहे उ पूरा वापस कर रहल बाड़े एह स्वतंत्रता से कि राज्य के राजा के पास पूरा अधिकार बा या त स्वतंत्र रहे या फिर बातचीत के सहारे भारत आ पाकिस्तान से जाके मिल जाव । ओह घरी कश्मीर के राजा रहले राजा हरी सिंह जेकर चाहत रहे कि उ स्वतंत्र गणराज्य बनावस । लेकिन भारत के अंतिम वायसराय लार्ड माउंटबेटन इहे सलाह देले कि केहू एक संगे मिल जा उहे अच्छा रही बजाए स्वतंत्र रहे से । अभी जम्मू कश्मीर के राजा सोचते रहन तले एकाएक अक्टूबर 1947 में पाकिस्तान कश्मीर प आक्रमण कर दिहलस । घबरा के राजा हरी सिंह भारत से भारतीय आर्मी के मांग कईले लेकिन लार्ड माउंटबेटन इ कह के मना कर दिहले कि भारत में शामिल होखे वाला लैटर ‘इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेसन’ प जम्मू कश्मीर के राजा हरी सिंह साइन नइखन कईले, एह से कानूनन भारत आपन आर्मी कश्मीर नइखे भेज सकत । जब ले भारत के अधिकारी उनकर साइन लेवे कश्मीर पहुचले आ भारतीय सेना कश्मीर पहुचल, तबले लगभग पाकिस्तानी सेना कश्मीर के पार करके श्रीनगर पहुचे गईल रहन सन । जईसे साइन भईल तसही इलेक्ट्रिक बल्ब लेखा इंडियन आर्मी के आक्रमण भईल पाकिस्तानी सेना प, जवना में कश्मीर के दु तिहाई हिस्सा भारतीय आर्मी एक्वायर कर चुकल रहे ।

अब बात उठत बा कि लड़ाई कहाँ बा एह में? लड़ाई इ बा कि पाकिस्तान के कहनाम इ रहल बा कि पाकिस्तानी आर्मी राजा हरी सिंह के साइन होखे से पाहिले पूरा कश्मीर जीत लेले रहे एह से पूरा कश्मीर पाकिस्तान के ह । ओहिजे दूसरा तरफ भारत के तरफ से इ तर्क देवल गईल रहे कि उ लोग एक तिहाईयो पार ना कईले रहन जा जब हरी सिंह साइन कईले रहन । भारतीय सेना के जाए-जाए में उ लोग पूरा कश्मीर पार करे चाहत रहनजा एह से नियमतः साइन भईला के बाद एक तिहाई के छोड़ के बाकी के दू तिहाई भारत के हिस्सा ह ना कि पाकिस्तान के । दूसरा तर्क इहो दियात आइल बा कि राजा हरी सिंह कब्बे एह बात के कह चुकल रहले कि कश्मीर या त स्वतंत्र गणराज्य बनी या फिर भारत के साथ मिली काहे कि पाकिस्तान के हमेशा खिलाफ रहले । एह से पाकिस्तान जबरन कश्मीर के अपना में मिलावे के कोशिश कईले बा । इ सैधांतिक तौर प गलत बा । एह से मूल्यतः पूरा कश्मीर भारत के अभिन्न हिस्सा ह । जबकी पाकिस्तान के तर्क रहे कि गुजरात के जूनागढ़ में त भारतो जबरजस्ती कईलही रहे त पाकिस्तान एहिजा काहे ना करो जबकी जूनागढ़ आ कश्मीर के केस दुनो एकदम सामानांतर रहल बा ।

एगो बड़ा सुक्षम्दर्शी तरीका के पाकिस्तान ओह घरी दाव खेलल रहे कि कश्मीर में जनमत संग्रह करवा लेवल जाव कि कश्मीर भारत के हिस्सा ह कि पाकिस्तान के । ओह घरी अगर जनमत संग्रह भईल रहित त शायद कश्मीर भारत के हाथ से निकल जाईत काहे कि ओह घरी सांप्रदायिक माहौल चरम प रहे । पाकिस्तान जनमत संग्रह वाला दाव एहु से खेलल रहे काहे कि कश्मीर में जनता मुस्लिम बहुल रहे आ राजा रहले हिन्दू । ओहिजे दूसरा तरफ कुछ ही दिन पाहिले इहे घटना घटल रहे गुजरात के जूनागढ़ में, जवन कि एकदम एकरे सामानांतर रहे, जहाँ के जनता रहे हिन्दू बहुल आ राजा रहले मुस्लिम । जूनागढ़ के नवाब महाबत खान साहब के इच्छा रहे कि पाकिस्तान में मिलस । लेकिन इ इच्छा भारत के अच्छा ना लागल रहे । ओह घरी भारत बल प्रयोग करके राजा के कराची भागे प मजबूर कईलस आ जूनागढ़ में जनमत संग्रह करवइलस जवना में भारत के जीत हाथ लागल रहे । तब से पाकिस्तान के दिमाग में कश्मीर अउरी जूनागढ़ के लेके हमेशा से असंतोष रहल बा । इहे ना बल्कि इंडस नदी के पानी के लेके विवादो पुराना रहल बा । पाकिस्तान आ बांग्लादेश के बंटवारो के मामला में भारत के लोग खलनायक के रूप में देखत आइल बा, ओकर खीस अलगे बा । ओकरा बाद छोट मोट होखे वाला घुसपैठ से दुनो देश के जनता एक-दूसरा प आरोप प्रत्यारोप करबे करेला ।

### भारत-पाक रिश्ता में सुधार बेहद जरूरी

भारत पाकिस्तान के रिश्ता में सुधार बेहद जरूरी बा । जरूरी एह से बा काहे कि भारत के पाकिस्तान से सामाजिक जुडाव काफी गहिराह रहल बा । बटवारा के बाद पंजाब प्रान्त दू हिस्सा में विभाजित हो गईल जवना के एक हिस्सा भारत आ दूसरा हिस्सा पाकिस्तान में चल गईल । एह से भाषाई जुडाव काफी गहिराह रहल बा । इहे ना आजो ख़राब सम्बन्ध होखला के बावजूद पाकिस्तान के बहूत सारा कलाकार के भारत के जनता काफी प्यार देले बिया चाहे बात बॉलीवुड सिंगर आतिफ असलम जईसन कलाकार के होखे या कॉमेडी नाइट्स विथ कपिल के शो में काम करे वाला कलाकार के बात होखे । भारत के बॉलीवुड मूवी पाकिस्तान में काफी पोपुलर रहेला । इहे ना व्यापार के नजरिया से भारत-पाकिस्तान के रिश्ता में सुधार काफी जरूरत बा काहे कि दुनो देश के पास सबसे ज्यादा पोटेंशियल बा जवना से आपन आर्थिक स्तिथि मजबूत कर सके । बस जरूरत बा दुनो देश के बीच एगो समन्वय स्थापित करेके । बाघा बॉर्डर से गुजरे वाला जी.टी. रोड सीधे भारत के अमृतसर से पाकिस्तान के लाहौर


www.bhojpurisahityangan.com

के जोडेला । दुनो देश अर्थव्यवस्था के नजरिया से काफी मजबूत बा लेकिन अफ़सोस इ बा कि दुनो देश ओकर भरपूर फायदा नइखे उठा पावत ना त पूरा विश्व के अर्थव्यवस्था के तय करे के दारोमदार अखंड भारत रखेला।

हमरा समझ से भारत, नेपाल, पाकिस्तान अउरी बांग्लादेश के देश के मिलके आपन एगो आर्थिक ग्रुप बनावे के चाही जवना में सारा देश आपन करेंसी त्याग के एगो कॉमन करेंसी अपनावे के चाही ठीक यूरोपियन यूनियन लेखा । ओह से काफी कुछ नाफा बा । पहिला इ कि करेंसी बदले के आपन कीमत होला उ ख़त्म हो जाई जवना से दुनो देश के बीच जरूरत वाला सामान बेहद कम रुपया में आदान प्रदान हो जाई । परिणामस्वरूप महंगाई प लगाम लाग जाई एह से लोगन के हाथ में कुछ सेविंग्स आवे लागी अउरी लोग ईमानदारी से टैक्स भरे लगिहे । उदहारण लेली लगले प्याज के दाम कईसे आचानक उपरे भागल रहे ओकरा प काबू पावल जा सकत रहे काहे कि प्याज वगैरह जईसन मूलभूत जरूरती सामान पाकिस्तान से आयात होला । दूसरा फायदा इ होई कि दुनिया में एगो संगठित बाजार होई जवना के वैल्यू मार्केट में बरियार रही । वैश्विक अर्थवयवस्थो प अखंड भारत के दबदबा होइत । तीसरा फायदा इ होईत कि मान ली कि कबो पाकिस्तान चाहे बांग्लादेश आर्थिक संकट से जूझ रहल बा त पूरा संगठन मिलके मदद करी । एह से होई का कि कमजोर आर्थिक स्तिथि के नब्ज पकडके बाहरी बाजार के दबाव, दहशतगर्त के पनपल आदि जईसन चुनौती से छुटकारा मिल जाई । चउथा फायदा इ रही कि एक्सचेंज रेट से होखे वाला हानि से एह सब देश के छुटकारा मिल जाईत।

अउरो बहूत सारा बेनिफिट बा । लेकिन दिक्कत इ बा कि दुनो देश हमेशा अंतराष्ट्रीय राजनीती के शिकार होखत आइल बा । उदारहण के रूप में पाकिस्तान में एगो बड़ा ही बरियार पोर्ट बा जवन कि आर्थिक नजरिया से काफी महत्वपूर्ण रहल बा । ओकर नाम ह ग्वादर पोर्ट जवना के इंफ्रास्ट्रक्चर प चाइना पईसा खर्च कईले बा अउरी अंधाधुन मुनाफा कमा रहल बा । पूरा मध्य एशियाई बाजार भारत आ पाकिस्तान के मदद से ही चलेला काहे कि पूरा एशिया में सबसे ज्यादा समुद्री जुडाव भारत आ पाकिस्तान के ही रहल बा । आजादी के समय वर्तमान के पाकिस्तान में बहूत ज्यादा मात्रा में सूती मील रही सन लेकिन आज आंतरिक राजनितिक विवाद के चलते आज ओकर बहूत ज्यादा महत्व नइखे रह गईल । तमाम कारन से ज्यादातर सूती मिल बंद हो गईल बाड़ी सन । आंतरिक सुरक्षा के चलते आज पाकिस्तान में बाहरी निवेशो ना के बराबर ही बा । यूनिफार्म करेंसी भईला से होई बा कि जतना दबल टैलेंट बा, रिसोर्सेज बा उ सब विश्वास में आवे लागी । अउरी जईसे जईसे आर्थिक ताकत बढ़ी देश के ओसही कट्टरपंथी संस्थान के ताकत कमजोर होखत चलल चल जाई । चुकी दुनो देश के आवाम शांति चाहत बा लेकिन परस्पर समन्यवय ना होखे के चलते दुनो देश के बीच दूरी बढ़ल चलल चल जाता।

## हाथ बढावल जरूरी बा

हमनी के दुनो देश के तरफ से एगो शांति प्रिय पडोसी बनावे के हीत में कई बार हाथ बढावल जा चुकल बा अउरी बढावे के जरूरत बा । मूल रूप से पाकिस्तान के हालत इ बा आज खुद दू समूह में बटल बा । पहिला समूह आतंकवादी संगठन, कट्टरपंती संस्था अउरी ओहिजा के सेना के बा आ दूसरा समूह ओहिजा के निर्वाचित सरकार आ आम जनता के बा । पहिला समूह के आपस में गठबंधन बा जवन कबो ना चाही कि भारत से रिश्ता सुधरे काहे कि एह से ओह लोग के ताकत कमजोर हो जाई । दूसरा ग्रुप जवन बा उ हर संभव कोशिश में बा कि भारत से रिश्ता सुधरो जवना से आतंकवाद के छुटकारा मिलो आ ओह लोग के लईका फईका के जिनगी बढ़िया होखो । लेकिन दिक्कत इ बा कि पहिला ग्रुप के मजबूत होखला के चलते दूसरा ग्रुप हमेशा हावी रहेला । अगर भारत से रिश्ता सुधरी त निवेश अउरी व्यापार बढ़ी । परिणामस्वरूप रोजगार बढ़ी आ गरीबी कम होई । जब रोजगार मिले लागी त पाकिस्तानी लड़िकन के मिलिटेंट बनावल आसान काम ना रह जाई । एह से जस जस दूसरा समूह मजबूत बानी ओसही पहिला समूह कमजोर होखत चलल चल जाई ।

चुकी हमनी के कई मर्तबा इ देखले बानी जा कि जवने आतंकवादी भारत में पकड़ाईल बाड़े सब गरीबी से मारल आ नौकरी के रूप में आतंकवादी संगठन से जुडल बाड़े । ओकरा बाद ब्रेन वाश करे के काम उ सब कट्टरपंथी संगठन कर देला । एह से दूसरा समूह मजबूत कईसे होई ओकर एगो सलाह(यूनिफार्म करेंसी) हम उपरे दे चुकल बानी । शांति खातिर कईएक गो प्रयास दुनो देश के आवाम, मीडिया आ सरकार के तरफ से करल जा चुकल बा । चाहे बात सानिया-शोएब के शादी वाला लिंक से होखे । चाहे मलाला अउरी कैलाश सत्यार्थी के बाच नोबेल शांति पुरस्कार के साझा करे के बात होखे । चाहे दुनो देश के मीडिया के तरफ से लांच कईल गईल शांति के प्लेटफ़ॉर्म 'अमन की आशा' के बात होखे जवना में भारत के मीडिया समूह 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया' अउरी पाकिस्तान के मीडिया 'जंग ग्रुप' एगो मुहीम छेडले बा । चाहे बात सरकार के तरफ से कईल गईल भूतपूर्व प्रयास जईसे 1997 में लांच कईल गईल समझौता एक्सप्रेस जवन लाहौर से भारत के अटारी के जोडेला, 1999 में लांच कईल गईल दिल्ली-लाहौर बस सर्विस आदि के होखे । एकरा के आगे बढ़ावे के प्रयास करे के चाही।

# आइल बसंत बहार / संत रैदास

एस.डी ओझा

रउआ सभनी फिल्म उपकार के ऊ गीत त ज़रूर सुनले होखबि -

पीली पीली सरसों फूली
पीली उड़े रे पतंग।
पीली पीली उड़ गयी चुनरिया ,
पीली पगडी के संग।

वसंत के अइला पर पूरा संसार पिअर रंग में रंगा जाला। आम पर मोजर चढ़ जाला। महुआ गोटा जाला। पेड़ पौधा पर नया कोंपल आ जाला ठंड कम हो जाला। कहल जाला - **आधा माघ, कम्बल कान्ह**। नारी समुदाय पिअर वस्त्र धारण करे ला। आकाश पतंग से पटि जाला पतंग के बात पर याद आईल कि पाकिस्तानो में पतंग वसंत पंचमी के उड़ावल जाला। ओईजा पतंग उड़ावे के कहानी ई ह कि लाहौर निवासी हिंदू वीर हकीकत के वसंत पंचमी के दिने बीवी फातिमा के अपमान कइला खाती जान से मार दिहल गइल । बाद में पता चलल कि ऊ निर्दोष रहले। ओकरा याद में प्रायश्चित स्वरूप हर साल विशेषकर लाहौर में पतंग उड़ावल जाला। जब ब्रह्माजी सृष्टि के रचना कइले त सब कुछ सुंदर रहे। सुभेख रहे। तबो कुछ कमी रहे। अजीब नीरवता रहे। ओ नीरवता के तोड़े खातिर ब्रह्माजी सरस्वती के रचना कइले। सरस्वती के अइला पर संसार के नीरवता ख़त्म भईल। दुनियाँ के वाणी मिलल। संगीत मिलल। चिरियन के चहचहाहट मिलल। हमनी के विद्या मिलल। तब से हर साल सरस्वती के अइला के खुशी में ऊनुकर जन्म दिन वसंत पंचमी के दिने मनावल जाला। स्कूल में सरस्वती पूजा होला । परम चेतना के प्रतीक सरस्वती के बारे में मत्स्य पुराण में कहल गइल बा -

*"प्राणों देवी सरस्वती , वाजेर्भिवजिनिवती ,*
*धीनामणित्रय ।"*

सरस्वती पूजा पूर्वी भारत , पश्चिमोत्तर बांग्लादेश , नेपाल , मॉरीशस , त्रिनिदाद , फिजी अउरी म्यांमार में मनावल जाला। पूर्वांचल में वसंत पंचमी के रिखपंचमी कहल जाला। ये दिन के पुआ पूड़ी पाकेला। आजुये के दिने फगुआ के ताल ठोकाला-

*इत ते निकली नवल राधिका ,*
*उत ते कुंवर कन्हाई।*
*खेलत फाग परस्पर हिली मिली ,*
*शोभा बरनी ना जाई।*
*घरे घरे बाजत बधाई।*
*बृज में हरि होरी मचाई।*

भीलनी शबरी के जूठ बइर आजु के दिने ही भगवान राम ख़ईले रहले। गुजरात के डांग जिला में उ जगहि बा ,जहाँ शबरी माता के मंदिर बा। जवना पत्थर पर बइठ के राम शबरी के जूठ बइर खईले रहले वो पत्थर के आजु ले वनवासी समाज पूजा कर रहल बा। अन्धा पृथ्वी राज चौहान आजुए (वसंत पंचमी के दिन )अफगानिस्तान में आपन दोस्त चंदरबरदाई के खाली दोहा के माध्यम से बतावला पर मुहम्मद गोरी के तीर से मार दिहले। ऊ दोहा रहे -

*चार बाँस चौबीस गज ,*
*अंगुल अष्ट प्रमाण।*
*ता ऊपर सुल्तान है ,*
*मत चूको हे चौहान।*

वसंत पंचमी के दिन सन 1816 में पंजाब के राम सिंह कूका एगो सम्प्रदाय के नींव डलले , जवना के कूका पंथ कहल जाला। राम सिंह कूका ब्रिटिश सरकार के समानांतर आपन सरकार कायम कइले । ई सरकार के आपन शासन , प्रशासन अउरी डाक सेवा रहे । अँग्रेजी शासन के पूर्ण बहिष्कार हो गइल। बाद में अँगरेज़ ये सम्प्रदाय के नेस्तनाबूद क दिहले स। कतना लोग लड़ाई में मरा गईल , कतना के फाँसी दियाईल - कहल ना जा सकेला। राम सिंह कूका के म्यांमार के जेल में डाल दिहल गइल। 14 साल के जेल काटला के बाद उनकर मौत हो गईल।

महाप्राण निराला के जन्म वसंत पंचमी के दिन 28 फरवरी सन 1899 के भईल रहे। ऊ अवगढ दानी रहले। जतना पईसा किताब के रायल्टी से मिले, ऊ सब ज़रूरत मंद के बांटी देसु। कुछ दिन तक प्रसिद्ध कवियित्री महादेवी वर्मा ऊनुकर पईसा अपना पास रख के ऊनुका पर नियंत्रण कइल चहली, पर ऊनुकर बार बार के तगादा से परेशान होई के आपन अंकुश हटा लिहली । औगढ दानी के दान के गाड़ी फेनु सरपट दउरे लागल।

आज वीर हकीकत , पृथ्वीराज चौहान , राम सिंह कूका और महाप्राण निराला पंच तत्व में विलीन हो गईल बा लो। पर वसंत पंचमी के त्योहार से ऊ लो आजो प्रत्यक्ष अऊरी अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ल बा आ भविष्यो में जुड़ल रही। आई सभे वसंत पंचमी मनाई सभे। ई महान विभूति लोग के सांच श्रद्धांजली होई जब रउवा सभ भेद भाव रहित , साम्प्रदायिक सौहार्द सहित ई त्योहार के मनाईबि सभे। तब ई कहाई -

सारे जहाँ से अच्छा , हिंदोस्तान हमारा।


www.bhojpurisahityangan.com

## एस॰ डी॰ ओझा

बलिया के रहे वाला , ई. एस. डी. ओझा जी , आईटीबीपी से डिप्टी कमांडेट के पोस्ट से रिटायर भईल बानी । हिन्दी आ भोजपुरी मे सोसल मिडिया प समानांतर रुप से लिख रहल बानी । देस विदेस के अदभुत जानकारी इतिहास वर्तमान से जुड़ल धार्मिक मान्यता से जुड़ल जानकारी पाठक के सोझा ले आवेनी । एह घरी ईँहा के चंडीगढ मे रहि रहल बानी ।

# " ऐसी भक्ति करे रैदासा ।"

रग्घु अउरी घुरबीगनी के सन्तान रहले रैदास जी।
रविवार के जनम भइल रहे ए से उनुकर नाम रविदास रखाइल। जनम स्थान मन्डूर , जवन काशी से थोरहीं दूरि बा । माघ पूर्णिमा के दिन रहे। सन् 1398 ईश्वी । उनुकर पढाई लिखाई ना भईल रहे । जूता बनावे के पुश्तैनी कारबार रहे। ओही में रम गईले। स्वभाव से बहुत उदार। हर जरुरतमंद के मुफ्त में जूता बना के देबे लगले। बाप महतारी के बड़ा नागवार गुजरल। अलगा क दिहल लो। शायद लईका रास्ता पर आ जाई। पर जेकर मन फकीरी में लाग गईल ऊ आपन रास्ता ना छोड़ी; बलुक दोसरा के रास्ता छड़वा दी। रविदास घर के पिछुति आपन झोपडी डालि के रहे लगले आ परोपकार में अउरु रमे लगले ।

कहल जाला कि रविदास, गुरु रामानन्द के शिष्य रहले । कबीरदास रामानन्द के ही शिष्य रहले । ए नाता से दुनों जाना गुरू भाई भईल लो । कबीर रविदास के मान्यता में ई कहले बाड़े -

" सन्तन में रविदास "।

उनुकरा से मीराबाई प्रभावित रहली ह । उ रविदास के चित्तौड़ बोलऽवली। ओइजा ऊ उनुकरा से दीक्षा लेई के उनुकर शिष्य बन गईली । चित्तौड़ के अलावा रविदास मथुरा मन्डल, उत्तराखन्ड, कुम्भ स्थान अउरी ऋषिकेष आदि जगहियो पर गईल रहलें ।

जूता बनावल रविदास के पेशा रहे । ऊ कबो कर्तब्य के ऊपर आपन भक्ति के ना थोपले। एक बार उनुकरा गंगा स्नान जाए के रहे ,लेकिन ओही दिने उनुका एगो गहकी के जूता बनाई के देबे के रहे । ऊ मन खींच लिहले । कहले गंगा स्नान त बादो में हो जाई , लेकिन एक बार वादाखिलाफी हो जाई त ऊ दाग हमेशा-हमेशा खातिर रहि जाई। यदि हम गंगा स्नान करे खातिर चलियो जातानी तबो हमार मन एईजे रही । हमेशा ई सालत रही कि जूता हम समय से ना दे पवनी। मन चंगा ना रही । ए से हमरा खातिर गंगा स्नान इहे बा कि हम समय से जूता बनाई के गहकी के दे दीं आ कठवति के पानी से एईजे नहा लीं । तब से ई कहाउति बनि गईल - " मन चंगा त कठौती में गंगा। "

एक बार एक आदमी सन्त रविदास के परीक्षा लेबे के चहलसि ।सन्त रविदास के ऊ एगो पत्थर देई के कहलसि कि इ पारस पत्थर ह। एकरा के अपना निहाई से छुअइब त तहार लोहे के निहाई सोना के हो जाई । तहार कुल्हि दुख दलिद्दर भागि जाई। चमड़ा के तहरा काम ना करे के परी । रविदास ओकरा के विनम्रता पूर्वक मना क दिहले। ऊ आदमी ना मनलसि। जबरदस्ती उनुकरा छान्हि में खोंसि के ऊ पत्थर चलि गईल। कुछ दिन बाद ऊ आदमी फेनु लवटल त ओकरा ऊ पत्थर ओहि जगहा पर जस के तस मिलल। रविदास ओकरा के छुअलो तक ना रहले । ऊ आदमी उनुकरा गोड़ पर गिर गईल ।माफी मंगलसि।

रविदास पढ़ल लिखल ना रहले , पर उनुकर व्यवहारिक ग्यान अदभुत रहे। व्यवहारिक ग्यान के बदौलत ऊ पद, दोहा, बानी अइसन लिखि दिहले कि ओकर संकलन गुरू ग्रंथ में करे के पड़ल । उनुकर पद , नारद भक्ति सूत्र आ रविदास के बानी तीन गो किताबि छपि के बाजार में आईल बाड़ी स। ऊ जवन पंथ चलवले बाड़े ओकरा के रैदासी पंथ कहल जाला । ए पंथ के माने वाला पंजाब, हरियाणा, उत्तर भारत, गुजरात में बा लो । ऊ जाति पांति के हिन्दू धर्म के सबसे बड़ दुश्मन मानत रहले । ऊ कहत रहले कि जब तक जाति पांति रही तब तक आदमी आदमी से ना जुड़ी।

**जाति जाति में जाति है,**
**जो केतन के पात।**
**रैदास मानुष ना जुड़ सके,**
**जब तक जाति न जात।**

सन्त रविदास आपन अजीविका खुदे कमाई के आपन एगो दर्शन विकसित कई ले ।कबो भिक्षा ना मंगले। ई खुद्दारी पे के ना कुर्बान हो जाई। दास भक्ति पर त आदमी बिछ बिछ जाई। -

**तुम स्वामी हम दासा ,**
**ऐसी भक्ति करे रैदासा।**



www.bhojpurisahityangan.com

# कवना समाज के हीरो हउअन रैदास

प्रमोद कुमार तिवारी

> रैदास के सही मूल्यांकन तब तक ना हो सके जब ले इनका के भोजपुरी इलाका के समाज के कट्टर ब्राह्मणवाद अउर सामंतवाद से जोड़ के ना देखल जाई।

पिछिला साल रैदास पऽ केंद्रित एगो अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी (दिल्ली के जेएनयू में) में शामिल होखे के मौका मिलल। उहां रैदास पऽ कुछ किताब आ ओह में उनुकर फोटो देखे के मिलल। जइसन पगड़ी में ऊ लउकले, एक बेर तऽ हम चिन्हिए ना पइनी कि ई रैदासे के फोटो हऽ। बोलेवाला लोगनो में कई लोग एकदम सिक्ख के भेस में लउकल । बाद में पता चलल कि पंजाब-हरियाणा के एगो इलाका में बकायदा 'रविदासिया धर्म' के मानेवाला लोग बा । पंजाबी भाषा में 'अमृतवाणी गुरु रविदास' नाम के किताब कवनो धर्मग्रंथ लेखा पूजल जाले। रविदास के अनुगामी लोग अपना पूजा घर के 'गुरु घर' आ 'भवन' कहेले। एह अनुगामी लोग के भरपूर संख्या कनाडा से ले के ग्रेट ब्रिटेन तक फइलल बा । यूनाइटेड किंगडम सरकार के सेन्सस एक्ट के द्वारा 31 मार्च 2010 के रविदासिया धर्म के मान्यता दिहल गइल। एह लोग के नारा हऽ **'जो बोले सो निर्भय, सतगुरु रविदास महाराज की जय'** एह धर्मके मानेवाला जादातर लोग तथाकथित छोट जात के मानल जाले। डेरा सच्चा खंड नाम से पंजाब आ हरियाणा में एह लोग के मजबूत संगठन बा। पुरान सिक्ख धर्म के लोग से एह लोग के तनातनी चलेला आ वियना में रविदासिया संप्रदाय के गुरु रामानंददास के 2009में हत्या कऽ दीहल गइल। एकरा बाद से ई लोग अपना के सिक्ख ना कहे।

बाकिर ई सब हम रउआ लोग के काहे बता रहल बानीं। हमनी सब केहू जानत बानीं जा कि संत कवि रैदास (1482-1527 ई.) के जन्म भोजपुरिया क्षेत्र काशी में भइल रहे। रैदास के बाबूजी के नांव 'रग्घु' आ माई के नांव 'घुरबिनिया' बतावल जाला। बाकिर जवना सेमिनार के हम ऊपर उल्लेख कइनी हऽ ओकरा में रैदास के बारे में सुनत घरी हमरा के रैदास के भोजपुरिया होखे के कवनो लक्षण ना लउकल। एकर कारण का बा ?

काहें रैदास अपना जनम के इलाका से बेसी पंजाब, हरियाणा आ गुजरात में लोकप्रिय बाड़े?

रविदासिया धर्म के लोग पंजाब से ले के कनाडा, इंग्लैंड तक में प्रचुर संख्या में मिलेला आ ऊ लोग हर साल मत्था टेके के बनारस के सीर गोवर्धनपुर आवेले बाकिर बनारस के लंका में रैदास के नांव प जवन विशालकाय गेट बनल बा ओकरा के लोग 'मायावती गेट' कहेले। काहें? काहें सिक्ख धर्म के गुरुग्रंथ साहिब में रैदास कबीर के वाणी मिल जाला बाकिर तुलसीदास के ना मिलेला?

असल में एह सब के सवाल के रिश्ता भोजपुरिया समाज के ओह दोहरा व्यवहार में मिली जवन बात में कुछ अउर आ व्यवहार में कुछ अउर लउकेला। ई समाज आज तक अपना नायक सब के ठीक से ना चिन्ह पवलस। एही से एह इलाका के कबीर आ रैदास के बात से दूसर समाज तऽ सीख ले लेवेला बाकिर भोजपुरिया लोग घर के मुरगी बराबरो भाव ना देबे ।

रैदास के माई के घुरबिनिया नांव खाली नांव ना हऽ ई नांव एगो व्यक्ति के आ जवना समाज में ऊ रह रहल बा ओह समाज के पूरा कहानी सुनावेवाला झरोखा हऽ। ई ठेठ भोजपुरिया नांव हऽ। एह नांव के परत तनी सा कुरेदला पऽ एकरा भीतर से जाति व्यवस्था अउर सामंतवाद के रेशा लउके लागेला। जूता बनावे के काम रैदास के पैतृक व्यवसाय रहे अब ई लगभग सिद्ध बा। ऊ आपन काम बहुत लगन आ परिश्रम से करत रहले आ समय से काम के पूरा करे पऽ बहुत ध्यान देत रहन, एहू बतिया के बार बार लोग बतावेले। रैदास पऽ बात करत घरी हमनी के उनका समय अउर समाज के याद राखे के चाही, ई उहे समाज हऽ जवना में कबीर, रैदास, बुलासाहब, भीखा साहब, दरियादास, धरनीदास आदि संत आवेले। दरअसल एह संत लोगन के मूल्यांकन के साथ बड़का दिक्कत तऽ ई बा कि पहिले एह लोग के खूब उपेक्षा कइल गइल, फेर कवनो ना कवनो रूप में ओह संप्रदाय भा जाति से इनका के जोड़े के कोशिश कइल गइल जवना के ई विरोधी रहले। एही कारण से ओह किंवदंती के खूब प्रचार कइल गइल कि एक बेर रैदास अपना शरीर में चमड़ा के नीचे जनेऊ (यज्ञोपवीत) के मौजूदगी प्रमाणित कइले रहले जवना से ओह घरी के ब्राह्मण लोग के बहुत लजाए के पड़ल रहे । भक्तमाल के टीकाकार प्रियादास के ई कथन कि 'संभवत: पूर्वजन्म में ब्राह्मण रह चुकला के कारण रैदास चमार के घर में जनमला के बादो अपना चमारिन माई के दूध पहिले ना पियलन अउर स्वामी रामानंद के शिष्य बनला के बाद जब इनके उपदेश मिल गइल तब ई स्तन-पान करे लगले।' (पृ. 173, उत्तरी भारत की संत परंपरा, परशुराम चतुर्वेदी, साहित्य भवन प्रा.लि., संस्करण 2010) जबकि एगो साधारण आदमीयो बता सकेला कि कवना उमिर तक बच्चा माई के दूध पियेला आ कब होश संभारेला।

कबीर जइसन रैदासो भोजपुरी इलाका में जन्मले आ ओही इलाका में शरीर छोड़ले बाकिर उनका रचना सब में आज भोजपुरी के शब्द तक


www.bhojpurisahityangan.com

मिलल दुर्लभ काहें बा? रैदास के कविता से भोजपुरी के तत्व काहें आ कइसे गायब भइल? ठेठ भोजपुरिया अक्खड़ता के स्थान प रैदास में एगो खास तरह के विनम्रता कहां से आ गइल? कुछ अपवाद के छोड़ के इनके पद में से भोजपुरिया ठसक गायब कैसे हो गइल? रैदास अनपढ़ रहले, ऊ विश्वविद्यालय में डिग्री ना लेले रहन, फेर उनका भाषा में देशजता आ गंवारूपन काहें ना मिलेला? संभव बा उनकर पद ज्यों के त्यों होखे बाकिर ई कहे में हमरा कवनो संकोच नइखे कि उनकर मारकता कम भइल बा। ठीक ओहइसहीं जइसे कबीर के बाहर के लोग उठा के उनका के लोकप्रिय त बनावल बाकिर 'भंवरवा के तोहरा संग जाई' जइसन अनेक पद के गायब क दीहल।

जवन रैदास जाति व्यवस्था के दंश के विस्तार से रेखांकित कइले रहन **(जात जात में जात है, ज्यों केलन में पात)** उनका के अत्यंत विनम्र बनाके अउर उनुकर पहचान 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी' मार्का शिष्ट पद सब तक सीमित कर दिहला के कुछ निहितार्थ बा।

रैदास के सही मूल्यांकन तब तक ना हो सके जब ले इनका के भोजपुरी इलाका के समाज के कट्टर ब्राह्मणवाद अउर सामंतवाद से जोड़ के ना देखल जाई। इनकर सही आकार तब तक पता ना चली जब ले कि इनका संदर्भ में लोकभाषा भोजपुरी के ताकत, मजदूरी आ श्रम से एह भाषा के संबंध पर बात ना होई।

ई अनायास नइखे कि नाथ पंथ से ले के संत काव्यधारा तक अउर हीरा डोम से ले के भिखारी ठाकुर तक लगभग हजार वर्षों के विरोध, विद्रोह अउर वर्णाश्रम व्यवस्था पर चोट करेवालन के एगो भरपूर श्रृंखला भोजपुरी इलाके में प्राप्त होखेला। असल में ई काशी के ब्राह्मणवादी, वर्चस्ववादी, संस्कृतवादी अभिजात्य संस्कृति के खिलाफ लोक के बहुजनवादी, सामूहिकतावादी श्रमशील लोगन के प्रतिसंस्कृति हऽ। जवना के प्रतिनिधि कबीर रैदास जइसन कवि लोग हऽ आ जिनकर मूल भाषा भोजपुरी हऽ। जवन संस्कृत के संस्कृति के विरोधी हऽ। पूरा भोजपुरीया समाज मूलत: श्रमिक समाज ह। सूरत, बंबई से ले के मारीशस सूरीनाम तक जहां-जहां भोजपुरी भाषी बाड़े रउआ एकर प्रमाण खोज सकत बानीं। रैदास के जीवन दर्शन, शोषित, पीड़ित बहुसंख्यक समाज में आत्मविश्वास भर देनेवाला 'श्रमशक्ति' के सम्मान के दर्शन हऽ।

**''श्रम कउ ईसर जानि कै, जड़ पूजहिं दिन रैन**
**रविदास तिन्हहि संसार में, सदा मिलहि सुख चैन।।**
**रविदास श्रम कर खाहहि, जौं लौं पार बसाय**
**नेक कमाई जऊ करई, कबहुं न निष्फल जाय। (409)**

ओह समय के सामाजिक परिस्थिति में तथाकथित निम्न जाति के लोगन के हाड़तोड़ मेहनत करे के अलावा अउर दूसर विकल्पे का रहे। भूख से निजात भगवान ना मेहनत दिलावेला। एही से भुखाइल आदमी भगवान के खूबसूरती से जादे वर्णन अन्न के करेला,

**'ऐसा चाहो राज मैं, जहां मिले सबन को अन्न**
**छोट बड़े सम बसैं, रविदास रहै प्रसन्न।'**

पेटपूजा सामान्य बात ना हऽ, बड़-बड़ भगवान लोग भूख लगला पऽ हिले लागेले। ध्यान राखीं कि जवना इलाके से रैदास आवेले उहां के पंडीज्जी लोग अच्छा खाना माने पूरी सब्जी के नांव प 10-15 कोस बड़ा आराम से चल जात रहे, निम्न जाति के लोगन में भोजन खातिर का होत होखी रउआ अनुमान लगा लीं।

रैदास के विशिष्टता एह बात में निहित बा कि अपना जाति के ले के उनुका भीतर कवनो हीनता बोध नइखे, बहुत दिन ना भइल जब ऊंच जाति में आपन नांव लिखावे खातिर आ अपना आप के बड़का जाति के साबित करे खातिर लोग एंड़ी- चोटी के जोर लगा देत रहे। उहें रैदास कहेले कि -

**'मेरी जात कमीनी पाति कमीनी ओछा जन्मु हमारा**
**तुम सरनागति राजा रामचन्द कहि रविदास चमारा**

(पृ. 151, गुरु रविदास : वाणी और महत्व,सं. मीरा गौतम, वाणी प्रकाशन, 2009)

या फिर,

**जात जात में जात है, ज्यों केलन में पात**
**रविदास ना मानुष जुड़ सके, जब लैं जात पात।**
**जात पात के फेर महि, उरझि गई सब लोग**
**मनुषता को खात है, रविदास जात का रोग ।**
**'रविदास' जन्म के कारनै, होत न कोउ नीच।**
**नर कूँ नीच करि डारि है, ओछे करम की कीच।**

ओह घरी दास प्रथा ना रहे, बाकिर भारत में बंधुआ मजदूरी कवनो दास प्रथा से कुछ कमो ना रहे, जब रैदास लिखेले कि

**पराधीन का दीन क्या, पराधीन बेदीन**
**रविदास दास पराधीन को, सभी समझें हीन ।**

तऽ पीढ़ियन के गुलामी के दंश समझल जा सकता बा। रैदास पऽ सबसे जरूरी काम ई बा कि उनका समाज के लोग यानी भोजपुरिया लोग अपना एह हीरो के चिन्हें आ उनुका कविता के पाठ संपादन क के मूल भोजपुरी के उपरियावे के कोशिश करे। आ उनुका के विनम्र, भावुक भक्त के बजाय भोजपुरिया समाजके बदलेवाला, सही रस्ता देखावेवाला, जाति व्यवस्था के दंश झेलेवाला आ ठसक के साथ ओकर विरोध करेवाला एगो सचेत रचनाकार के रूप में स्थापित करे। ई एगो बड़ सवाल बा कि एह भोजपुरिया नायक के पंजाब गुजरात आ कनाडा में बइठल लोग सम्मान दे रहल बा, घर के लोग कब सम्मान दिही?


## प्रमोद कुमार तिवारी

भुआ बिहार के रहे वाला प्रमोद कुमार जी , केंद्रीय विश्वविद्यालय गांधीनगर , गुजरात मे असिस्टेंट प्रोफेसर बानी । इँहा के भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य खातिर लगातार काम कर रहल बानी । पत्र पत्रिकन में प्रमोद जी के रचना आकर्षण के केंद्र होली स । भोजपुरी भाषा आ साहित्य के इँहा के अपना लेखनी से बरिआर चोख धार देले बानी । एह घरी गांधीनगर गुजरात मे बानी ।

# माघ

सर्वेश तिवारी श्रीमुख

> माघ उ हवा ह, जवना के लागते आदमी के उमिर कम होखे लागेला, बूढ़ आपन बार गाहे लागेला, आ अधेड़ आपना अधपक मोछ के खिजाब लगा के करिया करे लागेला।

हं त झूंठ ना पहिले के पुरखा पुरनिया माघ के बाघ कहे लो, ई सचहुँ बाघ बा। बाघे काहें, ई त लामर, हुराण्ड, मुहनोचवा करेजफोरवा सब बा ए देवता। अब बताईं, कहीं हेंगां अत्याचार होला? एक त अपने जवानी के दिन में सब रंग पियरे पियर बुझाला, ऊपर से माघ चढ़ते खेत के सरसो एतना फफना जा ता जे ओकरा महक से करेज में भुइंडोल होखे लागता। अब रमेसर जादो के नन्हका रामचरना हई आपातकाल काटो त के तरे काटो। माघ चढ़ते जब हवा में बारूद बहे लागल त ओकर मन भारत के अर्थब्यवस्था नियर डोले लागल। आपना करेज के दुःख कहो त केकरा से कहो, बाकिर कहला बिना रहलो ना जात रहे। अकेले बइठल बइठल जब करेज में पीरा बढ़ जाव त एके बेर भोंकर के कातिक के कुकुर नियर रोये लागो। अंत में जब ना खेपाइल त जा के भउजाई के गोड़ छान लिहलस- भउजी हो, अब ई करेज के पीरा खेपले नइखे खेपात। मन करता जे रहर के खुरकुची से करेज खोभ के परान दे दीं। तहरा गोड़ पर गिर के किरिया खा तानी जे जिनगी भर तहार लुगा झूला धोयेब, जल्दी से हमार बियाह निखतरपुर वाली फुलकुमरिया से करा द, ना त इनार पोखरा ना मिली त सुखले डूब के जान दे देब..

अब भउजाई के परेम, आ ऊपर से जिनगी भर लुगा झूला धोए के वादा, भौजइया उठल त बात पहुचवलस भाई का लगे, आ भाई पहुचवलें बाबूजी का लगे।

फेर का कहीं ए हाकिम, जेंगान पानी में भेंवल पटुआ थूरल जाला ओहिंगान बांस के पाकल कोइन के सटका से ध के बेंवत देहले बाबूजी.. लेकिन उ परेम कवन जे थुरइला से कम हो जाव, गतर-गतर टूट गइला पर जब भउजाई देंही पर हरदी चुना छापत रहली त कोंहर के कहलस रामचरना- भउजी हो, बुझाता जे बियाहे के हरदी चढ़ता.. भले केहू मार के हमरा देह के रेह में लसार देव, फुलकुमरिया के नेह कम ना होइ हो भउजी.. अगर ई माघ फागुन खेप लेहनी, त अगिला माघ आवत आवत लाल झंडा आला पार्टी के नेता बन जाएब, तब देखतानि जे के हमार आ मिस फूलकुमारी के बियाह रोकता।

ताजा हाल ई बा जे रामचनरा दिन भर भोंकर के रोअता आ करेज टोअता।

ई त हाल बा ए माघ फागुन के! आ होने कविता कहानी आला बुढ़वा कुल कहेलन जे माघ फागुन राजा ह, दुका ह... मन करेला जे एकनी के बान्ह के भंटवास के सटका से सटा सट सेंक दीं, मारीं सई सटका आ गिनी एक सटका। आरे ई माघ फागुन का ह ई केहू नवकन से पूछो.... बुझाता जे केहू गरम तावा पर बइठा के मारकंडे पुरान के कथा सुनावत होखे। बस्तुतः माघ उ ना ह जवन आज ले किताब में लिखल आ पढ़ावल जाला।

माघ उ हवा ह, जवना के लागते आदमी के उमिर कम होखे लागेला, बूढ़ आपन बार गाहे लागेला, आ अधेड़ आपना अधपक मोछ के खिजाब लगा के करिया करे लागेला।

माघ उ पानी ह जवना के पियला से लिबर के साथे साथे करेज तर हो जाला, आ आदमी एके लय में फगुआ चइता बारहमासा सब गावे लागेला।

माघ उ आग ह जवना में सगरी लड़िका, जवान, बूढ़, सयान सब केहू जर के झंउसा जाये खातिर बेचैन रहेला।

माघ उ माटी ह जवना में बिना खादर पानी के परेम के फसल लहलहा जाला। ए माटी में जो केहू के झंउसाइल करेजा फेक दिहल जाव, त एके दिन में करेजा हरिहर हो जाला।

माघ उ डकैत ह जवन केहू के करेज में बिना सेंध मरले ना छोडेला।

माघ उ संत ह जवन लोग के त बैराग्य के उपदेश देला बाकिर अपने लुका के रोज डेढ़ लबनी भोर के बसंती ताड़ी बिना छनले पी जाला।

माघ उ नेता ह जवन चुनाव के दिन में त सिद्धबक बनल रहेला बाकिर मोका मिलते जिया जिया के मुआवे लागेला।

माघ उ पकिटमार ह जवन बगली में से नोट त घीच लेला बाकिर कमाए के आदत धरा देला।

त बाबू हो..... माघ से बांचे के कवनो उपाय बा ना, ई उ संक्रमण ह जवना के दवाई खइला पर पीर अउरी बढ़ जाला। मोतीझील वाला बाबा के परबचन सुनला से एकर असर तनी कम हो जाला, बाकिर असर ओराला ना।

त दुनु बेरा बाबा के परबचन सुनल जाव ...


www.bhojpurisahityangan.com

# दू गो कविता

नंदिनी सिंह

## माईभाखा

एह समय जब अदमी खाली-
इश्तिहार
आ भाखा फेरु स्टिकर
में तेजी से बदलत जा-तिया
पाकि के फाटल फल के रस
लेखा नस में खून के संघे
माईभाखा के सब्द जिनगी के हरकारा
आ कबो गहिराह खुरचाईल
तना से रीसत ई लासा
जोड़ के राखेला तीनों अक्ष
अउर तबे डीएनए
समय के पुरान ईनार,
जेकर उमिर भइल धरती के उमिर के निकचा,
से उबिछे लागेला लहर।

## भाखा में फेंड़ रोपल

ईंहवा नापाता बाड़ी सन फुर्रगुदी
हमरा सहर से
आ ई आपन दुख
सह सकीं
भाखा में बचावतानी
चिरई के गीत
आ रोपतानी फेंड़ भाखा में
केहु त खोजी अ उगाई फेरु, ई बिस्वास
आ ऊ मिठास के जिकिर जबान पे रखी
भाखा में एह तरी धरती के बचावे से
धरती के बचावल जा सकेला।
एतना कम समय में
समय के अब तक के उमीर से गुजरल
आसान ना ह
एगो खांटी मोहवरा हंसवले बा
एगो कहाऊत बचवले बा
गड़हा में गिरे से
उधियाईब ना, भाखा में खुद के बचाईब।


## नंदिनी सिंह



बलिया, उत्तर-प्रदेश के रहे वाला नंदिनी सिंह जी अँग्रेजी के असिस्टेंट प्रोफेसर हईं। भोजपुरी के अलावा इहाँ के हिन्दी आ अँग्रेजी में भी लिखेनी। ए घड़ी इहाँ के उदयपुर, राजस्थान में रहेनी।

# हज़ूर एक दिन पिंडा पराई !!

राजीव मिश्र

अइल जहान में ढोल थरिया पिटाइल
शान - बान  से सोहर गीत हो गवइल
जी बियहवा के बेरिया बाजल शहनाई
जनीं बिसराईं एक दिन पिंडा पराई ...

राम - कृष्ण जे जग  के रखवैया
भीष्मपितामह  सुतले सेजे सैया
सभ के इ दिनवा रहे हो लिखाई
जरुरे एक दिन पिंडा पराई...

घरी नक्षत्र कुल्हि गइल बा लिखाई
जिनगी के लेखा जोखा बन्हाई
करनी धरनी राउर ओहिजे सोहई
उँहा लिखल लेखा केहु ना मिटकाई
सास्वत सत्य ह एक दिन पिंडा पराई...

हरियर बांस ओहि घरी कटाई
फराठी फराई रसरी बन्हाई
हरियर डोलिया सजावल जाई
ओहि दिनवा पिंडा पराई ...

***काम क्रोध लोभ मोह अहंकार पे जे बिजय पा जाई***
***राजीव जग जीवन के फेरा से बांचे के इहे बा दवाई !!***

राजीव मिश्र

# अश्लीलता के लड़ाई के एक बरिस : अम्बा

प्रस्तुति : अश्विनी रूद्र

आरा भोजपुर जिला में हिंदी फिल्म के अभिनेता सत्यकाम आनंद एक साल से भोजपुरी में फइलल अशिलिता के विरोध में आपन टीम 'अम्बा' के साथ कमर कसले बाड़े।

एक जनवरी 2015 के सुबह हमनी के अम्बा के सुरुवात कइनि जा। कई गो गायक, भोजपुरिया कलाकार लोग के आरा के पास बखोरापुर काली मंदिर पे किरिया खियावल गइल की आज से हमनी के अश्लील गाना ना गाइम। काली मंदिर के सर्वे-सर्वा के आशीर्वाद आजो बनल बा। अम्बा के कोर टीम ओह दिन से भोजपुरी सेवा में लागल बिया।

एक साल में अम्बा कोर टीम के के अनुभव कहता की :

- समय के हिसाब से अम्बा के लक्ष्य बदलत रहल आ अभी पहिला साल के जवन तय लक्ष्य रहे ओकर 60 प्रतिशत ही पूरा हो पाइल।
- एकर एगो कारण रहे कुछ फंडिंग के कमी आ एकरा चलते बार-बार गति मेहरा जात रहे। लेकिन पैसा के कमी के कारण सदस्य लोग के आत्मविस्वास में कवनो कमी ना आइल।
- लक्ष्य में एगो अउरी बाधा आइल कुछ सदस्य लोग के बेरोजगारी आ प्रतियोगिता परीक्षा के तइयारी। एह परीक्षा नौकरी के मानसिक तनाव के बावजूद अम्बा के सदस्य अशीलता विरोध के प्रचार आ नुक्कड़ नाटक में योगदान देत रहलन। इ बात अम्बा के सदस्य लोग के भोजपुरी के असाधारण समर्पण देखावत बा।

पहिला वर्षगाँठ पे कुछ अम्बा के नया प्रायोजन इ बा की :

- अम्बा पूरा भोजपुर जिला में वर्ग 8 से वर्ग 12 के बीच के छात्र लोग के बीच भोजपुरी भाषा आ साहित्य पे क्विज कांटेस्ट करवाइ।
- एह से युवा वर्ग में भोजपुरी के प्रति चेतना जागी आ जानकारी भी बढ़ी। अम्बा के मानना बा की जब तब भोजपुरी विधालय तक ना पहुची तब तक भोजपुरी के भला सम्भव नइखे।
- बाद में इ योजना बाकी के भोजपुरी जिला में भी लागू कइल जाई। एह से ई पता चली की भोजपुरी के शिक्षित युवा वर्ग भोजपुरी के केतना करीब से जानता। भोजपुरी जब तक पढे, लिखे आ व्यवहार में ना आई तक तक एकर विकास सम्भव नइखे। इ बात आम्बा के मानना बा। इ बात हमनी के आखर के पोस्ट से सहमत भइनी आ सोचनी के भोजपुरी स्कूल तक सरकार के योगदान से ना त क्विज के जरिये जरूर पहुचावल जा सके ला।
- हमनी के एह में केतना सफल होखल जाई ई त माई अम्बा ही जानत बाड़ी।

अम्बा के टीम भोजपुरी के पटकथा आ फिल्म ' बवाल बाइसकोप' पे भी

नुक्कड़ नाटक करत अम्बा के सदस्य

काम करत बिया। एह में भी कुछ फण्ड आ प्रोडूसर के दिक्कत आवता। लोग के लागता की इ कुछ कला फिल्म जइसन हो जाई , साफ़ -सुथरा आ फिल्म पइसा ना कमा पाई। लेकिन हम लोग के बतावत– बतावत थाक गइनी की गंभीर बिषय पे भी पइसा-वसूल, फुल्टू-एंटरटेनमेंट फिल्म बन सके ला आ बवाल-बाइसकोप के पठकथा ओहिसन बा। अम्बा हर तरह के भोजपुरी एक्सपेरिमेंटल फिल्म बनाई जइसन आज कल के बंगाली, मराठी फिल्म बनत बाड़ी सन । पर लोग के समझे में दिक्कत आवता आ हमरा ( सत्यकाम आनदं ) समझावे में। कोइ जल्दी नइखे। अम्बा के शुरुवात हमनी के रसोई चलावे खाती ना कइनी। अम्बा के उदेश्य पइसा से ऊपर , साफ़ आ पवित्र बा। लगातार लागल बा आदमी आ सहयोग के उम्मीद रखम रउवा लोग से।

जाते-जाते भोजपुरी के ही उदेश्य में लागल आखर पत्रिका के एक साल पूरा होइला पे बधाई। जय भोजपुरी।

*राउर आपन*
*सत्यकाम आनंद*
*( फिल्म अभिनेता )*

# थैलेसीमिया: जानकारी आ जागरूकता

चित्रकथा:
मनोज कुमार

थैलेसीमिया दू प्रकार के होला। एक ह माइनर आ दूसर ह मेजर। एके डाक्टरी परीक्षण से जानल जा सकेला। माइनर वला के कवनो विशेष खतरा ना रहेला। हाँ, मेजर थेलेसीमिया खतरनाक होला। ई स्थिति में वाहक रोगी में खून के बनल बंद हो जाला।

!

हर तीन-चार हफ्ता बाद उनकर खून के बदलल जरूरी हो जाला। उनका के हर बार नया खून चढ़ावल जाला। एकरा बाद भी उनकर जान के खतरा हमेशा बनल रहेला।

ओह! डाक्टर बाबू? का ई बीमारी से बचे के कवनो उपाय नइखे?

उपाय बा और उ हवे जानकारी आ जागरूकता के जरूरत...।

अगर हम चाहऽ तानी कि हमार आगे के पीढ़ी में ई बीमारी ना हो त कुछ सावधानी रखे के जरूरत बा। अस्पताल में शुरूये में जाँच से पता लगावल जा सकेला कि बच्चा में ई रोग के वाहक जीन बा कि ना? अगर होखे त अइसन बच्चा के जनम ना देवे में ही समझदारी बा।

?

एकरा साथ ही एह बात में भी सावधानी रखल जा सकेला कि ई जीन के वाहक जोड़ा में शादी-बियाह ना करावल जाव, त एकरो दूरगामी परिणाम होई। सबसे बड़ा लाभ त इहे होई कि उनकर बच्चा के ई रोग होखे के संभावना ना रही...।

शारदा बहिन, प्रायः समाज में रूढ़िवादी लोग अइसन बच्चा के महतारी-बाप के गलत नजर से देखे लन सन। ई ठीक नइखे। उनका के सम्मान आ उनकर लइका के स्नेह के जरूरत बा...!

डाक्टर बाबू! रउआ त हमार आँख खोल देहनी। अब हम अपना लइका के उनकरा साथे खेले से कबो मना ना करेब!

(समाप्त)

# राउर बात

एक साल पुरा गइल आ अइसन लागता जइसे काल्ह के बात ह, ई एक साल में आखर ई पत्रिका एगो लम्बा रास्ता तय कईले बा, आखर ई पत्रिका खाली एगो पत्रिका ना ह बल्कि एगो प्रयास, एगो कोशिश ह भोजपुरी भाषा आ संस्कृति के बचावे आ बढावे के, एगो लड़ाई ह भोजपुरी में फईलल अश्लीलता आउर भोजपूरी के बेच के आपन पेट पाले वालन के खिलाफ। पिछला एक साल में आखर से ज़ुडल हर व्यक्ति, हर पाठक के एह प्रयास, एह लड़ाई में अमूल्य योगदान रहल बा आ आगे भी रही ई पिछला एक साल में बनल हमार विश्वास कहता। समुचा टीम के आखर ई पत्रिका के 12वां अंक पे बहुत बहुत बधाई आउर शुभकामना।

● राजीव कुमार सिंह , सिताबदिअर , बलिया

ई पत्रिका के रूप में आखर के सफ़र के एक साल पूरा भइल। गर्व के अनुभूति होखत बा कि एह सफ़र में,एह डोंगा भा नाव के सवारी के मौका हमरो मिलल बा। आप कभी भी व्यस्ततम समय में से समय निकाल के आपन माईभाषा में पढ़े अउर लिखे के कोशिश करीं,रउआ अंतर्मन से अलगा किसिम के अनुभूति होखी।शुरू में परेशानी हो सकत बा,बाकि बाद में चस्का लाग जाई।आपन माई भाषा से नेह-छोह बढाईब,ओकरा से जीवंत रिश्ता बनाइब तो ओकर असर सीधे राउर व्यक्तित्व,परिवार,समाज पर पड़ी।भाषा ही तो एगो अईसन चीज बिया,जे धर्म,संप्रदाय,जातीयता से अलग समूह अउर समुदायबोध के जिन्दा राखेले।आपन माई भाषा से जुड़ के ही रउआ खुद के समूह अउर समुदाय के हिस्सा बना सकत बानी,नाही तो जिनगी निहायत व्यक्तिवाद अउर एकाकीपन के शिकार हो जाई।आखर पत्रिका के एक साल पूरा भइला पर ओह सब लोग के बधाई,जे आपन माईभाषा से मोहब्बत करेला। उ चाहे कोई भाषा के होखे लोग।रउआ गाँठ बान्ह ली,कोई भी होखो,जे आपन माई भाषा से लगाव राखेला, प्रेम करेला,उ हर माईभाषा के प्रति सम्मान के भाव राखेला।

● निराला, रांची

समाज ही बचावेला भाषा के,भाषा के सरोकार अउरी धार के, आखर अतीत के वर्तमान से अउरी वर्तमान के भविष्य से जोड़ रहल बा। आखर पत्रिका एक साल में ही जवन काम कइले बा,उ जुगन के जादू जइसन बा। पत्रिका के एक साल के सफ़र पूरा भइला पर सबलोग के बधाई,शुभकामना। जय आखर,जय भोजपुरी। कोशिश बा कि आखर पत्रिका के एह पहिलका वर्षगांठ पर हम जल्दी से जल्दी एगो गीत आखर परिवार के ओर से समर्पित करीं।

● चंदन तिवारी, गायिका, बोकारो

आखर ई- पत्रिका के एक साल पूरण भईल । आखर परिवार ,आखर टीम , आखर के सम्पादकीय मंडल आ आखर पत्रिका के पाठक लो के अउलाह बधाई।

● डॉ. प्रमोद पूरी , नई दिल्ली

हमनी सब अपना माटी अपना विरासत के 'आखर' के जरिए शब्द रूप में अइसही ढालत रहल जाव, ई शुभकामना के साथ पूरा आखर टीम अउर आखर से जुड़ल सब लोगन के अनघा बधाई

● निरंजन मिश्र, दिल्ली

आखर के डेग अइसही बढ़त रहो ! शुभकामना आ बधाई !

● ब्रिज भूषण चौबे, मुंबई

एना पारी तनी देरी से आयल हे " आखर" बाकिर इहो अंक अपने आप में बेजोड़ ह। फुलवारी देख के एगो पुरान गीत याद आवत ह- 'फुलवा फुलेला कचनार'....स्वागत करीं जा आखर क।

● सुमन सिंह, बनारस

आप लोगन के ई पत्रिका हमरा बहुत नीक लागल। आपन प्रयास आप लोग जारी रखी , जल्दी ही आपन भोजपुरी आठवा अनुसुची मे शामिल होइ।

● पुनीत चौबे


www.bhojpurisahityangan.com

# निहोरा

जय भोजपुरी ! माई, मातृभाषा आ मातृभूमि के कवनो विकल्प नइखे। इनका आँचर के नीचे जवन सुख के अनुभुति होखेला ऊहे स्वर्ग के सुख हऽ। रोजी-रोटी के मजबूरी आउर भविष्य के सुरक्षा खाति तनि बेसी कमाये के आशा में ना चाहते ढेर लोग अपना माई आ माटी से दूर बा। एह कमी के ना भरल जा सकेला बाकि मातृभाषा से दूरी के पाटे के काम आखर कर रहल बा।

आखर के नेंव भी एही उद्देश्य के पूरा करे खाति राखल गइल बा। आखर रउआ सभे से बा आ रउआ सभे खातिर बा। इ राउर आपन मंच हऽ जहाँ रउआ आपन माई, माटी आ मातृभाषा भोजपुरी से जुड़ल अनुभव, कथा, कहानी, व्यंग्य, संस्मरण, रिपोतार्ज, गीत-गज़ल, कविता, चित्रकारी भेज सकत बानी।

आवे वाला महीना मार्च , भोजपुरियन खाति उमंग हर्षोल्लास रंगारंग महीना ह। गीत गवनई के शुरुवात जवन पंचमी से होला उ अपना जबरजस्त उछाह प रहेला एह महीना मे । किसान खेतिहर के श्रम जहाँ खेत मे लउकेला ओजुगे किसान खेतिहर के घरे नया फसल जजाद के इंतेजार मे मार्च महिना जवन भोजपुरिया बधार मे फागुन भी होला ,श्रृंगार से भरल महीना के रुप मे देखल जाला। बिहार के बड़हन हिस्सा के भाषा ह भोजपुरी आ एहि मार्च महीना मे बिहार अपना गठन अपना निर्माण के याद करेला।

त आखर ई पत्रिका के अगिला अंक यानि मार्च -2016 के अंक खातिर लेख के विषय रही फगुआ , भोजपुरी मे श्रम गीत , बिहार दिवस आ भोजपुरी मे श्रृंगार गीत। रउवा सभ से निहोरा बा कि एह विषयन के केंद्र मे राखि के आखर ई पत्रिका के मार्च अंक खाति आपन रचना भेजी।

अगर रउवा एह विषयन से हटि के कुछ नया कुछ अलग कुछ सामयिक रचना भा लेख भेजत बानी त ओकर स्वागत बा। आखर ई पत्रिका मे साहित्यिक विधा मे हर लेख के स्वागत बा।

### रचना भेजे के कुछ जरुरी नियम -

- आपन मौलिक रचना युनिकोड फॉन्ट/कृतिदेव फॉन्ट में टाइप करके भेजीं।
- रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार अपने से प्रूफ रीडिंग जरुर कर लीं। कौमा, हलंत, पूर्णविराम पे विशेष ध्यान दीं। रचना में डॉट के जगहा सिर्फ पूर्णविराम राखीं।
- ध्यान रहे राउर रचना में कवनो असंसदीय आ अश्लील भाषा भा उदाहरण ना होखे।
- राउर रचना के स्वीकृति के सूचना मेल भा मैसेज से दियाई।
- रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज के फोटो आ आपन परिचय (नाम, पता, कार्य आ आपन प्रकाशित किताबन के बारे में यदि होखे त) जरुर भेजीं।
- रचना भेजे के पता बा- aakharbhojpuri@gmail.com
- पत्रिका खातिर राउर हाथ के खींचल फोटोग्राफ, राउर बनावल रेखाचित्र, कार्टून जे विभिन्न विषय के अनुरूप होखे, उहो भेजीं।
- छोट-छोट लईकन के कलाकारी के भी प्रोत्साहित करे खातिर स्थान दियाई। ओहनी के लिखल रचना भा चित्र भेजीं।

# માતૃભાષા દિવસ